रहमते आ़लम

सल्ल० अ़लैहि व-सल्लम

मदरसों और स्कूलों के तालिबे इल्मों के लिए
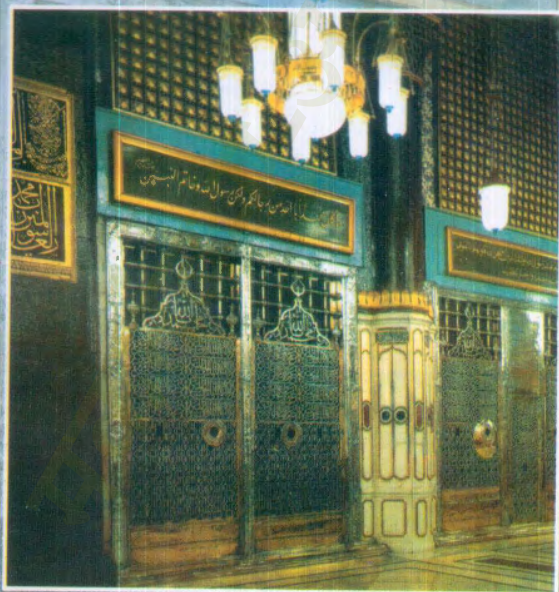
लेखक

सैयद सुलैमान नदवी

रहमते ग्रालम

सल्ल० ग्रलैहि व - सल्लम

मदरसों और स्कूलों के तालिब इलमों के लिए

लेखक

सैयद सुलैमान नदवी

فرید بک ڈپو (پرائیویٹ) لمٹیڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

2158, M.P. Street, Pataudi House, Darya Ganj, New Delhi-2
Phone : 23289786, 23289159 Fax : 23279998 Res. : 23262486
e_mail : farid@ndf.vsnl.net.in • farid_export@hotmail.com
Website: www.faridexport.com • www.faridbook.com

नाम पुस्तक : रहमते आलम

लेखक : सय्यद सुलैमान नदवी

प्रबंधक : अलहाज मुहम्मद नासिर ख़ान

प्रकाशक : फ़रीद बुक डिपो (प्रा॰) लि॰
नई दिल्ली-2

मुद्रक : फ़रीद इनटरप्राईज़ीज़, दिल्ली

सरेवर्क : महबूब अहमद, कफ़ील अहमद

पृष्ठ : 156

:

फ़रीद बुक डिपो (प्रा॰) लि॰

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

2158, M.P. Street, Pataudi House, Darya Ganj, New Delhi-2
Phone : 23289786, 23289159 Fax : 23279998 Res. : 23262486
e_mail : farid@ndf.vsnl.net.in • farid_export@hotmail.com
Website: www.faridexport.com • www.faridbook.com

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अपनी बात

इस्लाम का गुलदस्ता जिस धागे से बंधा है, वह रहमते आलम सल्ल० का मुबारक वुजूद है । इसलिए ज़रुरत है कि उस पाक वुजूद की सीरत का एक एक हर्फ़ हर मुसलमान के कान तक पहुंच जाए, ताकि यह रिश्ता मज़बूत से और ज़्यादा मज़बूत होता चला जाए । इसकी मुनासिब सूरत यह है कि हर छोटे बड़े तक हुजूर सल्ल० के नाम, काम और पैग़ाम को पहुंचाया जाए । एक ज़माने से दोस्तों के बार बार यह कहने पर कि छोटे लड़कों और मामूली पढ़े लोगों के लिये सीरत की एक एसी छोटी सी किताब लिखूं, जिसका पढ़ना और समझना सब के लिये आसान हो और फिर उसमें कोई अहम बात छूटने भी न पाए ।

दोस्तों की इसी फ़रमाईश को पूरा करने के लिये यह मुख्तसर (छोटी) सी सीरत लिखने की सआदत हासिल हुई है । इसमें इबादत की सादगी, अदा करने के ढंग की सहलूत और वाक्यात के सुलझाओ का खास ख्याल रखा गया है ताकि छोटी उम्र के बच्चे और मामूली समझ के लोग भी इस से फ़ायदा उठा सकें और स्कूलों और मदरसों के कोर्सो में भी रखी जा सके ।

इस किताब का मुसव्विदा कुछ इस्लामी रियासतों के ज़िम्मेदार तालीमी अफ़सरों की निगाहों से गुज़र चुका है और सूबा बिहार के इस्लामी मक्तबों के लिये भी इस्का चुनाव हुआ है । उम्मीद है कि यह दूसरे इस्लामी मदर्सो और मक्तबों में रिवाज पाए और मज़हबी तालीम की एक बड़ी कमी पूरी हो ।

सैयद सुलैमान नदवी

हयात पाक

रहमते आलम सल्ल० एक नज़र में

आप की पैदाइश नो रबीउल अव्वल दोशंबा (पीर) मुताबिक़ बीस अप्रैल ५७१ ई० सुबह सादिक़ के बाद मक्का मुअज़्ज़मा में हुई ।

41 साल की उम्र में 17 रमज़ानुलमुबारक मुताबिक़ 1 फ़रवरी 610ई० को हुज़ूर सल्ल० को नबूवत मिली । आप सल्ल० ने 13 साल मक्का मुअज़्ज़मा में तब्लीग़ फ़रमायी और तमाम दुनिया को तौहीद और नेकी का पैग़ाम दिया।

1 हिजरी को मस्जिद नबवी की बुनियाद रखी । पांच नमाज़ें मेअराज में फ़र्ज़ हो चूकी थीं । 2 हिजरी में अज़ान का हुक्म हुआ, रोज़े फ़र्ज़ हुए, ग़ज़्वा बद्र पेश आया, जिसमें हक़ को फ़ैसला-कुन कामियाबी हासिल हुई ।

3 हिजरी में ज़कात फ़र्ज़ हुई, शराब हराम हुई, ग़ज़्वा उहद हुआ ।

5 हिजरी में परदे का हुक्म हुआ, हज फ़र्ज़ हुआ । खंदक़ की लड़ाई हुई।

6 हिजरी में कुरैश के साथ हुदैबिया का मुआहिदा हुआ ।

7 हिजरी में सलातीन आलम को ख़ुतूत के ज़रिये दावते इस्लामी दी गई।

8 हिजरी में मक्का फ़तह हुआ ग़ज़्वा हुनैन और तायफ़ पेश आये।

9 हिजरी में तबूक़ के लिये रवाना हुए और रूमी शहनशहियत को मुक़ाबले की हिम्मत न हुई ।

10 हिजरी में एक लाख चौबीस हज़ार फ़रज़न्दाने इस्लाम के साथ हज्जतुलविदाअ अदा फ़रमाया ।

63 साल 4 दिन की उम्र में 12 रबीउल अव्वल पीर को चाश्त के वक़्त हयातुन्नबी रफ़ीक़े आला से जा मिले ।

13 रबीउल अव्वल को रात के वक़्त हज़रत आईशा सद्दीक़ा के हुजरे में तदफ़ीन अमल मे आई । इस तरह आप ने आलम में विलादत से लेकर विसाल तक बाईस हज़ार तीन सौ तीस दिन 6 घंटे क़याम फ़रमाया ।

(माख़ूज़)

विषय सूची

अरब का मुल्क

हमारे मुल्क के पच्छिम की तरफ समुद्र बहता है। उस समुद्र के एक किनारे पर हिन्दुस्तान और दूसरे किनारे पर अरब का मुल्क है। उस अरब के मुल्क का बड़ा हिस्सा रेत और पहाड़ है, बीच का हिस्सा तो बिलकुल बंजर और ग़ैर आबाद है, सिर्फ उसके किनारों पर कुछ हरियाली और खुशहाली है और उन्हीं में उस मुल्क के बसने वाले रहते हैं।

उसके एक तरफ़ बहरे-हिन्द (हिन्द महा सागर) दूसरी तरफ़ ईरान की खाड़ी तीसरी तरफ़ लाल समुद्र है और चौथी तरफ़ ज़मीन के हिस्से में यह इराक़ और शाम के मुल्कों से मिला हुआ है इसी लिये अरब के मुल्क को टापूनुमा या टापू भी कहते हैं, जो हिस्सा लाल समुद्र के किनारे-किनारे हज्जाज़ से अदन की खाड़ी तक फैला है और यह अरब का हरा-भरा आबाद सूबा है। इसी के पास अदन की खाड़ी के किनारे पर हिज़े मौत और उमान के दरिया के अरबी किनारे पर उमान और ईरान की खाड़ी के किनारे पर बहरैन और उससे मिला हुआ यमामा है और बीच मुल्क से ईराक़ तक का हिस्सा नज्द कहलाता है।

हिजाज़- ऊपर पढ़ चुके हो कि लाल समुद्र के किनारे किनारे शाम की सरहद से यमन तक जो हिस्सा है, उसको हिजाज़ कहते हैं। हिजाज़ में तीन शहर मशहूर थे और अब भी है -एक मक्का, दूसरा तायफ़ और तीसरा मदीना। हमारे पैग़म्बर सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम (उन पर दरूद व सलाम हो) को इन्हीं तीन शहरों से ताल्लुक़ था।

खुदा के क़ासिद

तुम रोज देखते हो कि एक आदमी मतलब की कोई बात जिसको संदेश कहते हैं, दूर किसी दूसरे के पास भेजता है, तो वह अपनी बात अपने किसी एतबार वाले आदमी से कह देता है और वह आदमी उस बात को सुन कर दूसरे आदमी को सुना आता है। उस भरोसे वाले आदमी को हम क़ासिद और पैग़ाम (संदेश) ले जाने वाला फ़ारसी में पैग़म्बर और अरबी में रसूल कहते हैं।

ऐसे ही अल्लाह तआला ने जब चाहा कि अपने बंदों को अपने मतलब की बात और पैग़ाम से ख़बर दे, तो उसने अपनी मेहरबानी से अपने किसी चहेते और प्यारे बंदे को इस काम के लिये चुना और उसका नाम खुदा का क़ासिद, खुदा का पैग़ाम पंहुचाने वाला और पैग़म्बर रखा। अरब के लोग उसी को नबी और रसूल कहते हैं। खुदा के इन क़ासिदों और रसूलों का काम यह है कि वह खुदा की बातों को बंदों तक पहुंचाते हैं और उन को बताते हैं कि तुम्हारा खुदा तुम से क्या चाहता है और किन बातों के करने का तुम को हुक्म देता है किन बातों को वह नापसंद करता है। जो बंदे उस का कहना मानते हैं उन से अल्लाह खुश और जो नहीं मानते उन से वह नाराज़ होता है।

पैग़म्बरों का सिलसिला

तुम्हारे खुदा ने जब यह दुनिया बनाई और आदमियों को बसाना चाहा तो सब से पहले जिस आदमी को अपनी कुदरत से पैदा किया उसका नाम आदम अलै० रखा। उन्हीं आदम अलै० से सारे आदमी पैदा होते चले आ रहे हैं, इन्हीं हज़रत आदम अलै० के वक़्त से अल्लाह तआला ने अपने बंदों को अच्छी बातें सिखाने और बुरी बातों से रोकने के लिये अपने क़ासिदों और

पैग़म्बरों का सिलसिला भी दुनिया में जारी किया जो हमारे पैग़म्बर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक जारी रहा और अब आप सल्ल० के बाद कोई दूसरा पैगम्बर न आया है और न कयामत तक आएगा ।

इब्राहीम अलै० की नस्ल

आदम की औलाद में मशहूर पैग़म्बर हज़रत नूह अलै० हुए, नूह की औलाद में हज़रत इब्राहीम अलै० सब से बड़े पैग़म्बर हुए । यह ईराक़ के मुल्क में पैदा हुए और बढ़े और जवान हुए । उस वक़्त ईराक़ के लोग चांद, सूरज और सितारों की पूजा करते थे । हज़रत इब्राहीम अलै० ने जब यह देखा तो दिल में सोचा कि क्या यह सितारे ख़ुदा हो सकते हैं ? लेकिन जेसे ही रात खत्म हो कर सुबह का तड़का होने लगा, सितारे झिलमिलाने लगे और जब सूरज निकला तो वह सब बिल्कुल निगाहों से ओझल हो गए । यह देख कर वह पुकार उठे कि ऐसी मिटने वाली हस्तियों से तो में दिल नहीं लगाता, फिर रात आई और चांद दिखाई दिया तो सोचा कि शायद इसकी रोशनी में ख़ुदाई का जलवा (ख़ुदाई शान) हो, लेकिन जब वह भी डूब गया तो बोल उठे कि मेरे परवरदिगार ने अगर मुझे रास्ता न दिखाया तो मुझे सच्चाई का रास्ता कभी न मिल सकेगा । अब ख्याल आया कि सूरज की रोशनी तो सब से बढ़ कर है, क्या यह हमारा देवता नहीं हो सकता ? लेकिन शाम के अंधेरे ने इस बड़ी रोशनी को भी जब बुझा दिया तब उन के दिल से आवाज़ आई के मेरे परवरदिगार का नूर तो वह नूर है जिसका अंधेरा ज़मीन नहीं । मैं उसी ख़ुदा को मानता हूं जिस ने आसमान और ज़मीन और उसके जल्वों को पैदा किया, फिर लोगों से पुकार कर कहा कि मैं तुम्हारे शिर्क वाले दीन को छोड़ता हूं और हर तरफ से मुड़ कर उस एक सच्चे ख़ुदा के आगे सर झुकाता हूं । ख़ुदा ने उन को पैग़म्बर बनाया और आसमान व ज़मीन की सच्चाईयों के दफ़्तर उनके सामने खोल दिए और दुनिया में तौहीद का पैग़ाम सुनाने के लिए

उनको लगाया । उन्होंने ईराक़ के बादशाह नमरूद और उसके दरबारियों को यह पैग़ाम सुनाया । उनके कानों में यह बिल्कुल नई बात थी । उन्होंने हज़रत इब्राहीम अलै० को डराया, धमकाया मगर वह अपनी बात पर जमे रहे और एक दिन मौक़ा पाकर उनके बुतख़ाने में जा कर उन की पत्थर की मूर्तियों को तोड़ फोड़ कर रख दिया । यह देख कर बादशाह ने उन के लिये सजा चुनी कि वह आग के अलाव में डाल कर जला दिए जाएं, यह इम्तहान का मौक़ा था मगर उन के क़दम जमने का वही हाल रहा, इधर उनका आग में पड़ना था कि आग बुझ कर उनकी जान बचाने का सामान बन गई । अब हजरत इब्राहीम अलै० ने यहां से शाम और मिस्र के मुल्कों की तरफ रूख किया और वहां के बादशाहों को तौहीद (खुदा को एक मानना और कहना) की नसीहत की जब कहीं यह आवाज़ न सुनी गई तो अरब के सूबा हज्जाज़ में चले गए ।

अल्लाह ने हजरत इब्राहीम अलै० को दो बेटे दिए, बड़े का नाम इस्माईल अलै० और छोटे का नाम इस्हाक़ अलै० रखा । इस्हाक़ अलै० को शाम के मुल्क में और इस्माईल अलै० को हिजाज़ में आबाद किया ।

काबा – हिजाज़ का मुल्क उन दिनों आबाद न था मगर शाम और यमन के मुल्क बहुत आबाद थे, शाम से यमन को और यमन से शाम को जो व्यापारी और सौदागर आते जाते, वह हिजाज़ के ही रास्ते से आते जाते थे, इसलिए हिजाज़ में आने जाने वाले सौदागरों का तांता लगा रहता था । हज़रत इब्राहीम अलै० को अल्लाह का हुक्म हुआ कि उसी हिजाज़ की ज़मीन में एक जगह पर हमारी इबादत करने और नमाज़ पढ़ने के लिए एक घर बनाओ । हज़रत इस्माईल अलै० और हज़रत इब्राहीम अलै० ने मिल कर खुदा के उस घर को बना कर खड़ा किया, उस घर का नाम काबा (अल्लाह का घर) रखा गया ।

इस्माईल अलै० का घराना

खुदा ने अपने इस घर को बुज़ुर्गी दी और हज़रत इब्राहीम अलै० को हुक्म दिया कि इस घर की खिदमत के लिए अपने लड़के इस्माईल अलै० को इस जगह पर आबाद करो। हज़रत इब्राहीम अलै० ने ऐसा ही किया, हज़रत इस्माईल अलै० की औलाद भी यहीं रहने लगी और इस जगह का नाम मक्का रखा गया।

हज़रत इस्माईल अलै० का घराना इस शहर में जिसका नाम मक्का पड़ा था, आबाद रहा और खुदा का पैग़ाम बंदों को सुनाता और काबा में खुदा ही की इबादत करता रहा। सैंकड़ो वर्ष बीतने के बाद ये लोग दूसरी कोमो की देखा-देखी अकेले खुदा को छोड़ कर मिंटटी और पत्थर की अजीब अजीब शक्लें बनाने लगे और कहने लगे कि यही हमारे खुदा हैं। मिटटी और पत्थर की जिन अजीब अजीब शक्लों को वह खुदा समझ कर पूजते थे, उन को बुत कहते थे। बुतों को खुदा समझना और उन को पूजना अल्लाह तआला के नज़दीक सब से बुरा काम है और जो लोग खुदा को छोड़ कर बुतों को पूजते हैं उनको काफ़िर कहते हैं।

कुरैश

इतने दिनों में हज़रत इस्माईल अलै० के घराने के आदमी बहुत से खानदानों और क़बीलों में बंट गए थे, उनमें एक मशहूर क़बीले का नाम कुरैश था। यह खास मक्का में आबाद और काबे का इंतज़ाम करने वाला था। दूर दूर से काबा के हज के लिए जो लोग जिन को हाजी कहते हैं, उन को ठहराना, खाना खिलाना, पानी पिलाना और काबा शरीफ के दूसरे कामों की देखभाल इसी कबीले के हाथों में थी इसीलिए यह कबीला सारे अरब में इज़्ज़त के साथ देखा जाता था। इसी कबीले के अक्सर आदमी तिजारत और सौदागरी का पेशा करते थे।

बनी हाशिम

कुरैश के कबीले में भी कई बड़े-बड़े खानदान थे। उन में से एक बनी हाशिम था। यह हाशिम की औलाद थे। हाशिम उस खानदान के बड़े मशहूर आदमी थे। हाजियों को दिल खोल कर खाना खिलाते थे और पीने के लिए चमड़ों के होज़ों में पानी भरवाते थे। यह एक तरह से मक्का के अमीर थे, कुरैश के लिए जो ज़्यादातर तिजारत और व्यापार से रोज़ी कमाते थे, उन्होने यह किया कि हब्शा के बादशाह नजाशी और मिस्र और शाम के बादशाह कैसर से फ़रमान लिखवाया कि उनके मुल्कों में कुरैश के सौदागर बे रोक-टोक आ जा सकें, फिर अरब के मुख्तलिफ़ कबीलों में घूम-घूम कर उन से यह तै कराया कि वह कुरैश के सौदागरों के काफिलों को नहीं लूटेंगे और कुरैश के सौदागर उसके बदले में यह करेंगे कि हर कबीले की ज़रूरत की चीज़ें लेकर खुद उसके पास जाऐंगे।

अब्दुल मुत्तलिब

हाशिम ने अपनी शादी मदीने के शहर में बनू नज्जार के खानदान में की, उस से एक लड़का पैदा हुआ जिसका असली नाम तोशीबा था मगर अबदुल मुत्तलिब के नाम से मशहूर हुआ।

अबदुल मुत्तलिब ने भी जवान होकर बड़ा नाम पैदा किया। काबे का इंतिज़ाम भी उन के सुपुर्द हुआ। काबे में हज़रत इब्राहीम अलै० के ज़माने का एक कुआं था जिस का नाम "ज़म-ज़म" था। यह कुआं इतने दिनों से पड़ा-पड़ा पट गया था। अब्दुल मुत्तलिब ने उसको साफ करके फिर ठीक कराया।

अब्दुल मुत्तालिब की औलाद

अब्दुल मुत्तालिब बड़ी अच्छी क़िस्मत वाले थे, उम्र भी ज़्यादा पायी। दस जवान बेटे थे, उन में पांच किसी न किसी हैसियत से बहुत मशहूर हुए - अबुलहब, अबुतालिब, अबदुल्लाह, हम्ज़ा रज़ि०, और अब्बास रज़ि०।

अब्दुल्लाह

उन बेटों में अपने बाप के सबसे चहेते और प्यारे उम्र में सब से छोटे बेटे अब्दुल्लाह थे। यह सत्रह वर्ष के हुए तो बनी ज़ुहरा नाम के कुरैश के एक दूसरे इज़्ज़त वाले ख़ानदान की लड़की से उनकी शादी हुई। उन बीबी का नाम आमना था। अब्दुल्लाह शादी के बाद बहुत कम ज़िन्दा रहे, कुछ दिन बाद उनका इन्तिक़ाल हो गया।

पैदाइश

अबदुल्लाह के मरने के कुछ महीनों बाद बीबी आमना के बच्चा पैदा हुआ जिसका नाम मुहम्मद सल्ल० रखा गया। यही वह बच्चा है जो हमारा रसूल सल्ल० और पैग़म्बर है, जिसके पैदा होने की दुआ हज़रत इब्राहीम अलै० ने खुदा से मांगी थी और हज़रत ईसा अलै० ने अपने बाद उसके आने की खुशख़बरी सब को सुनाई थी और जो सारी दुनिया की कौमों का रसूल बनने वाला था।

पैदाईश रबीउल अव्वल के महीने में १२ तारीख़ को सोमवार के दिन हज़रत ईसा से पांच सौ इकहत्तर (५७१) वर्ष बाद हुई। सब घर वालों को इस बच्चे के पैदा होने से बड़ी खुशी हुई

परवरिश

सब से पहले हमारे रसूल सल्ल० को उनकी मां आमना ने दूध पिलाया, दो तीन दिन के बाद उनके चाचा अबुलहब की एक लौंडी सवीबा ने आप को दूध पिलाया ।

उस ज़माने में क़ायदा यह था कि अरब के शरीफ़ घरानों के बच्चे देहात में परवरिश पाते थे, देहात से औरतें आतीं और शरीफ़ों के बच्चों को पालने और दूध पिलाने के लिए अपने साथ अपने घरों को ले जातीं, उन्हीं औरतों में से एक जिन का नाम हलीमा था, और जो हवाज़िन के क़बीले और साद के ख़ानदान से थीं, मक्का आयीं और आप को परवरिश के लिए अपने क़बीले में ले गयीं, छ: वर्ष की उम्र तक आप हज़रत हलीमा के पास हवाज़िन के क़बीले में परवरिश पाते रहे ।

बीबी आमना के पास

आप छ: वर्ष के हो चुके तो आप सल्ल० को आप की मां बीबी आमना ने अपने पास रख लिया । ऊपर पढ़ आये हो कि आप सल्ल० की परदादी मदीने की रहने वाली और नज्जार के ख़ानदान से थीं, बीबी आमना आप को लेकर किसी वजह से मदीने आयीं और नज्जार के ख़ानदान में एक महीने तक रहीं ।

बीबी आमना का इन्तिक़ाल

एक महीने के बाद जब यहां से वापस हुई और "अबवा" नाम की जगह पर पहुंच कर इन्तिक़ाल हो गया और यहीं दफ़्न हुई ।

कैसा अफ़सोसनाक मौक़ा था ! सफ़र की हालत थी, साथ में न कोई साथ देने वाला, न मदद करने वाला, न दुख में हाथ बटाने वाला, एक मां,

वह इस दुनिया से सिधारीं । बीबी आमना के साथ उनकी वफादार लौंडी उम्मे यमन थीं। वह हज़रत सल्ल० को अपने साथ लेकर मक्का आयीं ।

अब्दुल मुत्तालिब की परवरिश में

और मक्का आकर आप सल्ल० को अपने दादा अब्दुल मुत्तालिब के सुपुर्द किया, दादा ने अपने बिला मां बाप के यतीम पोते को सीने से लगाया और प्यार से आपकी परवरिश शुरु की । मुहब्बत की वजह से हमेशा वह आपको अपने साथ रखते थे और हर तरह से आपकी ख़ातिर करते थे ।

अब्दुल मुत्तालिब का इन्तिक़ाल

अब्दुल मुत्तालिब अब बूढ़े हो चुके थे, बयासी वर्ष की उम्र थी । आख़िर आपको अपने सब से होनहार बेटे अबुतालिब के सुपुर्द करके इन्तिकाल कर गए और मक्का के क़ब्रिस्तान में जिसका नाम हुजून है दफ़न हुए ।

अबुतालिब की परवरिश में

चचा ने अपने भतीजे को बड़े प्यार से पाला, अपने बच्चों से बढ़कर उनके आराम का ख़याल करते और उनका नाज़ उठाते । अबुतालिब सौदागर थे । एक बार का वाक़िया है कि वह तिजारत का सामान लेकर शाम के मुल्क को जा रहे थे । हज़रत सल्ल० ने भी साथ चलने की ख़्वाहिश की । चचा अपने इकलौते भतीजे की ख़्वाहिश रद्द न कर सके और साथ ले चले, फिर किसी वजह से रासते ही से वापस कर दिया, जब आपकी उम्र बारह साल की हुई तो अरब बच्चों के दस्तूर के मुताबिक़ बकरियां चराने लगे ।

अरब में उस वक़्त लिखने पढ़ने का रिवाज नहीं था इसलिए आपको भी लिखने पढ़ने की तालीम नहीं दी गई, हां, अपने चचा के साथ मिल कर कामों का तजुर्बा सीखते थे । धीरे धीरे आप सल्ल० जवानी की उम्र को पहुंचे।

फ़िजार की लड़ाई में शामिल होना

अरब के लोग बड़े लड़ाकू थे, बात बात में आपस में लड़ते झगड़ते रहते थे। अगर कहीं किसी तरफ से कोई आदमी मारा गया तो जब तक उस का बदला नहीं ले लेते थे चैन से नहीं बेठते थे। एक बार "बक्र" और "तग़लब" अरब के दो क़बीलों में एक घुड़-दौड़ के मौके पर लड़ाई हुई तो वह चालीस वर्ष तक होती रही।

इसी तरह की एक लड़ाई का नाम फ़िजार है। यह लड़ाई कुरैश और कैस के क़बीलों में हुई थी। कुरैश के सारे खानदानों ने अपनी इस क़ोमी लड़ाई में शिरकत की थी। हर खानदान का दस्ता अलग अलग था। हाशिम के खानदान का झंडा अब्दुल मुत्तालिब के एक बेटे जुबैर के हाथ में था, उसी सफ़ में हमारे पैग़म्बर सल्ल० भी थे। आप बड़े रहम दिल थे, लड़ाई झगड़े को पसंद नहीं फ़रमाते थे इसलिए आप ने कभी किसी पर हाथ नहीं उठाया।

सताए हुए लोगों की हिमायत करने का समझौता

इन लड़ाईयों की वजह से मुल्क में बड़ी बेचैनी थी, किसी को चैन से बेठने को नहीं मिलता था, न किसी को अपनी और अपने रिश्तेदारों की जानों की भलाई दिखाई पड़ती थी। उन लड़ाईयों में बहुत लोग मारे जाते थे इसलिए खानदानों में बिला बाप के यतीम बच्चे बहुत थे। उनका कोई पूछने वाला न था। ज़ालिम लोग उन को सताते थे और ज़बरदस्ती उन का माल खा जाते थे। खानदान में जो कमज़ोर होता उस का कहीं ठिकाना न था, ग़रीबों पर हर तरह का जुल्म होता था। यह हालत देख-देख कर आप सल्ल० का दिल दुखता था और सोचते थे कि इस ज़ोर और जुल्म को केसे रोकें कि सब

लोग हंसी ख़ुशी अम्न व शांती से रहें। अरब के कुछ अच्छे मिज़ाज के लोगों को पहले भी यह ख़्याल हुआ था कि इसके लिए कुछ क़बीले मिलकर आपस में यह तै करें कि वह सब सताए गए लोगों की मदद करेंगे। इस सुझावके जो लोग पहले देनेवाले थे उनके नामों में इत्तिफ़ाक़ से फ़ज़्ल का लफ़्ज़ था जिसके मानी भी मेहरबानी के हैं, इसलिए उन के आपस के इस समझोते का नाम "फ़ज़्ल वालों का क़ोल व क़रार" रखा गया और इसको अरबी में "हल्फ़ुल फ़ज़ूल" कहते हैं।

फ़िजार की लड़ाई जब हो चुकी तो आप के चचा ज़ुबैर बिन अब्दुल मुत्तालिब ने यह सुझाव पैश किया कि इस क़ौल व क़रार को जो पहले किया जा चुका था और जिसको लोगों ने भुला दिया था फिर से ज़िन्दा किया जाए। इसके लिए हाशिम, ज़ुहरा तमीम के ख़ानदान मक्का के एक अच्छे मिज़ाज़ वाले अमीर के घर में जिसका नाम अब्दुल्लाह बिन जदआन था इकटठा हुए और सब ने मिल कर तै किया कि हम में से हर आदमी मज़लूम की हिमायत करेगा और अब मक्का में कोई ज़ालिम रहने न पाएगा। इस समझोते में हमारे रसूल सल्ल० भी शामिल थे और बाद को फ़रमाया करते थे कि मक्का में आज भी इस समझोते पर अम्ल करने को तैयार हूं।

काबा की तामीर

मक्का का शहर ऐसी जगह बसा है जिसके चारों तरफ़ पहाड़ियां हैं, उन्हीं के बीच में काबा बना है, जब तेज़ बारिश होती है, पहाड़ियों से पानी बहकर शहर की गलियों में भर जाता है और घरों में घुस जाता है। क़ाबे की दीवारें नीची थीं और उस पर छत भी न थी इसलिए बहुत बार ऐसा होता कि बाढ़ से काबा की इमारत को नुक़सान पहुंच जाता। यह देखकर मक्का वालों की राय हुई कि काबा की इमारत फिर से उंची और मज़बूत करके बनाई जाए। इत्तिफ़ाक़ यह कि मक्का के बंदरगाह पर जिसका नाम जद्दा था,

सौदागरों का एक जहाज़ आकर टूट गया था। कुरैश को ख़बर लगी तो एक आदमी को भेज कर तख़्ते मोल ले लिए।

अब कुरैश के सारे ख़ानदानों ने मिल कर काबा के बनाने का काम शुरु किया। काबा की पुरानी दीवार में एक काला सा पत्थर लगा था और अब भी लगा है। उस को अब भी काला पत्थर ही कहते हैं। उसका नाम अरबी में "हिज्र असवद" है। यह पत्थर अरब के लोगों में बड़ा मुबारक समझा जाता था और इसलाम में भी इस को मुबारक माना जाता है, ख़ाना काबा के चारों तरफ़ फेरा करते वक़्त फेरा उसी के पास से शुरु किया जाता है।

जब कुरैश ने इस बार दीवार को वहां तक उंचा कर लिया जहां यह पत्थर लगा था तो हर ख़ानदान ने यही चाहा कि इस मुबारक पत्थर को हम ही अकेले उठाकर उसकी जगह पर रखें, नौबत यहां तक पहुंची कि तलवारें खिंच गयीं। जब झगड़ा किसी तरह तै न हुआ तो कुरैश के एक सबसे बूढ़े आदमी ने यह राय दी कि कल सुबह सवेरे जो आदमी सबसे पहले काबा में आए वही अपनी राय से इस झगड़े का फ़ैसला कर दे और उसका जो फ़ैसला हो, उस को सब लोग दिल से मान लें। सब ने इस राय को पसंद किया। अब अल्लाह का करना देखो कि सुबह सवेरे जो काबा में पहुंचा वह हमारे रसूल सल्ल० थे। आपको देख कर सब खुश हो गए। आप सल्ल० ने यह किया कि एक चादर मंगवाकर उसमें पत्थर को रखा और हर क़बीले के सरदार को कहा कि वह इस चादर के एक कोने को थाम लें और ऊपर को उठायें। जब पत्थर चादर सहित अपनी जगह पर आ गया तो आप सल्ल० ने अपने मुबारक हाथों से उसे उठा कर उसकी जगह पर रख दिया और इस तरह अरब की एक बड़ी लड़ाई हमारे रसूल सल्ल० के तदबीर से रुक गयी।

सौदागरी का काम

कुरैश के शरीफों का सबसे इज्जत वाला पेशा सौदागरी और तिजारत था, जब हमारे रसूल सल्ल० कारोबार संभालने के लायक हुए, तो इसी पेशे को अपनाया।

आपकी नेकी, सच्चाई और अच्छा बर्ताव मशहूर था। इसलिए इस पेशे में कामियाबी के रास्ते आप के लिए बहुत जल्द खुल गए। हर मामले में सच्चा वायदा फरमाते और जो वायदा फ़रमाते उस को पूरा भी करते। आप की तिजारत के एक साथी अब्दुल्लाह बयान करते हैं कि एक बार मैं ने आप से उस ज़माने में ख़रीद व फ़रोख्त का एक मामला किया। बात कुछ तै हो चुकी थी कुछ अधुरी रह गई थी। मैं ने वायदा किया कि फिर आकर बात पूरी कर लेता हूं। यह कह कर चला गया। तीन दिन के बाद मुझे अपना वायदा याद आया, दोड़कर आया तो देखा कि आप उसी जगह पर बैठे मेरे आने का इन्तिजार कर रहे हैं और जब आया तो आप के माथे पर मेरी इस हरकत से बल तक नहीं आया। नर्मी के साथ इतना ही फ़रमाया कि तुमने मुझे बड़ी तकलीफ़ दी, तीन दिन से यहीं बैठा तुम्हारा इन्तिजार कर रहा हूं।

तिजारत के कारोबार में आप अपना मामला हमेशा साफ़ रखते थे। साइब रज़ि० नाम के आप के एक साथी कहते हैं कि मां बाप आप पर कुर्बान आप मेरी तिजारत में शामिल थे मगर हमेशा मामला साफ रखा, न कभी झगड़ा करते न लीप-पोत करते थे। आपके कारोबार के एक और साथी का नाम अबुबक्र रज़ि० था। वह भी मक्का ही में कुरैश के एक सौदागर थे। यह कभी कभी सफर में आप के साथ रहते थे।

कुरैश के लोग हमारे हज़रत सल्ल० के अच्छे मामले, दयानतदारी और ईमानदारी पर इतना भरोसा करते थे कि बिला झिझक अपनी पूंजी आप के सुपुर्द कर देते थे। बहुत लोग अपना रुपया पैसा आपके पास अमानत रखवाते थे और आपको अमीन यानी अमानत वाला कहते थे।

तिजारती सफ़र

कुरैश के सौदागर अक्सर शाम और यमन के मुल्कों में सफ़र करके तिजारत का माल बेचा करते थे । आंहज़रत सल्ल० ने भी तिजारत का सामान लेकर इन्ही मुल्कों का सफर किया ।

हज़रत ख़दीजा रज़ि० का शामिल होना

अरब में तिजारत का एक ढंग यह था कि अमीर लोग जिन के पास दौलत होती थी, वह रुपया देते थे और दूसरे महनती लोग जिनको तिजारत करने का ढंग आता था, उस रुपये को लेकर तिजारत में लगाते थे और उससे जो फायदा होता था उसको दोनों आपस में बांट लेते थे । हज़रत सल्ल० ने भी इसी ढंग पर तिजारत का काम शुरु किया था । कुरैश में ख़दीजा नाम की एक दौलतमंद बीबी थीं । उनके पहले शोहर मर गये थे और अब वह बेवा थीं । वह अपना सामान दूसरों को देकर इधर उधर भेजा करती थीं । उन्होंने हमारे हज़रत सल्ल० की इमानदारी और सच्चाई की तारीफ़ सुनी तो आप को बुलवा कर कहा कि आप मेरा सामान लेकर तिजारत कीजिये । मैं जितना नफ़ा दूसरो को देती हूं उस से ज्यादा आप को दूंगी । आप मान गये और उनका सामान लेकर शाम के मुल्क को गये । बीबी ख़दीजा ने अपने गुलाम मैसरा को भी आपके साथ कर दिया, उस तिजारत से बहुत नफ़ा हुआ, वापस आये तो बीबी ख़दीजा आप के काम से बहुत खुश हुईं ।

बीबी ख़दीजा रज़ि० से निकाह

उस सफ़र से वापस आये तीन महीने बीते थे कि बीबी ख़दीजा रज़ि०

ने आप के पास निकाह का पैग़ाम भेजा। उस वक़्त आपकी उम्र पच्चीस वर्ष की और बीबी ख़दीजा की उम्र चालीस वर्ष की थी, फिर भी आप सल्ल॰ ने खुशी से उस पैग़ाम को कुबूल कर लिया और कुछ दिन के बाद बहुत सादगी और बेतकल्लुफ़ी के साथ यह बात पूरी हुई। आप के चचा अबु तालिब और हम्ज़ा रज़ि॰ और ख़ानदान के दूसरे बड़े दुल्हन के मकान पर गये। अबु तालिब ने निकाह का खुतबा पढ़ा और पांच सौ दिरहम महर तै पाई।

अब दोनों मियां–बीवी हंसी–खुशी रहने लगे। तिजारत का काम उसी तरह चलता रहा और आप सल्ल॰ अरब के मुख्तलिफ़ शहरों में आते जाते रहे और आप की नेकी, सच्चाई और अख्लाक़ का हर तरफ़ चर्चा था।

शिर्क और बुराई की बातों से बचना

मुहम्मद सल्ल॰ दुनिया में इसी लिए पैदा किये गये थे कि अल्लाह के बन्दों को अल्लाह का पैग़ाम सुनायें। उन को बुराई और बुरी बातों से बचाएं। अच्छी और नेक बातें बतायें तो जिसके पैदा करने से अल्लाह का मकसद यह हो, ज़ाहिर है कि अल्लाह तआला ने उस को कितनी अच्छी बातें दी होंगी और उस की आदतें कितनी अच्छी बनाई होंगी।

हज़ूर सल्ल॰ बचपन से ही बहुत नेक, अच्छे और हर बुराई से बचे थे। बचपन में बच्चों की तरह के झूठे और बेकार खेल कूद से बचे रहे और जवान होकर भी जवानी की हर बुराई से बचे रहे, जब कोई मामूली बात भी ऐसी होती जो नबी, रसूल और अल्लाह के क़ासिद की शान के मुनासिब न होती तो आप सल्ल॰ को अल्लाह उस से साफ़ बचा लेता।

बचपन का क़िस्सा है कि काबे की दीवार ठीक की जा रही थी। बच्चे अपने–अपने तहबन्द उतार कर कंधों पर रख कर पत्थर लादते थे। आप

ने भी अपने चचा के कहने से ऐसा करना चाहा तो बेहोश होकर गिर पड़े। जवानी के शुरु में एक जगह दोस्तों की बेतकल्लुफ़ मज्लिस थी जिस में लोग बेकार किस्सों में रात गुज़ारते । आप सल्ल० ने भी उनके साथ वहां जाना चाहा मगर आपको रास्ते में ऐसी नींद आ गई कि सुबह ही को आंखें खुलीं।

कुरैश के सब ही लोग अपने दादा का दीन भुला चुके थे और अल्लाह को छोड़ कर मिटटी और पत्थर की शकलें बना कर उनको पूजते थे । कुछ लोग सितारे और दूसरे सितारों की पूजा करते थे मगर हुज़ूर सल्ल० ने जब से होश संभाला इन बातों से बराबर बचते रहे ।

रसूल होते हैं

अब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (अल्लाह का दरुद और सलाम उन पर हो) चालीस साल की उम्र को पहुंच गये थे यह वह ज़माना होता है जब आदमी की समझ बूझ पूरी अक्ल पक्की हो जाती है । जवानी के शुरु की ख्वाहिशें मर चुकी होती हैं । दुनिया का अच्छा बुरा तर्जुबा हो चुका होता है, यही उम्र उस के लिये मुनासिब है कि अल्लाह तआला उस को अपना रसूल और दूत बनाए और जाहिलों को सिखाने और नादानों के बताने के लिए उस का उस्ताद मुक़र्रर फ़रमाए ।

अल्लाह अपने रसूल को फरिश्तों के ज़रिए से अपनी बातों से आगाह फ़रमाता है और अपना कलाम उन को सुनाता है । वह रसूल फ़रिश्ते से खुदा का कलाम सुनकर खुदा के बंदो को वही सुनाते हैं । अल्लाह के जो नेक बंदे रसूल के मुंह से खुदा का कलाम सुनकर खुदा की बात मानते हैं और उस के हुक्म पर चलते हैं, वह मुसलमान कहलाते हैं । अल्लाह उन से खुश होता है, प्यार करता है, और जब तक वह जीते हैं, अल्लाह तआला उन को हर तरह का इनाम देता है और उन पर अपनी बरकत उतारता है और जब वह मर जाते हैं तो उनकी रुह को आराम और चैन पहुंचाता है और कयामत के बाद

जब फिर सब लोग जी कर उठेंगे तो नेक लोगों को अल्लाह वहां हर तरह की खुशी देता है। वह बादशाहों से बढ़कर वहां हर तरह का आराम और चैन पाऐंगे। यह बादशांहों से बढ़कर आराम और चेन जहां मिलेगा उस का नाम जन्नत है।

और जो इस रसूल की बात को नहीं मानते और खुदा के कलाम को नहीं सुनते और उसके हुक्म पर नहीं चलते वह इस दुनिया में भी दिल का चैन और रुह का आराम नहीं पाते और मरने के बाद खुदा की खुशी नहीं मिलती और क़यामत क़े बाद वह दुख, दर्द और संज़ा पायेंगे कि वैसी तकलीफ कभी नहीं उठाई होगी और वह जगह जहां उन को यह सज़ा मिलेगी वह दोज़ख है जिस को जहन्नुम भी कहते हैं।

जिस अल्लाह ने अपने बंदों के लिये ज़मीन व आसमान बनाया, तरह-तरह के अनाज, मेवा और फल पैदा किये, पहनने के लिये रंग बिरंगे कपड़े बनाए, ज़मीन में तरह-तरह के हरे भरे पौधे और फूल उगाए, जिस ने इनसान के कुछ दिनों के आराम के लिये यह कुछ बनाया, क्या उस ने उन के हमेशा के आराम का सामान न किया होगा ? जिस तरह इस दुनिया के क़ायदे क़ानून बनाने और सिखाने के लिये उस्ताद हकीम और डाक्टर, बनाए हैं, इसी तरह उस दुनिया के कायदे क़ानून बनाने के लिये रसूल और पैग़म्बर बनाए और जिस तरह इस दुनिया के उस्तादों और डाक्टरों का कहना अगर हम न मानें तो हम को दुनिया में अपनी नादानी और जहालत से बड़ी तक्लीफ़ें उठानी पड़ीं। इसी तरह अगर हम अपनी नादानी और जहालत से बड़ी तकलीफें उठानी पड़ीं। इसी तरह अगर हम अपनी नादानी और जहालत से रसूलों और पैग़म्बरों का कहना न मानें तो उस दुनिया में हम बड़ी तकलीफ़ उठायेंगे। अल्लाह के सारे अहसानों में सबसे बड़ा अहसान यह है कि उसने हमें अपनी बातों को समझाने के लिये और नेकी का रास्ता दिखाने के लिये रसूल भेजे।

आदम अलै० के वक्त से लेकर हज़रत ईसा अलै० तक हर ज़माने में और हर कौम में खुदा के ये रसूल आते रहे। सबसे बाद में सब रसूलों के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्ल०(अल्लाह का दरुद उन पर हो) को भेजा। आप सल्ल० के बाद फिर कोई दूसरा आने वाला नहीं, क्योंकि खुदा की बात पूरी हो चुकी और खुदा का प्याम हर जगह पहुंच चुका।

वही

हमारे रसूल सल्ल० को चालीस साल की उम्र में जब अल्लाह ने रसूल बनाना चाहा, इससे पहले आप सल्ल० को अकेले रहना बहुत पसंद था। कई-कई दिन का खाना ले लेते और मक्के के पास एक पहाड़ की ग़ार में जिस का नाम हिरा था, चले जाते और अल्लाह की बातों पर सोचते। दुनिया की गुमराही और अरब के लोगों की यह बुरी हालत देखकर आप सल्ल० का दिल दुखता था। आप सल्ल० उस ग़ार में दिन-रात खुदा की इबादत और सोच में पड़े रहते थे। एक दिन ऐसा हुआ कि अल्लाह का वह फ़रिश्ता जो अल्लाह का कलाम और प्याम लेकर रसूलों के पास आता है और जिसका नाम "जिब्रील अलै०" है दिखाई पड़ा। उस फ़रिश्ते ने खुदा का भेजा सब से पहला प्याम जिसको "वही" कहते हैं, मुहम्मद रसूल्लुल्ला सल्ल० को सुनाया। खुदा की भेजी हुई पहली वही यह थी-

इक़रा बिस्म। रब्बिकल्लज़ी ख़लक़, ख़लक़ल इंसाना मिन
अलक़, इक़रा व रब्बुकल-अक़र मुल्लजी अल्लम बिल्क़लम,
अल्लमल इन्साना मालम यालम। (सूर : अलक़)

तर्जुमा – अपने उस खुदा का नाम पढ़ जिस ने काइनात को पैदा किया। जिस ने इनसानों को जमे हुए खून से बनाया। पढ़! तेरा खुदा बड़ा ही करम वाला है जिस ने क़लम के ज़रिये इल्म को सिखाया। इंसान को वह बताया जो वह नहीं जानता था।

यह हमारे रसूल सल्ल० पर वही आयी। इस वही का आना था कि हजूर सल्ल० पर अपनी उम्मत की तालीम का बड़ा बोझ डाल दिया गया।

नादानों को बताना, अंजानों को सिखाना, अंधेरे में चलने वालों को रोश्नी दिखाना और बुतों के पूजारियों को अल्लाह तआला के नाम की जानकारी कराना, आप का काम ठहराया गया। आप का दिल इस बोझ के डर से कांप गया। इसी हालत में आप सल्ल० घर वापस आए और अपनी बीवी हज़रत खदीजा रज़ि० से सारा वाकि़या बयान किया। हज़रत खदीजा रज़ि० ने आप को तसल्ली दी और कहा कि आप ग़रीबों पर रहम फ़रमाते हैं, मजबूरों की मदद करते हैं और जो कर्ज़ के बोझ के नीचे दबे हैं उनका बोझ हल्का करते हैं, अल्लाह तआला ऐसे आदमी को यूं न छोड़ देगा, फिर आप को अपने चचेरे भाई वरका़ बिन नोफ़ल के यहां ले गयीं। वरका़ इसाई हो गये थे और इबरानी ज़ुबान जानते थे हज़रत मूसा अलै० की किताब "तौरात" और हज़रत ईसा अलै० की किताब "इंजील" पढ़े हुए थे। उन्होंने खुदा के रसूल सल्ल० से यह सारी बात सुनी तो कहा कि यह वही खुदा का फरिशता है जो मूसा अलै० पर उतरा था, फिर कहा काश ! मैं उस वक्त ताक़तवर और तंदुरुस्त होता, जब तुम्हारी कौ़म तुम को तुम्हारे घर से निकालेगी। आप ने पूछा, क्या ऐसा होगा? वरका़ ने कहा कि जो पैग़ाम आप लेकर आए हैं उसको लेकर आप सल्ल० से पहले जो भी आया उस की क़ोम ने उस के साथ ऐसा ही किया। इत्तिफा़क़ यह की उसके कुछ ही दिन बाद वरका़ ने इन्तिका़ल किया।

अभी आप सल्ल० ने अपना काम शुरु ही किया था कि अल्लाह का यह हुक्म हुआ–

तरर्जुमा–ऐ चादर में लिपटे हुए खड़ा हो जा, फिर डर सुना, और अपने रब की बड़ाई बोल और अपने कपड़े पाक रख और गंदगी को छोड़ दे।

इस वही के आने के बाद आप सल्ल० पर फ़र्ज़ हो गया कि खुदा पर भरोसा करके खड़े हो जाऐं और लोगों को खुदा की बात सुनाऐं, रब की बड़ाई बोलें और नापाकी और गंदगी की बातों से बचें और बचाये।

इस्लाम

जिस तालीम को लेकर हमारे हुज़ूर सल्ल० भेजे गए उस का नाम "इस्लाम" था। इस्लाम के माने यह हैं कि अपने को खुदा के सुपुर्द कर दें और उसके हुक्म के सामने अपनी गर्दन झुका दें। उस इस्लाम को जो मान लेता था उसको मुस्लिम कहते थे यानी खुदा के हुक्म को मानने वाला और उसके मुताबिक़ चलने वाला और हम उसको अपनी ज़ुबान में मुसलमान कहते हैं।

तौहीद

इस्लाम का सबसे पहला हुक्म यह था कि अल्लाह एक है, उस की खुदाई में कोई उसका साथी और साझी नहीं, ज़मीन से आसमान तक उसी एक की सलतनत है, सूरज उसके हुक्म से निकलता है और डूबता है। आसमान उस के फरमान को मानने वाला और ज़मीन उसके इशारे की पाबन्द है। फल-फूल, पेड़, अनाज सब उसी के उगाए हुए हैं। दरिया, पहाड़, जंगल सब उसी ने बनाए हैं, न उसके कोई औलाद है, न बीवी, न मां-बाप, न उसका कोई साथी है और न उसके मुक़ाबले कोई है। दुख, दर्द, और रंज व ग़म सब वही देता है और वही दूर करता है, हर भलाई और खुशी और नेमत वही देता है, वही छीन सकता है।

इस्लाम के इस अक़ीदे का नाम तौहीद है और यही इस्लाम के कलमे का पहला हिस्सा है "ला इला-ह इल्लल्लाहु" यानी अल्लाह के सिवा कोई पूजने के क़ाबिल नहीं और न उसके सिवा किसी और का हुक्म चलता है।

फ़रिश्ते

अल्लाह ने आसमान और ज़मीन के कामों को वक़्त पर क़ायदे से पूरा

करने के लिये बहुत सी ऐसी मखलूक़ बनाई है जो हम को दिखाई नहीं पड़ती, यह फ़रिश्ते हैं जो रात-दिन अल्लाह के हुक्मों को पूरा करने में लगे रहते हैं, उन में खुद किसी तरह की ताक़त नहीं है, जो कुछ है अल्लाह के फ़रमान से है। यह इस्लाम के अक़ीदे का दूसरा हिस्सा है।

रसूल

तीसरा यह है कि अल्लाह के जितने रसूल आए हैं, वह सब सच्चे और खुदा के भेजे हुए हैं और सबकी तालीम एक ही थी। सब से बाद में दुनिया के आख़री रसूल हमारे पैग़म्बर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आये हैं।

किताब

चौथा यह है कि रसूलों के ज़रिये अल्लाह की जो किताबें तौरात, इंजील, ज़बूर, कुरआन वग़ैरह आया हैं वह सब सच्ची हैं।

मरने के बाद फिर जीना

पांचवा यह है कि मरने के बाद हम फिर क़ियामत में जी उठेंगे और खुदा के सामने हाज़िर किये जाऐंगे और वह हमें हमारे कामों का बदल देगा।

ईमान

यही पांच बातें इस्लाम का असली अक़ीदा हैं जिन का हर मुसलमान यक़ीन करता है। इन्हीं बातों को थोड़े में इन दो जुमलों में अदा किया जाता है और जिन के ज़ुबान से कहने और दिल से यक़ीन करने को ईमान कहते हैं--

ला इलाहा इल्लल्लाहु-मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह

(अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं और मुहम्मद (सल्ल०)

अल्लाह के रसूल हैं}

हजूर सल्ल० को इन्हीं बातों को फैलाने और लोगों को समझाने का हुक्म हुआ ।

पहले मुसलमान होने वाले

अरब के लोग निरे जाहिल, नादान और खुदा के दीन से बेख्बर हो गए थे और शिर्क व कुफ़्र में ऐसे फंसे थे कि उन की बुराई वह सुन भी नहीं सकते थे । सच्चाई यह है कि यह आवाज़ सब से पहले जिसके कानों में पड़ी वह हज़रत सल्ल० की बीवी ख़दीजा रजि० हैं । रसूल सल्ल० ने जब उन के सामने खुदा की तालीम को पेश किया तो वह सुनने के साथ मुसलमान हो गयीं । आप सल्ल० के मर्द साथियों में अबुबक्र रजि० नाम के कुरैश के मशहूर सौदागर थे । हमारे रसूल सल्ल० ने उन को जब खुदा का पैग़ाम सुनाया तो वह भी फ़ौरन कलमा पढ़कर मुसलमान हो गए और उस वक़्त से बराबर आप के हर काम में आप के साथ-साथ रहने लगे ।

आप के प्यारे चचा अबु तालिब के कम उम्र बेटे का नाम अलि रज़ि० था । यह हमारे रसूल सल्ल० की गोद में पले थे और आप सल्ल० के साथ-साथ रहते थे । वह बचपन ही से मुसलमान थे । आप के चहेते ख़ादिम का नाम ज़ैद बिन हारिस था, उन्हों मे भी इस्लाम का कलमा पढ़ लिया और मुसलमान हो गए ।

इसके बाद आप सल्ल० ने और हज़रत अबुबक्र रजि० ने मिलकर चुपके-चुपके कुरैश के ऐसे लोगों को जो तबीयत के नेक और समझ के अच्छे थे, इस्लाम की बातें समझानी शुरु कीं । बड़े बड़े मशहूर लोगों में से पांच आदमी हजरत अबुबक्र रजि० के समझाने से मुसलमान हुए । उनके नाम यह हैं - हज़रत उस्मान बिन अफ्फ़ान रज़ि०, हजरत जुबैर रज़ि०, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि०, हजरत साद बिन अबि विकास रज़ि० और

हज़रत तल्हा रज़ि०। फिर यह चर्चा चुपके-चुपके और लोगो कें कानों तक भी पहुंची और मक्का के मुस्लमानों की गिनती दिन ब दिन बढ़ने लगी उनमें कुछ गुलाम भी थे जिन के नाम यह हैं - हज़रत बिलाल रज़ि०, हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ि०, हज़रत खब्बाब बिन अर्त रज़ि० और हज़रत सुहैब रज़ि०। कुरैश के कुछ अच्छे मिजाज़ वाले नवजवान भी पहले इस्लाम लाए जेसे अरकम रज़ि०, सईद बिन ज़ैद रज़ि०, अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि०, उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि० और उबैदा रज़ियल्लाहु अनहुम।

अब धीरे-धीरे यह असर मक्के के बाहर भी फेलने लगा और कुरैश के सरदारों को भी इस नई तालीम का सुन-गुन लगने लगा। एक तो जहालत दूसरे बाप-दादों के मज़हब से लगाव, दानों ऐसी थीं कि कुरैश के सरदारों को इस नऐ मज़हब पर बहुत गुस्सा आया, जो लोग मुसलमान हो चुके थे उन को तरह तरह से सताने लगे मुसलमान पहाड़ों के दर्रों और ग़ारों में जा-जा कर छिप कर नमाज़ पढ़ते थे और अल्लाह का नाम लेते थे। एक बार खुद अल्लाह के रसूल सल्ल० अपने चचेरे भाई हज़रत अली रज़ि० को साथ लेकर किसी दर्रे में नमाज़ पढ़ रहे थे कि आपके चचा अबु तालिब आ निकले। उनको यह नई चीज़ अजीब मालूम हुई। भतीजे से पूछा कि यह कैसा दीन है ? फ़रमाया, यह हमारे दादा इब्राहीम अले० का दीन है। अबु तालिब ने कहा; तुम शौक़ से इस दीन पर क़ायम रहो, मेरे होते तुम्हारा कोई कुछ नहीं कर सकता।

तीन साल तक आप यूं ही छिप-छिप कर और चुपके-चुपके बुतों के खिलाफ़ नसीहत करते रहे और लोगों को सही दीन का सबक़ पढ़ाते रहे, जो नेक और समझदार होते क़ुबूल कर लेते और जो नासमझ और हठ धर्म होते वह न मानते बल्कि उलटे दुश्मन हो जाते।

उस ज़माने में काबे के पास एक गली थी, जिस में एक बड़े सच्चे और जान निछावर करने वाले मुसलमान अरक़म रज़ि० का घर था। यह घर

इस्लाम का पहला मदरसा था । आप अक्सर यहां तशरीफ रखते थे और मुसलमानों से मिलते और उन को खुदा की याद और नसीहत की अच्छी-अच्छी बातें सुनाते और उनके ईमान को मज़बूत बनाते जो लोग इस दीन का शौक़ रखते वह यहीं आकर खुदा के रसूल से मिलते और मुसलमान होते ।

पहली आम मुनादी

तीन साल के बाद खुदा ने आप सल्ल० को हुक्म दिया कि अब खुल्लम-खुल्ला खुदा का नाम ऊंचा करो और निडर होकर बुतपरस्ती की मुखालफ़त करो और हमारे बंदों को नेकी और नसीहत की बातें सुनाओ । इत्तिफाक़ की बात देखो कि उस वक़्त जिस ने सब से ज़्यादा आप सल्ल० का साथ दिया और आप सल्ल० की हिमायत का बीड़ा उठाया, वह भी आप सल्ल० के एक चचा थे जिन का नाम अबु तालिब था । पढ़ चुके हो कि वह आप सल्ल० को कितना प्यार करते थे । इसी तरह जिस ने सबसे ज़्यादा आप सल्ल० की मुखालफत की और आप सल्ल० की दुश्मनी में कोई कसर उठा न रखी वह भी आप सल्ल० के एक चचा थे जिन का नाम अबु लहब था । अबु लहब के अलावा आप के दीन का सब से बड़ा दुश्मन अबु जहल निकला जो कुरेश का एक सरदार और बड़ा दौलतमंद था । कुरैश के खानदानों का कहना था कि अगर खुदा को अपना क़ासिद और एलची बना कर किसी को भेजना ही था तो मक्के या तायफ के किसी दौलतमंद रईस को बना कर भेजता । उनकी समझ में यह बात नहीं आती थी कि खुदा के दरबार में दौलत और रियासत की नहीं, बल्कि नेकी और अच्छाई की इज़्ज़त होती है । उस ने दुनिया बनाने से पहले ही तै कर लिया था कि कुरैश के घराने में अब्दुल्लाह के यतीम बेटे मुहम्मद सल्ल० को अपना आखरी रसूल बना कर भेजेगा, चुनांचे उस ने भेजा और वह अब ज़ाहिर हुआ ।

हमारे रसूल सल्ल० को जब दीन की खुल्लम-खुल्ला मनादी का हुक्म

हुआ तो आप ने मक्के की एक पहाड़ी पर जिस का नाम सफ़ा था, खड़े होकर कुरैश को आवाज़ दी। अरब के दस्तूर के मुताबिक़ उस आवाज़ को सुन कर क़बीले के सारे आदमियों को इकठ्ठा हो जाना ज़रूरी था, इस लिये मक्का के बड़े बड़े सरदार उस पहाड़ी के नीचे आकर इकठ्ठा हुए। आप सल्ल० ने उन से पूछा कि अगर मैं तुम से यह कहूं इस पहाड़ के पीछे तुम्हारे दुश्मनों का एक लश्कर आ रहा है तो क्या तुम को इस का यक़ीन आएगा ? सब ने कहा, हां, बेशक, क्योंकि हम ने तुम को हमेशा सच बोलते हुए देखा है। आप सल्ल० ने फ़रमाया तो मैं यह कहता हूं कि अगर तुमने खुदा के पैग़ाम को नहीं माना तो तुम्हारी क़ौम पर एक बहुत बड़ी मुसीबत आएगी। यह सुन कर अबुलहब ने कहा, क्या तुम ने यही सुनाने के लिए हम को यहा बुलाया था ? यह कह कर उठा और चला गया। कुरैश के दूसरे सरदार भी नाराज़ होकर चले गए।

दीन फैलाने की कोशिश

लेकिन हमारे रसूल सल्ल० ने इन सरदारों की नाराज़गी की परवाह न की और बुतपरस्ती की बुराई खुल्लम-खुल्ला बयान करते रहे और खुदा के एक होने, इबादत और अच्छे अख़्लाक़ और क़यामत की नसीहत फरमाते रहे। जिन के दिल अच्छे थे, वह आपकी बात कुबूल करते जाते थे, लेकिन जो दिल के नेक न थे वह शरारत पर उतर आए और आप को तरह तरह से सताने लगे। रास्ते में कांटे डाल देते, आप नमाज़ पढ़ने खड़े होने तो छेड़ते, काबा का तवाफ़ करने जाते आवाज़ें कसते, लोगों में आप को शायर, जादूगर, पागल वग़ैरा मशहूर करते और जो नया आदमी आता उस को पहले ही जाकर कह आते कि हमारे यहां एक आदमी अपने बाप दादों के दीन से फिर गया है, उस के पास न जाना।

आप सल्ल० उन की यह सारी सख्तियां झेलते थे और अपना काम

किए जाते थे, कुरैश ने देखा कि यह किसी तरह बाज़ नहीं आता, तो एक दिन वह इक्ट्ठे होकर आप के आप सल्ल० के चचा अबु तालिब के पास गए और कहा कि तुम्हारा भतीजा हमारे बुतों को बुरा भला कहता है, और हमारे बाप दादों को गुमराह ठहराता है, अब या तो बीच से हट जाओ, या तुम भी मेदान में आ जाओ कि हम दोनों में से एक का फ़ेसला हो जाए। अबु तालिब ने देखा कि वक्त अब नाज़ुक है। हज़रत सल्ल० को बुला कर कहा कि मुझ बूढ़े पर इतना बोझ न डालो कि उठा न सकूं। ज़ाहिर में हज़रत को अगर किसी की मदद का सहारा था तो वह यही चचा थे। उन की यह बात सुन कर आप सल्ल० आंखों में पानी भर लाए फिर फ़रमाया, चचा जान ! खुदा की क़सम अगर यह लोग मेरे एक हाथ पर सूरज और दूसरे पर चांद रख दें तब भी मैं अपने काम से नहीं रुकूंगा। आप की यह मज़बूती और पक्का इरादा देख कर और आप सल्ल० की यह असर से भरी हुई बात सुनकर अबु तालिब पर बड़ा असर हुआ। आप से कहा, भतीजे जाओ अपना काम किए जाओ यह तुम्हारा कुछ नहीं कर सकते चचा का यह जवाब सुन कर दिल में कुछ ढांढस बंधी और अपना काम और तेज़ी से करना शुरु किया। अक्सर क़बीले के इक्का दुक्का आदमी मुसलमान होने लगे थे। कुरैश के सरदारों ने देखा कि धमकी से काम न चला, अब ज़रा फुसला कर काम चलाएं। सब ने सलाह कर के उतबा नाम के कुरैश के एक सरदार को समझा बुझा कर आप सल्ल० के पास भेजा। उस ने आप सल्ल०के पास पहुंच कर यह कहा ऐ मुहम्मद सल्ल० ! क़ौम में फूट डालने से क्या फायदा ? अगर तुम मक्का की सरदारी चाहते हो तो वह हाज़िर है, अगर किसी बड़े घराने में शादी चाहते हो तो यह भी हो सकता है मगर तुम इस काम को छोड़ दो।

उत्बा को ख्याल था कि हम ने जो चाल चली है, उस की कामयाबी में शक ही नहीं, मुहम्मद सल्ल० इन तीन बातों मे से किसी एक के लालच में आकर ज़रुर ही हम से सुलह कर लेंगे, लेकिन आप सल्ल० की ज़ुबान से

उस ने वह जवाब सुना जिस की ज़रा भी उम्मीद उस को न थी। आप सल्ल० ने कुरान पाक की कुछ आयतें उसको सुनायीं, उन आयतों का सुनना था कि उस का दिल दहल गया । वापस आया तो कुरैश ने देखा कि उस के चहरे का रंग उड़ा हुआ है । उत्बा ने कहा, भाईयों ! मुहम्मद (सल्ल०) जो कलाम पढ़ते हैं वह न शायरी है, न जादूगरी है, मेरी राय यह है कि तुम उन को उन के हाल पर छोड़ दो, अगर वह कामियाब होकर अरब पर ग़ालिब आ गए तो यह हमारी इज़्ज़त है वरना अरब के लोग खुद उन को ख़त्म कर देंगे लेकिन कुरैश ने उस की बात नहीं मानी और अपनी ज़िद पर बराबर अड़े रहे ।

अब आप सल्ल० का यह काम था कि एक एक आदमी के पास जाते और उस को समझाते कोइ मान लेता, कोई चुप रहता, और कोई झिड़क देता इस हालत में जो लोग आप पर ईमान लाए और मुसलमान हुए उन की बड़ी तारीफ है और उन में से कुछ के मुसलमान होने का किस्सा बड़ा दिलचस्प है।

हज़रत हम्ज़ा रज़ि०का मुसलमान होना

हज़रत हम्ज़ा० आप सल्ल० के चचा थे, उम्र में कुछ ही बड़े थे। एक रिश्ते से आप की ख़ाला के बेटे थे और दूध शरीकी भाई भी थे, इसलिए वह आप से बड़ी मुहब्बत करते थे। आदमी बड़े पहलवान थे, ज़्यादा वक्त सैर में और शिकार में ख़र्च करते थे। अबुजहल का हाल तो मालूम है कि वह आप सल्ल० को किस किस तरह सताता था। एक दिन की बात है कि अबुजहल ने अपने मामूल के मुताबिक़ आप को बहुत बुरा भला कहा। एक लौंडी खड़ी यह सब बातें सुन रही थी। शाम को जब हम्ज़ा रज़ि० शिकार से वापस आ रहे थे, उस लौंडी ने जो कुछ देखा और सुना था उन से दोहरा दिया। हम्ज़ा रज़ि० यह सुन कर गुस्से से लाल हो गए और उसी हालत में काबे के सहन में जहां काबे के बड़े बड़े लोग अपने जलसे जम कर बेठे थे, आए और अबुजहल के पास आकर कमान उस के सर पर मारी और कहा, "लो मैं मुसलमान हो गया हूं", तुम्हारा जो जी चाहे मेरे साथ कर लो। यह कह कर घर चले आए। अब वह दिन आया कि इस्लाम में कुरैश का एक बड़ा पहलवान शामिल हो गया।

हज़रत उमर रज़ि० का मुसलमान होना

ख़त्ताब के बेटे उमर रज़ि० कुरैश के एक ख़ानदानी नोजवान थे, मिजाज़ में सख़्ती थी, जो बात करते थे सख़्ती से करते थे। यह भी उस वक्त इस्लाम के बड़े दुश्मन थे। मुसलमानों को छेड़ा और सताया करते थे।

खुदा का ऐसा करना हुआ कि एक दिन यह किसी बुतखान में पड़े सो रहे थे कि बुतखााने के अंदर से ला इला हा इल्लल्लाहु की आवाज़ सुनी, घबरा कर उठ बेठे और अब वह इस आवाज़ की सच्चाई पर कभी-कभी सोचने लगे । हुज़ूर सल्ल० रातों को जब कुरान शरीफ़ पढ़ते तो यह दूसरों से दिबक कर खड़े होकर सुनने लगते । एक रात आप सल्ल० नमाज़ में कुरान शरीफ की एक सूर: पढ़ रहे थे और उमर एक एक आयत सुन रहे थे और असर ले रहे थे, लेकिन चूंकि मिजाज़ के पुखता और तबीयत के मुस्तिक़ल थे, वह इस असर को ख़त्म करते रहे ।

इससे पहले उमर रज़ि० की बहन फ़ातिमा रज़ि० और बहनोई साद बिन ज़ैद मुसलमान हो चुके थे । उमर रज़ि० को पता चला तो दोनों को रस्सियों से जकड़ बांध दिया । मशहूर यह है कि एक बार उमर रज़ि० के दिल में आया कि चल कर मुहम्मद सल्ल० ही का सर क्यों न काट दूं कि रोज़ का झगड़ा ख़त्म हो जाए । यह इरादा कर के वह तलवार लगा कर घर से निकले । रासते में एक मुसलमान से उनकी मुलाक़ात हुई । उस ने पूछा कि उमर ! किधर का इरादा है ? उन्होंने कहा, जाता हूं कि मुहम्मद (सल्ल०) को ख़त्म कर दूं । उसने कहा, पहले अपनी बहन और बहनोई की तो ख़बर लो । इस ताने से वह बेचैन हो गए । पलट कर अपनी बहन के घर का रास्ता किया । गुस्से से बे क़ाबू होकर बहन और बहनोई को जी खोलकर मारा, मगर देखा तो उनको तौहीद का नशा उसी तरह था । उनके दिल पर इसका बड़ा असर हुआ । कहा कि अच्छा, जो सूर: तुम पढ़ रहे थे वह मुझे भी दिखाओ। उन्होंने यह वर्क़ लाकर हाथ पर रख दिया । उमर रज़ि० जेसे जेसे इसको पढ़ते जाते थे उनका दिल कांपता जाता था । आख़िर चिल्ला उठे, ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह ।

यह वह ज़माना था जब आप सल्ल० अरक़म रज़ि० के घर में थे । हज़रत उमर रज़ि० सीधे वहां पहुंचे । किवाड़ बंद थे, आवाज़ दी । जो

मुसलमान वहां थे, हज़रत उमर रज़ि० को तलवार लिए देख कर डर गए । हज़रत हम्ज़ा रज़ि० ने कहा, आने दो, अगर वह अच्छी नियत से आया है तो बेहतर है वरना उसी की तलवार से उसी का सर काट दिया जाएगा । दरवाज़ा खुला और हज़रत उमर रज़ि० ने अंदर क़दम रखा तो खुदा के रसूल सल्ल० खुद आगे बढ़े और उनका दामन पकड़ कर फ़रमाया, क्यों उमर ! किस इरादे से आए हो ? अर्ज़ किया ईमान लाने के लिये । यह सुन कर मुसलमानों नें इस ज़ोर से अल्लाहु अकबर का नारा मारा कि मक्के की पहाड़ियां गूंज उठीं ।

काफ़िरों को जब हज़रत उमर रज़ि० के मुसलमान होने का हाल मालूम हुआ तो उन्होंने चारों तरफ़ से हज़रत उमर रज़ि० के मकान का घेराव किया। लेकिन आस बिन वायल के समझाने से वह वापस चले गए । हज़रत उमर रज़ि० मुसलमान हुए तो मुसलमानों की हिम्मत बढ़ गई । अब तक मुसलमान काफ़िरों के डर से काबे में जाकर नमाज़ नहीं पढ़ते थे । हज़रत उमर रज़ि० मुसलमान हुए तो सब मुसलमानों को साथ लेकर निकले और लड़कर काबे के सहन में जाकर नमाज़ पढ़ी ।

हज़रत अबुज़र गिफ़ारी रज़ि० का मुसलमान होना

रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम के मुसलमान साथियों को "सहाबा" कहते हैं । इस्लाम जैसे जैसे फैलता जाता था सहाबियों की तादाद भी दिन ब दिन बढ़ती जाती थी यहां तक की मक्के के बाहर भी वह पहुंच गए । मक्का से कुछ दूरी पर गिफ़ार का क़बीला रहता था । उसमें अबुज़र रज़ि० और अनीस रज़ि० दो भाई रहते थे । अबु ज़र रज़ि० को जब यह मालूम हुआ कि मक्के में एक रसूल पैदा हुआ है जिसका दावा यह है कि उस

के पास आसमान से खुदा का पैग़ाम आता है, तो उन्होंने अपने भाई अनीस रजि० को भेजा कि जाकर उस रसूल का हाल मालूम करें और उस की बातें सुनें। अनीस रज़ि० मक्का आए और वापस आकर अपने भाई से कहा कि वह अख़लाक़ की अच्छी-अच्छी बातें लोगों को बताता है और जो कलाम वह लोगों को सुनाता है वह शेर नहीं। यह सुनकर अबुज़र रज़ि० का शौक़ और बढ़ा और वह खुद सवार होकर मक्का आए और मक्का में दाखिल हुए कि खुदा के रसूल का पता लगाऐं। किसी से पूछना मुश्किल था, रात हो गई और वह लेट गए। हज़रत अली रजि० का उधर से गुज़रना हुआ तो वह समझे कि यह कोई परदेसी है। हज़रत अली रज़ि० ने उनकी तरफ देखा, वह पीछे हो लिए। रास्ते में एक ने दूसरे से बात न की रात भर वह उनके घर रहे, सुबह हुई तो वह फिर काबा चले आए और दिन भर यूं ही पड़े रहे, रात हुई तो वह फिर वहीं लेट गए। हज़रत अली रज़ि० अब फिर उधर से गुज़रे तो देखा कि वही परदेसी है। उनको उठा कर अपने घर लाए और कोई बात-चीत नहीं हुई। रात बिताकर अबूज़र रज़ि० फिर काबा में पहुंचे। इसी तरह दिन बीता। रात आई तो दिल चाहा कि यहीं लेटे रहें कि फिर हज़रत अली रज़ि० का गुज़रना हुआ और उन को साथ लेकर चले। रास्ते में पूछा कि तुम किधर से आए हो ? उन्होंने जो बात थी ब्यान किया। फ़रमाया, सच है खुदा के वह रसूल हैं, अच्छा सुबह को मेरे साथ चलना। सुबह हुई तो वह उन को लेकर खुदा के रसूल के पास चले, जब वहां पहुंचे और खुदा के रसूल की बातें सुनी तो दिल की बात ज़ुबान पर आ गई। कलमा पढ़कर मुसलमान हो गए। हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने फ़रमाया, इस वक़्त अपने घर चले जाओ। उन्होंने कहा, नहीं, खुदा की क़सम, मैं इस कलमे को उन के सामने चिल्ला कर कहूंगा। यह कह कर वह काबे में आए और बड़े जोर से चिल्लाकर पुकारे। अश हदु अन लां इलाहा इल्लल्लाहु व अशहदु अन-न मुहम्मदुर्रसूल्लाह, मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा

कोई माबूद नहीं और यह कि मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के रसूल हैं। काफ़िरों ने आवाज़ सुनी तो हर तरफ़ से उन पर टूट पड़े ओर सब ने मिलकर उनको बुरी तरह से मारा। अब्बास रज़ि० आपके चचा दोड़कर आए ओर उनको बचाया और कुरैश से कहा कि तुम को मालूम नहीं कि यह ग़िफ़ार के कबीले का आदमी है और तुम्हारी तिजारत का रासता उधर से ही गुज़रता है, तब कुरैश ने बड़ी मुशकिल से उनको छोड़ा। दूसरे दिन फिर वह काबा में आए और इसी तरह ज़ोर से चिल्ला कर इसलाम का कलमा पढ़ा। काफ़िर फिर दोड़े और उनको मारने लगे और फिर हज़रत अब्बास रज़ि० ने आकर उनहें छुड़ाया। यह था साहबा रज़ि० का इसलाम का नशा जो उतारते न उतरता था।

ग़रीब मुसलमानों का सताया जाना

कुरैश ने जब यह देखा कि मुसलमानों की तायदाद दिन ब दिन बढ़ती जाती है और यह बाढ़ रोके नहीं रुकती तो उन्होंने ज़ोरदार जुल्म करने की ठान ली। जिस ग़रीब मुसलमान पर जिस काफिर का ज़ोर चला, उनको हरह-तरह से सताने लगा। दोपहर को अरब की रेगिसतानी और पथरीली ज़मीन बेहद गर्म हो जाती है। उस वक्त वह बे यार व मददगार मुसलमानों को पकड़कर उस तेज़ धूप में उसी गर्म जमीन पर लिटाते, छाती पर भारी पत्थर रख देते, बदन पर गर्म बालू बिछाते, लाहे को आग पर गर्म करके उससे दाग़ते। यह वह सज़ाऐं थीं जो बिलाल रज़ि० और सुहैब रज़ि० दो मुसलमान गुलामों को दी जाती थीं।

इससे भी तसल्ली न होती तो हज़रत बिलाल रज़ि० के गले में रस्सी बांधते और लौंडो के हवाले करते और वह उनको गली में घसीटते फिरते,

लेकिन उनका यह हाल था कि इस हालत में भी ज़ुबान पर अहदुन-अहदुन होता यानी यह ख़ुदा एक है, वह ख़ुदा एक है ।

सुहैब रज़ि० भी ग़ुलाम थे जो मुसलमान हो गए थे, उनको पकड़ कर इतना मारते थे, कि उनके होश व हवास जाते रहते थे ।

ख़ब्बाब बिन अर्त रज़ि० भी पुराने मुसलमानों में थे । उन को तरह-तरह की तक्लीफ़ें दी गयीं यहां तक की एक दिन गर्म कोयलों पर उनको चित्त लिटाया गया और उस वक़्त तक न छोड़ा गया जब तक कोयले ठंडे न हो गए ।

यासिर रज़ि० और उनके बेटे अम्मार रज़ि० और बीबी सुमय्या रज़ि० ये तीनों मक्के के ग़रीबों में थे और इस्लाम लाने वालों में बहुत पहले हैं । यासिर रज़ि० तो काफ़िरों के हाथों से तकलीफें उठाते-उठाते मर ही गए । सुमय्या रज़ि० को अबुजहल ने ऐसी बरछी मारी कि वह मर गयीं । अम्मार रज़ि० को तपती हुई ज़मीन पर लिटा कर इतना मारते कि वह बेहोश हो जाते । ज़ुनैरा रज़ि० एक मुसलमान बांदी थीं, अबुजहल ने उनको इतना मारा कि उनकी आंखें जाती रहीं और दूसरे ग़रीब मुसलमानों और नए मुस्लिम ग़ुलामों और लौंडियों को ऐसी ही सज़ाऐं दी जातीं । हज़रत अबुबक्र रज़ि० ने हज़रत बिलाल रज़ि०, आमिर रज़ि०, लबनिया रज़ि०, ज़ुनैरा रज़ि०, नादिया रज़ि०, और उम्मे उबैस रज़ि० वग़ैरा मुसलमान ग़ुलामों और बांदियों को उनके ज़ालिम और बे रहम मालिकों से ख़रीद कर आज़ाद कर दिया । यह तो ग़रीब मुसलमानों का हाल था, जो इज़्ज़त और दौलत वाले थे वह अपने बुज़ुर्ग रिश्तेदारों के पंजों में थे । हज़रत उस्मान रज़ि० जब मुसलमान हुए तो उनके चचा ने उनको रस्सी से बांध कर मारा हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि० और उनकी बीवी फ़ात्मा रज़ि० को जो हज़रत उमर रज़ि० की बहन थीं । हज़रत उमर रज़ि० रस्सी से जकड़ देते थे । हज़रत ज़ुबैर रज़ि० तो उनके चचा उनको चटाई में लपेट कर उन की नाक में धुआं देते थे । अब्दुल्लाह बिन

मस्ऊद रज़ि० मुसलमान हुए तो काबे में जाकर सूर: रहमान पढ़ना शुरु किया। काफ़िर हर तरफ़ से उन पर टूट पड़े और बुरी तरह मारा।

मुसलमान इस मजबूरी में क्या करते। आकर हज़रत मुहम्मद सल्ल० से काफ़िरों की शिकायत करते और अर्ज़ करते कि ऐ अल्लाह के रसूल ! दुआ कीजिए कि मुसलमानों को अमन मिले।

आप सल्ल० उन को तसल्ली देते और अगले पैग़म्बरों का हाल सुनाते और उन्होंने हक़ की राह में जो तकलीफ़ें उठायीं उनको ब्यान करते और फ़रमाते कि सच्चाई का सूरज ज़्यादा देर बादल में छिपा नहीं रह सकता। एक ज़माना आएगा जब खुदा तुमको ग़ालिब करेगा तुम से पहले किसी पैग़म्बर को आरे से चीर दिया गया, किसी का गोश्त लोहे की कंघी से छील दिया गया, मगर उन्होंने हक़(सच्चाई) को नहीं छोड़ा।

हब्श की हिजरत

एक शहर से दूसरे को चले जाने को हिजरत कहते हैं। पढ़ चुके हो कि अरब का मुल्क समुद्र के किनारे है और हिजाज़ जिस समुद्र के किनारे है उसका नाम बहरे अहमर है। बहरे अहमर के उस किनारे अफ्रिका में हब्श का मुलक है। वहां का इसाई बादशाह बहुत नेक था। मुसलमानों की तकलीफ़ें जब बढ़ गईं तो नबूवत के पांचवे साल खुदा के रसूल सल्ल० की इजाज़त से ग्यारह मर्द और चार औरतें किश्ती में बैठ कर हब्श को रवाना हो गए।

हब्श के बादशाह को नजाशी कहते हैं। नज़ाशी ने उन मुसलमानों को अपने यहां बड़े अम्न व अमान में रखा। कुरैश को जब इसकी ख़बर हुई तो उन्होंने नजाशी के पास अपने दो दूत भेजे कि यह हमारे मुजरिम हैं और इन को हमारे हवाले कर दीजिए। बादशाह ने मुसलमानों को बुलाकर हाल पूछा। हज़रत अली रज़ि० के भाई हज़रत जाफ़र रज़ि० ने मुसलमानों की तरफ़ से

यह तक़रीर की–

"ऐ बादशाह ! हम जाहिल थे, बुत पूजते थे, मुर्दार खाते थे, बुरा काम करते थे, पड़ोसियों को सताते थे, भाई-भाई पर ज़ुल्म करता था, ताक़तवर कमज़ोरों को खाते थे। इतने में हम में एक आदमी पैदा हुआ जिसकी बुज़ुर्गी, सच्चाई और ईमानदारी को हम जानते थे। उसने हमको सच्चे दीन की दावत दी और बताया कि हम बुतों को पूजना छोड़ दें, सच बोलें, ज़ुल्म करना छोड़ दें, यतीमों का माल न खायें, पड़ोसियों को आराम दें, पाकदामन औरतों पर बदनामी का दाग़ न लगाएँ, नमाज़ पढ़ें, रोज़े रखें, खैरात दें। हमने उस शख़्स को ख़ुदा का पैग़म्बर माना और उस की बातों पर अम्ल किया। इस जुर्म पर हमारी क़ौम हमारी जान की दुश्मन हो गई और हमको मजबूर करती है कि हम इस को छोड़कर उसी पहली गुमराही में रहें।"

निजाशी ने कहा, तुम्हारे पैग़म्बर पर जो कलाम उतरा है कहीं से पढ़ो। हज़रत जाफ़र ने सूर: मरयम की कुछ आयतें पढ़ीं। निजाशी पर उनका यह असर हुआ कि उस की तारीफ़ से आंसू जारी हो गए, फिर कहा, ख़ुदा की क़सम यह कलाम और इंजील दोनों एक ही चिराग़ के पर तो हैं। यह कह कर क़ुरैश के आदमियों से कहा कि तुम वापस जाओ, मैं इन मज़्लूमों को वापस न दूंगा।

मुसलमानों ने जब नजाशी की यह मेहरबानी देखी तो बाद को ओर भी बहुत से मुसलमान छिपकर हब्श को रवाना हो गए यहां तक कि उनकी तादाद कम से कम तिरासी हो गयी।

अबु तालिब की घाटी में नज़रबंदी

क़ुरैश ने देखा कि यह तद्बीर भी कामियाब नही हुई, इसलिए क़ुरैश के सब ख़ानदानों ने मिलकर नबूवत के सातवें साल यह समझौता किया कि

कोई शख़्स ख़ुदा के पैग़म्बर (रसुल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के ख़ानदान से जिसका नाम बनु हाशिम था, कोई ताल्लुक़ न रखेगा, न उनसे कोई शादी-व्याह करेगा, न उनके हाथ ख़रीद व फ़रोख़्त करेगा, न उनको खाने पीने का कोई सामान देगा या यह कि वह मुहम्मद सल्ल० को हमारे हवाले कर दें।

यह मुआहिदा लिख कर काबा के दरवाज़े पर लटका दिया गया। अबु तालिब, ख़ानदान के सारे लोगों को लेकर एक दर्रे में चले गए, जो शोब अबि तालिब कहलाता है, यहीं दूसरे मुसलमानों ने भी आ-आ कर पनाह ली और बहुत तक्लीफ़ के साथ यहां रहने लगे। पत्तियां खाकर गुज़ारा करते, सूखा चमड़ा मिलता तो उसको भून कर खाते, बच्चे भूख से बिलबिलाते थे। हज़रत सल्ल० के खाने के लिए बिलाल रज़ि० बगल में कुछ छिपा कर कहीं से कभी-कभी कुछ ले आते थे, तीन साल इसी तरह गुज़र गए। आख़िर ख़ुद इन ज़ालिमों में से कुछ को रहम आया और उन्होंने इस ज़ालिमाना मुआहिदे को तोड़ डाला।

अबू तालिब और ख़दीजा रज़ि० का इन्तिक़ाल

सन १० नबवी

अब वह दर्रे से निकल कर अपने घरों में आए, कुछ ही दिन गुज़रे थे कि आप के प्यारे चचा अबूतालिब ने इन्तिक़ाल किया। अभी इस दुख को कुछ ही दिन हुए थे कि हज़रत सल्ल० के दुख में साथी बीवी हज़रत ख़दीजा रज़ि० ने भी इन्तिक़ाल किया। यह ज़माना आप सल्ल० पर बहुत सख़्त गुज़रा। आप सल्ल० के यही दोनों हमदर्द और दुख के साथी थे। दोनों एक ही साल के अंदर आगे पीछे चल बसे।

आप सल्ल० पर मुसीबतें

कुरैश के ज़ालिमों को अबुतालिब के रोब-दाब और हज़रत ख़दीजा रज़ि० के ख़ातिर से अब तक ख़ुद रसूलल्लाह सल्ल० पर हाथ उठाने की हिम्मत नहीं हुई थी। इन दोनों के उठ जाने पर मैदान ख़ाली हो गया। अब वह ख़ुद आप सल्ल० के साथ बे-अदबी से पेश आने लगे।

एक बार आप रास्ते में जा रहे थे कि किसी ज़ालिम ने मुबारक सर पर मिट्टी डाल दी। आप सल्ल० इसी तरह घर आए आप की बेटी पानी लेकर आयीं। मुबारक सर पानी से धोती जातीं थीं और बाप की यह सूरत देख कर रोती जातीं थीं। आप सल्ल० ने फरमाया, बाप की जान ! रो नहीं, ख़ुदा तेरे बाप को यूं न छोड़ेगा।

एक बार आप सल्ल० काबा के सेहन में नमाज़ पढ़ रहे थे। कुरैश के सरदार जल्सा जमाए बेठे थे। नमाज़ पढ़ते देखकर कहने लगे कि कोई ऊंट की ओझड़ी लाकर उनकी गर्दन पर रख दे, चुनांचे एक शरारती आदमी ने यह काम किया। इस बोझ से आप सल्ल० की पीठ दब गई। किसी ने आप सल्ल० की बेटी हज़रत फ़ातमा रज़ि० से जाकर इसकी ख़बर की। वह आयीं तो किसी ने उस गंदगी को हटाकर दूर किया। एक बार एक शरारती ने आपकी गर्दन में चादर का फंदा डाल कर चाहा कि गला घोंट दे। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने दौड़कर आप सल्ल० को बचा लिया और उस से कहा क्या एक शख़्स की जान सिर्फ इतनी सी बात पर लेना चाहते हो कि वह कहता है कि मेरा परवरदिगार एक है।

तायफ़ का सफ़र

मक्का से चालीस मील की दूरी पर तायफ़ का खुशहाल हराभरा शहर था। आप सल्ल० ने मक्का के यह हालत देखकर यह तै किया कि तायफ़ जाएें और वहां के रईसों को इसलाम का संदेश सुनायें। आप ज़ैद बिन हारिस को साथ लेकर तायफ़ गए और वहां के रईसों को सच्चे दीन की दावत दी, मगर अफ़सोस कि उनमें से किसी ने भी इसको कुबूल नहीं किया।और इसी पर बस नहीं किया बल्कि बाज़ार के शरारतियों को उभार दिया कि वह आप सल्ल०, को परेशान करें। वह रास्ते के दोनों तरफ़ खड़े हो गएऔर जब आप सल्ल० उधर से गुज़रने लगे तो आपके पांव पर पत्थर बरसाए जिससे आपके पांव लहुलुहान हो गए। आप सल्ल० दर्द के मारे कहीं बैठ जाते तो वह हाथ पकड़ कर उठा देते। शरारती फिर पत्थर मारते और गालियां देते। आप थक कर बैठ जाते, आखिर आपने एक बाग़ में पनाह ली। यह कैसी मजबूरी का वक्त था। उस वक्त आप सल्ल० को खुदा का एक फ़रिशता नज़र आया, जिसने आप सल्ल० को खुदा का पैग़ाम सुनाया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लम ! अगर आप कहें तो तायफ़ वालों पर इन पहाड़ों को दे मारा जाए कि वह कुचल कर रह जाऐं ? आप सल्ल० ने उम्मत पर महरबान होकर कहा कि ऐ खुदा ! ऐसा न कर, शायद कि इन की नस्ल से कोई तेरा मानने वाला पैदा हो।

क़बीलों में दौरा

तायफ़ के नाकाम सफ़र ने आप सल्ल० के मज़बूत इरादे पर कोई असर नहीं किया। अब आपने इरादा किया कि एक-एक क़बीले में घूमकर खुदा का पैग़ाम सुनाऐं। इसके लिये मक्का में हज का कुदरती मौक़ा मोजूद था। उस ज़माने में अरब के कोने कोने से लोग आते और कई-कई दिन

ठहरते । मक्का के आस पास मेले भी लगते थे और यहां भी आदमियों का जमाव होता था । आंहज़रत सल्ल० ने इन मजमों में एक-एक कबीले में घूम-घूम कर नसीहत कहना और कुरआन की आयतें सुनाना शुरु कीं । उसका यह असर हुआ कि पूरे मुल्क में इस्लाम की आवाज़ फैल गई ।

औस और खि़ज़रज में इस्लाम

उन्हीं कबीलों में मदीना शहर के रहने वाले दो मशहूर कबीले भी थे, जिन के नाम औस और खि़ज़रज हैं । यह कबीले उस शहर में मुद्दत से रहते थे और काश्तकारी करते थे । उनके आस पास यहूदी आबाद थे जो सौदागर और महाजन थे । लोगों को सूद और पैदावार पर कर्ज़ देते थे और बड़ी सख्ती से वसूल करते थे । यह कबीले आपस मे लड़ते रहते थे और उन पर पूंजी वाले यहूदी गोया एक तरह की हकूमत करते थे । गर्ज़ यह दोनों कबीले कुछ तो आपस में लड़-लड़ कर और कुछ यहूदीयों के फंदे में फंसकर तबाह हो गये थे ।

यहूदियों की आसमानी किताबों में एक पैगम्बर के आने की खबर थी और अक्सर यहूदियों की महफिलों में उस के पैदा होने की बात हुआ करती थी । यह आवाज़ें औस और खि़ज़रज के कानों में भी पड़ा करती थीं । नबुवत के दसवें साल रजब के महीने में इन दोनों कबीलों के लोग मक्का आए । आप सल्ल० उकबा की जगह पर उनसे मिले ।और उनको खुदा का कलाम सुनाया उन लोगों ने एक दूसरे को देखकर कहा कि यह तो वही पैगम्बर मालूम होता है । कहीं एसा न हो कि यहूदी हम से बाजी ले जाएं । यह कहकर सब ने एक साथ इस्लाम कबूल किया । यह छः आदमी थे ।

दूसरे साल मदीने से बारह आदमी मुसलमान हुए । उन्होंने ख्वाहिश की कि हमारे साथ कोई ऐसा आदमी भेजा जाऐ जो हमको इसलाम की बातें सिखाऐ और हमारे शहर में जाकर वाज़ (नसीहत) कहे । आप सल्ल० ने

इस काम के लिये मसअब बिन उमैर रज़ि० को चुना। यह अब्द- मनाफ़ के पोते और पुराने मुसलमानों में थे। यह उन लोगों के साथ मदीने आए और यहां आकर लोगो के घरों में घूम-घूम कर इस्लाम का संदेश कहना शुरु किया। इस संदेश के अवसर से लोग मुसलमान होने लगे और एक साल के अंदर-अंदर इस शहर के अक्सर घराने मुसलमान हो गए।

उक़बा की बैअ़त

अगले साल जब हज का ज़माना आया तो मदीने से बहत्तर (७२) आदमी आप सल्ल० से मिलने आए और छिप कर आप सल्ल० के हाथ पर बैअत की। उस वक़्त आप सल्ल० के साथ आपके चचा अब्बास रज़ि० भी थे जो अगरचे अभी तक मुसलमान नहीं हुए थे मगर आप सल्ल० से बहुत मुहब्बत रखते थे। उन्होंने उन लोगों से कहा कि मुहम्मद सल्ल० अपने खानदान में बड़ी इज़्ज़त रखते हैं। दुशमनों के मुक़ाबले हम हमेशा उनका साथ देते रहे, अब यह तुम्हारे पास जाना चाहते हैं। अगर तुम मरते दम तक इनका साथ दे सको तो बहतर है वरना अभी से जवाब दे दो। मदीने के एक सरदार बरा रज़ि० ने कहा कि हम तलवारों की गोद में पले हैं। वह इतना ही कहने पाए थे कि एक दूसरे सरदार अबुलहुसैम रज़ि० ने कहा, "ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हम से और यहूदियों से ताल्लुक़ात हैं। बैअत के बाद यह ताल्लुक़ात टूट जाऐंगे, ऐसा न हो कि जब इस्लाम को कुव्वत और ताक़त हासिल हो जाए तो आप सल्ल०हम को छोड़कर चले जाऐं।"

आप सल्ल० ने मुस्कुरा कर फ़रमाया "तुम्हारा खून मेरा खून है, तुम मेरे हो और मैं तुम्हारा हूं।" इसके बाद आप सल्ल० ने उनमें से बारह सरदार चुने। उनके नाम खुद उन्हीं लोगों ने चुनकर बताए थे। इन बारह में से नो खिजरज के और तीन औस के थे।

हिजरत
मदीना और अंसार

मदीने के मुसलमानों को अमन की जगह मिल गयी थी, इसलिए आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्का शहर के मुसलमानों को इजाज़त दी कि वह अपना शहर छोड़कर मदीना को चले जायें। मुसलमानों ने धीरे-धीरे अब मदीने को हिजरत करनी शुरू की। आखिर में खुद हुज़ूर सल्ल० ने भी मक्का को छोड़कर मदीने को हिजरत करनी चाही। कुरैश के लोगों को भी इस बात की खबर मिल चुकी थी। उन्होंने आपस में मिलकर यह तै किया कि रात को हर क़बीले का एक-एक आदमी इकट्ठा हों और सब मिलकर एक साथ मुहम्मद सल्ल० को क़त्ल कर दें। खुदा ने आप सल्ल० को उनके इस मशिवरे की जानकारी दी।

मक्के वालों को हज़रत सल्ल० के मज़हब से अगरचे सख्त मुखालिफ़त थी, मगर फिर भी सबको आप सल्ल० की दयानत और अमानत पर बड़ा भरोसा था, चुनांचे बहुत से लोगों की अमानतें आप के पास थीं। आप सल्ल० ने यह अमानतें हज़रत अली रज़ि० को सुपुर्द कीं और फ़रमाया कि आज रात तुम मेरे बिस्तर पर आराम करना और सुबह लोगों को उनकी सब अमानतें दे कर तुम भी चले आना। इस हुक्म के मुताबिक़ हज़रत अली रज़ि० ने रात को आप सल्ल० के बिस्तर पर आराम किया। कुरैश के लोग सुबह तक घर को घेरे पड़े रहे। सुबह सवेरे यह देखकर हैरान रह गए कि मुहम्मद सल्ल० के बिस्तर पर मुहम्मद सल्ल० के बजाए अली बिन अबी तालिब रज़ि० हैं।

हुज़ूर सल्ल० और हज़रत अबुबक्र रज़ि० में हिजरत का मश्विरा पहले ही हो चुका था। दोनों अपने घरों से निकलकर मक्का के पास ही सूर नाम के एक पहाड़ के ग़ार में जा कर छिप गए। सुबह काफ़िरों ने आपकी खोज

शुरु की और ढूंढते-ढूंढते उस ग़ार के मुंह तक आ गए । हज़रत अबुबक्र रज़ि० घबरा कर बोले, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! दुश्मन इतने क़रीब आ गए हैं कि अगर वह अपने पांव की तरफ़ देखें तो हम को देख लेंगे, लेकिन हुज़ूर सल्ल०, के इतमिनान का वही हाल था । फ़रमाया, घबराओ नहीं, खुदा हमारे साथ है ।

आंहज़रत सल्ल० और हज़रत अबुबक्र रज़ि० तीन दिन उसी ग़ार में रहे। हज़रत अबुबक्र रज़ि० के बेटे अब्दुल्लाह रात को आ कर मक्के वालों के हालात और मश्विरों की खबर दिया करते थे । कुछ रात गये हज़रत अबुबक्र रज़ि० का ग़ुलाम चुपके से यहां बकरियां ले आता । आप और हज़रत अबुबक्र रज़ि० उन का दूध पी लेते ।

चौथे दिन आप सल्ल० और हज़रत अबुबक्र रज़ि० ग़ार से निकले । एक रात-दिन बराबर यूं ही चलते रहे, दूसरे दिन दोपहर को एक चट्टान के नीचे दम लिया । एक चरवाहा बकरियां चरा था । अबुबक्र रज़ि० उस से दूध लेकर आप सल्ल० के पास आए । आप सल्ल० ने पी लिया और फिर आगे को बढ़े । कुरैश ने इश्तिहार दिया था कि जो मुहम्मद (सल्ल०) या अबुबक्र रज़ि० को गिरफ्तार कर लाएगा उसको सौ ऊंट इनाम में दिए जाऐंगे । सुराका बिन जाशम ने जो मक्का का एक खूबसूरत सिपाही था, यह इश्तिहार पढ़ा तो इनाम के लालच में हथियार से लैस घौड़े पर सवार होकर निकला और ठीक उस वक्त उस चट्टान के पास पहुंचा जब आप सल्ल० वहां से रवाना हो रहे थे । उसने आप सल्ल० को देख लिया और चाहा कि घोड़ा दौड़ाकर नज़दीक पहुंच जाए लेकिन घोड़े ने ठोकर खाई और वह गिर पड़ा । तरकश से तीर निकालकर अरब के दस्तूर के मुताबिक़ फ़ाल निकाली - जवाब "नही" में आया मगर वह न माना । दोबारा घोड़ा दौड़ाया, अब घोड़े के पांव घुटनों तक ज़मीन में धंस गए जब वह डरा और समझा कि यह माजरा कुछ और ही है हज़रत सल्ल० से से अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल ! अमन बख्शा जाए । हज़ूर सल्ल० ने उसकी दरख्वास्त क़बूल फ़रमायी ।

मदीना

मदीना, अरबी में शहर को कहते हैं। हुज़ूर सल्ल० के मदीना तशरीफ़ लाने के बाद मदीने का नाम मदीनतुन्नबी (नबी का शहर) मशहूर हुआ और उस वक़्त से उस का नाम मदीना हो गया।

मदीने के लोगों को आप सल्ल० के आने की ख़बर हो चुकी थी और सब इन्तिज़ार करने की हालत में थे। बच्चे तक खुशी और जोश में गली-कूचों में कहते फिरते थे कि हमारे पैग़म्बर आ रहे हैं। छोटी छोटी लड़कियां छतों पर चढ़कर आप सल्ल० के आने की खुशी में गीत गाती थीं। नौजवान हथियार लगाकर शहर के बाहर निकल जाते थे और पहरों आपके आने का इन्तिज़ार करते थे। एक दिन वह इन्तिज़ार करके वापस जा ही रहे थे कि एक यहूदी ने एक छोटा या क़ाफ़िला आते देख कर पुकारा, ऐ लोगो! तुम जिसका इन्तिज़ार करते थे, वह आ गया। इस आवाज़ को सुनते ही सारा शहर तकबीर के नारों से गूंज उठा और मुसलमान हथियार लगाकर बाहर निकल आए। यह रबीउ़ल अव्वल की आठवीं तारीख़ और नबूवत का तेहरवां साल था।

पहली मस्जिद

मदीने से तीन मील बाहर कुछ उंचाई पर पहले से एक छोटी सी आबादी थी जिस को आलिया और क़ुबा कहते हैं। यहां मुसलमानों के कई इज़्ज़तदार घराने थे। कुलसूम बिन हदम रज़ि० उनके सरदार थे। आप सल्ल० उनके महमान हुए और चौदह दिन उनके महमान रहे। हज़रत अली रज़ि० भी पहुंच चुके थे और वह भी यहीं ठहरे थे। यहां ठहरने के ज़माने में हुज़ूर सल्ल० ने खुद अपने हाथ से एक छोटी सी मस्जिद की बुनियाद डाली थी जिस का नाम क़ुबा की मस्जिद है।

पहला जुमा

चौदह दिन के बाद आप सल्ल० मदीने की तरफ़ चले। यह जुमे का दिन था, रास्ते में बनी सालिम के मुहल्ले में नमाज़ का वक्त आ गया। यह आंहज़रत सल्ल० की इमामत में जुमे की पहली नमाज़ थी। नमाज़ से पहले खुतबा पढ़ा। यह खुतबा ऐसा था कि जिसने सुना, असर में डूब गया।

मदीने में दाखिला

नमाज़ के बाद आंहज़रत सल्ल० आगे बढ़े। आप सल्ल० के ननिहाली रिश्तेदार बनु नज्ज़ार हथियार लगाकर आप को लेने आए। कुबा से मदीने तक हर कबीले के इज़्ज़तदार लोग दोनों तरफ़ खड़े थे। आप सल्ल० जिस कबीले के आगे से गुज़रते वह अर्ज़ करता कि ऐ खुदा के रसूल सल्ल०! यह घर, यह माल, यह जान हाजिर है। आप शुक्रिया अदा करते और भलाई की दुआ देते। शहर करीब आया तो मुसलमानों के जोश का यह हाल था कि औरतें छतों पर निकल आयीं और गाने लगीं—

> **तर्जुमा**—चौदहवीं का चांद हमारे सामने निकल आया, वदाअ की घाटीयों से। हम पर खुदा का शुक्र वाजिब है जब तक दुआ मांगने वाले दुआ मांगें।

बनु नज्ज़ार की लड़कियां जिनको हुज़ूर सल्ल० के ननिहाली रिश्तेदार होने की शान मिली हुई थी, खुशी में दफ़ बजा-बजा कर यह शेर गाती थीं।

> **तर्जुमा**—हम नज्ज़ार के खानदान की लड़कियां हैं। ऐ मुहम्मद। हमारे पास बसेंगे।

जहां अब मस्जिद नबवी है यहां अबु अय्यूब रज़ि० का घर था जो बुखार के खानदान से थे। आप सल्ल० ऊंटनी पर सवार थे। हर शख्स चाहता था कि इस को आप सल्ल० के महमान बनाने की इज्ज़त हासिल हो

और इसलिए वह ऊंटनी को अपने घर के पास रोकना चाहता था । आप सल्ल० ने फ़रमाया इसको छोड़ दो जहां खुदा का हुक्म होगा वहीं यह जाकर ठहरेगी । वह जब अबु अय्यूब रज़ि० के घर के पास पहुंची तो बैठ गयी । अबु अय्यूब रज़ि० की खुशी का क्या कहना निहाल हो गये । हजूर सल्ल० को अपने घर महमान उतारा और हर तरह के आराम का सामान पहुंचाया । हुज़ूर सल्ल० सात महीने तक उनहीं के घर रहे ।

अंसार

अंसार अरबी शब्द है, नासिर की जमा है । इसका मतलब है मददगार। मदीने के मुसलमानों ने इस्लाम की और मक्के की और मक्के के परेशान हाल मुसलमानों की जिस तरह खातिर की इस का लिहाज़ करके खुदा ने मदीने के मुसलमानों का नाम अंसार यानी मददगार रखा और इस वक्त से वह अंसार कहलाने लगे और जो अपने अपने घर छोड़कर मदीने आ गए थे उनको मुहाजिर (घर छोड़ने वाला) कहते हैं ।

अंसार ने इन मुहाजिरों को अपने अपने घरों पर उतारा । इनको अपनी जायदाद में से हिस्सा दिया और अपने कारोबार में शरीक किया । अब तेरह साल के बाद यह पहला मौका था कि मुसलमानों ने चैन की सांस ली ।

मस्जिद नबवी और हुजरों की तामीर

मदीने में मुसलमानों को सब से पहले खुदा का घर यानी मस्जिद बनाना था। आप सल्ल० जहां ठहरे थे इसी से मिली हुई बुखार के क़बीले के दो यतीम बच्चों की एक परती ज़मीन थी। आप सल्ल० ने इसको मस्जिद के लिये पसंद किया। दोनों यतीमों ने यह ज़मीन अपनी तरफ़ से मुफ्त देनी चाही मगर आप सल्ल० ने यह पसंद नहीं किया। एक अंसारी ने क़ीमत अदा कर दी। ज़मीन बराबर करके मस्जिद बननी शुरु हुई। इस मस्जिद के बनानक वाले मज़दूर कौन थे खुद आप सल्ल० और आपके साथी रज़ि०। सब ने मिलकर एक कच्ची सी दीवार उठाकर उपर खजूर के तने और पत्तों की छत बनाई। यही पहली मस्जिद नबवी थी।

मस्जिद के क़रीब ही अपने लिये इसी क़िस्म की चंद कोठरियां बनवाई। जिन को हुजरा कहते हैं। जिन में आप सल्ल० और आपके घर के लोग (अहले बैत रज़ि०) रहने लगे। आप सल्ल० की साहबज़ादी हज़रत फ़ातिमा रज़ि० और आप की बीवियां हज़रत आयशा रज़ि० और हज़रत सौदा रज़ि० मक्का से आकर यहीं उतरीं।

सुफ्फ़ा वाले

सुफ्फ़ा अरबी में चबूतरे को कहते हैं। मस्जिद नबवी के सहन में एक चबूतरा बनाया गया था। यह इन मुसलमानों का ठिकाना था जिनका कहीं ठिकाना न था। वह दिन को जंगल से लकड़ियां लाकर बेचते थे और उसी से अपना गुज़ारा करते थे और रात को एक उस्ताद से लिखना, पढ़ना और दीन की बातें सीखते थे। यह हज़ूर सल्ल० के पास अक्सर रहते और आप

सल्ल० के इरशादात को सुनकर याद रखते थे । कहीं किसी इस्लाम फैलाने और सिखाने वाले की ज़रुरत होती तो यही भेजे जाते ।

नमाज़ की तकमील और क़िबला

मक्के में चूंकि अम्न और चैन नहीं था न खुले बंदों नमाज़ पढ़ने की इजाज़त थी इसलिए फ़र्ज नमाज़ दो ही रकआत थी । मदीने में आकर जब मुसलमानों ने चैन की सांस ली और मज़हब की आज़ादी मिली तो जुहर, असर, इशा, की चार चार रकाअतें पूरी की गयीं । मग़रिब की तीन रहीं और फजिर में दो, क्योंकि सुबह के वक़्त लम्बी क़िरात यानी रकआतों के बदले ज़्यादा कुरान पढ़ने का हुक्म था ।

जमाअत के साथ नमाज़ पढने के लिये ज़रुरत इस की थी कि मुसलमानों को एक वक़्त पर बुलाने के लिये एक निशानी तै की जाए । हिन्दुओं में इस के लिये संख, इसाईयों में घन्टा और यहूदीयों में क़िरना का रिवाज था । इस्लाम में खेल तमाशों की इन बेमानी आवाज़ों के बजाए इनसान की फितरी आवाज़ को पसंद किया गया कि कोई खड़ा होकर पुकारे और सारे मुसलमान इस फ़रमाने खुदावंदी आवाज़ को सुनकर मस्जिद का रुख करें ।

जुमे की नमाज़ भी मक्के में नहीं हो सकती थी । मदीने आकर इस फर्ज के अदा करने का मौक़ा भी मिला । चुनांचे सबसे पहले हज़रत मसअब बिन अमीर रज़ि० ने जो हजूर सल्ल० से पहले ही इमाम बनाकर मदीने भेजे गए थे मदीने आकर जुमे की नमाज़ अदा की फिर जब आप सल्ल० आए और क़बा में कुछ दिन ठहरकर मदीने जाने लगे तो जुमे का दिन पड़ा । आप सल्ल० ने इस मे खुत्बा दिया और मुसलमानों को जुमे की नमाज़ पढ़ाई ।

क़िबला

नमाज़ में सबको किसी एक दिशा की तरफ़ मुंह करके खड़ा होना चाहिये। इसी दिशा को क़िबला कहते हैं।

यहूदी बेतुलमुक़द्दस की तरफ़ मुंह किया करते थे ये हज़रत दाऊद अलै० और हज़रत सुलेमान अलै० की बनवाई हुई मस्जिद थी और अरब वालों का क़िबला काबा था जो हज़रत इब्राहीम अलै० की बनवाई हुई मस्जिद थी। हुज़ूर सल्ल० जब तक मक्के में रहे तो काबे के सामने इस तरह खड़े होते थे कि बेतुलमुक़द्दस भी सामने पड़ जाता था लेकिन जब मदीने आए तो हालत बदल गई मदीने के एक तरफ़ काबा था तो दूसरी तरफ़ बेतुलमुक़द्दस इसलिये इन दोनों में से किसी एक को ही क़िबला बनाया जा सकता था। पहले तो आप सल्ल० यहूदियों की पैरवी में बेतुलमुक़द्दस की तरफ़ ही मुंह करके नमाज़ पढ़ते रहे मगर सोलह महीने बाद खुदा का हुक्म आया कि हज़रत इब्राहीम अलै० की मस्जिद यानी काबे की तरफ़ मुंह करो क्योंकि वही खुदा का सबसे पहला घर है। इस वक़्त से काबा मुसलमानों का क़िबला क़रार पाया।

भाई-चारा

मुसलमान यूं भी हर घराने से एक-एक दो-दो करके मुसलमान हुए थे और फिर इनको अपना सब घर बार छोड़कर निकलना पड़ा था। मदीने आए तो यह मुसलमान बहुत परेशान थे। हज़ूर सल्ल० ने यह किया कि एक-एक बेघर मुसलमान को एक-एक मुसलमान का भाई बना दिया। फिर यह ऐसे भाई बने कि खून के रिश्ते से बढ़कर हुए। हर एक ने अपने भाई को अपने घर या अपनी ज़मीन में जगह दी। अपने माल और दौलत में से हिस्सा दिया, अपने खेत बांट दिये, अपने कारोबार में शामिल किया।

यहूदीययों का क़ौल व क़रार

हुज़ूर सल्ल० के मदीने आने से पहले मदीने के दोनों क़बीले औस और ख़िज़रज लड़ लड़ कर थक गए थे और चाहते थे कि अपने में से एक रईस को जिसका नाम अब्दुल्लाह बिन उबि बिन सलूल था, अपना बादशाह बना लें। मदीने में एक दूसरा गिरोह यहूदियों का था। यह हिजाज़ के सोदागर और महाजन थे और यहां से लेकर शाम की सरहद तक इन की तिजारती कोठियां और गढ़ियां थीं और अपने रुपये के ज़ोर से मदीने के हाकिम बने बैठे थे। अपने मतलब के हिसाब से वह कभी औस का और कभी ख़िज़रज का साथ देते थे। आप सल्ल० जब मदीने आए तो शुरु शुरु में इन्हों ने शायद यह समझ कर कि यह एक ऐसा मज़हब लेकर आए हैं जो हमारे मज़हब के क़रीब क़रीब है, आप की मुख़ालफ़त नहीं की। आप सल्ल० ने शहर की बदअमनी देख कर यह मुनासिब समझा कि मुसलमानों और यहूदियों के दरमियान एक ऐसा समझौता हो जाए कि दोनों फ़िरक़े शहर में आज़ादी से रह सकें। हर एक का मज़हबी हक़ महफ़ूज़ हो और सारे शहर के रहने वाले चाहे वह मुसलमान हों या यहूदी, बाहर से हमला करने वालों के मुक़ाबले एक हों। चुनांचे आप सल्ल० ने यहूदियों से बात चीत करके इस तरह के एक मआहदे पर इन को राज़ी कर लिया और इन्होंने इसका पक्का वायदा किया। लेकिन कुछ ही दिनों बाद इनको नज़र आया कि इस्लाम की ताक़त शहर में रोज़-ब-रोज़ बढ़ती जाती है। और इनका पहला ज़ोर टूट रहा है। यह देखकर वह दिल ही दिल में जलने लगे।

अब्दुल्लाह बिन उबि बिन सलूल को ख्याल था कि अगर मुहम्मद सल्ल० मदीने न आते तो मदीने की बादशाहत इसी को मिलती। इसलिए वह और इस के साथी मुंह पर तो मुसलमानों के ख़िलाफ़ कुछ बोल नहीं सकते थे लेकिन दिल में वो भी मुसलमानों के मुख़ालिफ़ और यहूदीयों के शरीक थे। इन्हीं को मुनाफ़िक़ कहते हैं।

मक्के वालों की शरारतें और साज़िशें

जो मुसलमान मक्का छोड़कर मदीने चले आए थे । मक्के वालों ने इनके घरों और जायदादों पर क़ब्ज़ा कर लिया और सब से बड़ी बात यह कि काबा में आना और हज करना इन के लिए बंद कर दिया । कोई जाता तो छुपकर और सर को हथेली पर रखकर जाता और जो ग़रीब मुसलमान या छोटे बच्चे या औरतें मदीने न जा सकीं इन पहरा बिठा दिया कि वह जाने न पाऐं । इतने पर ही इन्हों ने बस नहीं किया बलकि यह देखकर कि इनके दुश्मन यानी मुसलमान मदीने में ज़ोर पकड़ रहे हैं इन्हो ने यहूदीयों और मदीने के मुनाफ़िक़ों से सलाम व पयाम शुरु किया और इनको कहला भेजा कि तुम ने हमारे भागे हुए मुजरिमों को अपने घरों में रखा है बेहतर यह है कि तुम इनको निकाल दो वरना हम तुम्हारे शहर पर हम्ला कर देंगे ।

मुसलमानों के तीन दुश्मन

मक्के में मुसलमानों का एक ही दुश्मन था यानी मक्के के काफ़िर। मदीने आकर इनके तीन दुश्मन हो गए । मक्के के काफ़िर, मदीने के मुनाफ़िक़, और हिजाज़ के यहूद । मक्के के काफ़िर तलवार के धनी थे इसलिए वह तलवार से फ़ेसला चाहते थे मदीने के मुनाफ़िक़ अपनी चालों और साज़िशों से नुक्सान पहुचाते रहते थे और हिजाज़ के यहूद जो अरब के सरमाए वाले थे पूरे हिजाज़ में अपने सरमाए और दौलत के ज़ोर से उधम मचाए हुए थे । अरब की सारी दोलत इनके क़ब्ज़े में थी । अरब मज़दूरों की काश्त और खेती की पैदावार के मालिक बने बेठे थे । मुल्क का सारा कारोबार और ब्योपार इन के हाथों में था और वह अपने सूद दर सूद और दूसरे

महाजनी हथकन्डों से अरब के बेताज बादशाह और मुल्क की भलाई की हर कोशिश के मुख़ालिफ़ थे ।

इस्लाम को इन तीनो ताकतों का एक साथ मुक़ाबला करना पड़ा और इनमें से हर एक के हटाने के लिए अलग अलग तदबीर करनी पड़ी ।

मुनाफ़िक़ों से बरताओ

मुनाफ़िक़ चूंकि ज़बान से मुसलमान होने का दावा करते थे इसलिए इनकी खुली मुखाफ़ित नहीं की गई और न सज़ा देकर इनको और ज़्यादा दुश्मन बनाया गया बलकि आप सल्ल० ने हमेशा इनके साथ नेक. का बरताओ किया । इन के कुसूरों पर तरह देते थे और कोई पूछ गछ नहीं करते थे । मक़्सद यह था कि मुसलमानों के नेक बरताओ से वह आखिरकार बदलेंगे और और पक्के मुसलमान हो जाऐंगे । एक दो बार किसी सहाबी ने आप सल्ल० की खिदमत में यह अर्ज़ भी किया कि ऐ रसूलुल्लाह सल्ल० मुझे इजाज़त हो तो कुछ मुनाफ़िक़ों की गरदनें उड़ा दूं आप सल्ल०ने फ़रमाया नहीं ! क्या तुम लोगों को यह कहने का मौक़ा देना चाहते हो कि मुहम्मद (सल्ल०) अपने लोगों को आप ही मरवा देते हैं । फ़रमाया जिस ने ज़बान से *ला इलाहा इलल्लाहु* और *मुहम्मदुररसूलुल्लाह* पढ़ लिया इस का शुमार मुसलमानों में है और इसके अंदर का मामला अल्लाह के हाथ में है ।

मुनाफ़िक़ों का सरदार अब्दुल्लाह बिन उबी जब मरा तो आप सल्ल० ने इसके नेक दिल बेटे की दरख्वासत पर अपने बदन का मुबारक कुरता इसको पहना दिया । यही नहीं बलकि कुछ मुसलमानों के कहने सुनने को भी नहीं माना और इसके जनाज़े की नमाज़ भी पढ़ाई ।

इन्हीं दिनो एक बार आप सल्ल० बनु हारिस के मुहल्ले से गधे पर सवार होकर गुजर रहे थे, रास्ते में एक जगह कुछ मुसलमान, कुछ यहूद और कुछ मुनाफ़िक़ बेठे थे इन का सरदार अब्दुल्लाह बिन अबी भी था । गधे के

चलने से कुछ गर्द उड़ी तो अब्दूल्लाह ने हिकारत से कहा कि गर्द न उड़ाओ। आप सल्ल० ने कुछ ख्याल नहीं किया और मजमे को सलाम किया और इनको अल्लाह के कुछ एहकाम सुनाए। इस पर अब्दुल्लाह ने फिर कहा, ऐ साहब ! मुझे यह पसंद नही, अगर तुम्हारी बात सच भी हो तो हमारी मजलिस में आकर सुनाया न करो, जो तुम्हारे पास जाए उसी को सुनाया करो। मुसलमानों को इसके इस बरताओ से बड़ा गुस्सा आया मगर आप सल्ल० ने इनको समझाकर ठंडा किया और आगे बढ़ गए।

लेकिन फिर भी चूंकि वह घर का भेदी था इसलिए मुसलमानों को इस से चोकन्ना रहने की ताकीद की गई, इस से राज़ की बात छुपाई जाती और मुसलमानों को इस पर भरोसा रखने से बाज़ रखा और इस की दोस्ती से रोका गया। यह गिरोह इस्लाम के ग़लबे के बाद अपने आप फ़ना हो गया।

मक्के के काफ़िरों की रोक थाम

मक्के के काफ़िर तलवार के धनी थे इसलिए इनकी रोकथाम के लिए दोड़ धूप की ज़रुरत पड़ी। मक्के वालों ने कमज़ोर मुसलमानों को मदीने आने से रोक कर गोया इनको अपनी क़ैद में ले लिया था। बाहर से मुसलमानों को मक्का आने नहीं देते थे। हद यह कि काबे का तवाफ़ और हज़ जो सारे अरब के लिए खुला हुआ था। मुलसमानों के लिए वह भी बंद था। आप सल्ल० ने मक्के वालों को इस बरताओ के बदलने पर मजबूर करने के लिए यह किया कि इनके ब्योपारयों को जो शाम आते जाते थे कभी दो-दो, कभी चार-चार और कभी कभी दस-दस मुसलमानों को भेजकर डराने लगे ताकि वह अपने ब्योपार की खातिर मुसलमानों से सुलह कर लें और मुसलमानों पर से अपनी पाबंदियां हटा लें। मगर इन्हों ने ऐसा नहीं किया और अपनी ज़िद

पर अड़े रहे और मुसलमान भी इनके ब्योपार के रास्ते को रोकने के लिए अड़े रहे। मदीना, शाम और हिजाज़ के बीच में पड़ता था, इसलिए मक्का वाले अपना रास्ता बदल भी नहीं सकते थे।

इसी के साथ आप सल्ल० ने यह किया कि मदीने के आस पास में जो अरब क़बीले ऐसे थे जिनके बिगड़ जाने या मक्के वालों का साथ देने से मदीने का अम्न व अमान खाक में मिल जाता। इन के पास जा जा कर सुलह का मुआहदा करने लगे। इस तरह पहले जहीना के क़बीले से फिर बनु ज़मराह से सुलह और दोस्ती के मुआहदे हुए।

मक्का के काफ़िर यह देखकर जलने लगे और समझे कि इस तरह मुहम्मद सल्ल० का जोर और बढ़ेगा जिसका तोड़ ज़रूरी है। चुनांचे मक्का के एक रईस कुर्ज़ बिन जाबर फ़हरी ने मदीने की चराहगाह पर छापा मारा और आप सल्ल० के ऊंट लूट कर ले गए। मुसलमानों ने पीछा किया मगर वह बचकर निकल गया।

इस हादसे के तीसरे महीने आप सल्ल०दो सो मुहाजिरों को ले कर बनी मुलहिज के कबीले में पहुंचे और इस से भी दोस्ती का मुआहदा किया।

कुछ दिनों के बाद यह हुआ कि रजब तीन हिजरी में आप सल्ल० ने बाराह आदमियों को नख़ला की वादी भेजा और इनको एक बंद ख़त देकर फ़रमाया कि इसको दो दिन के बाद खोलना। दो दिन के बाद ख़त खोला तो इस में लिखा था कि नख़ला में ठहर कर कुरैश के इरादों का पता लगाओ और ख़बर दो। इत्तिफ़ाक़न यह कि मक्का के कुछ लोग जो शाम से तिजारत का माल लेकर आ रहे थे सामने से गुज़रे मुसलमानों के इस दस्ते ने रसूल सल्ल० की इजाज़त के बग़ैर इन पर हम्ला कर दिया। इनमें से एक आदमी उमरो बिन हज़रमी मारा गया और दो पकड़ लिए गए और क़ाफ़िले का माल लूट लिया गया। आप सल्ल० को जब इसकी ख़बर मिली तो नाराज़गी ज़ाहिर

की और फ़रमाया कि मैं ने तुम से यह तो नहीं कहा था, तुम ने तो लड़ाई की, आग लगा दी और इसी के साथ अरब के क़ायदे के मुताबिक़ इस दसते ने जो माल लूटा था इसी को लौटा दिया। मक्के का जो आदमी मारा गया था वह कुरैश के एक बड़े सरदार का साथी था और जो दो आदमी पकड़े गए थे वह भी कुरैश के एक दूसरे सरदार के पोते थे इस हादसे ने मक्के वालों के दिल में बदला लेने का और जोश पेदा दिया।

बदर की लड़ाई

बदला लेने के लिए एक बड़ी लड़ाई ज़रुरी थी और लड़ाई के लिए सरमाया भी ज़रुरी था। मक्के वालो ने अपना सारा सरमाया देकर शाम को भेजा पहले हादसे के दो ढाई महीनो के बाद सन 2 हिजरी में यह क़ाफ़िला लौट कर आ रहा था। कि मक्के वालों को ख़बर पहुंची कि मुसलमान इस पर छापा मारना चाहते हैं। यह ख़बर पाते ही कुरैश के बड़े बड़े सरदार एक हज़ार सिपाहियों को लेकर मक्के से निकले। आप सल्ल० को यह ख़बर मिली तो आप सल्ल० भी कुछ मुसलमानों को साथ लेकर मदीने से चल पड़े। क़ाफ़िला तो बचकर मक्का पहुंच चुका था मगर मक्का वालो ने कहा कि हम बदर पहुंचकर खुशी मनायेंगे। और नाच रंग और शराब व कबाब के जलसे करेंगें। बदर एक गांव का नाम था जहां साल के साल यूं भी मेला लगता था। मदीने से एक मील निकलकर आप सल्ल० ने पड़ाव किया। मदीने में मुनाफ़िक़ों और यहूदियों का डर था। इसलिए अबु लुबाबा रज़ि० को मदीने का हाकिम बनाकर मदीने लौटा दिया और दो आदमियों को आगे भेजा कि कुरैश का पता लगाऐं। जब बदर के क़रीब पहुंचे तो ख़बर पहुंचाने वालों ने ख़बर दी कि कुरैश वादी के दूसरे सिरे तक आ गए हैं। यह सुनकर आप सल्ल० यहीं रुक गए।

रात भर दोनों लश्कर आमने सामने पड़े रहे। मुसलमानों ने भी कमर

खोल खोल कर आराम किया मगर खुदा का रसूल रात भर खड़ा नमाज़ और दुआओं में लगा रहा । सुबह होने को हुई तो मुसलमानों को नमाज़ के लिये आवाज़ दी । नमाज़ के बाद जहाद पर वआज़ फ़रमाया । यह मुसलमानों का पहला लशकर था और काफ़िरों से इनकी यह पहली लड़ाई थी ।

एक नेक दिल कुरैशी ने चाहा कि यह लड़ाई टल जाए और इब्न हज़रमी का खून बहा इस के वारिस को दे दिया जाए । उत्बा कुरैश का सरदार और हज़रमी का हलीफ़ इस के लिए तैयार था मगर अबुजहल ने इस तजवीज़ को कामियाब न होने दिया ।

सुबह हुई तो दोनों फोजें मैदान में आ खड़ी हुई । एक तरफ़ एक हजार का दल था जो लोहे में ग़र्क था । और दूसरी तरफ़ 313 मुसलमान थे जिन के पास पूरे हथियार भी न थे । लेकिन हक़ का ज़ोर इन के बाज़ुओं में था और दीन का जोश इनके सीनों में उमड़ रहा था । अल्लाह के रसूल सल्ल० लड़ाई के मेदान से ज़रा हटकर एक छप्पर के साए में अल्लाह के हुज़ूर में फतह की दुआ मांग रहे थे और अर्ज़ कर रहे थे कि खुदावंद!अगर आज यह तेरे मुठठी भर पूजने वाले मिट गए तो फिर ज़मीन पर तेरी परसतिश न होगी।

लड़ाई इस तरह शुरु हुई कि पहले इब्न हज़रमी का भाई आमिर जिसको अपने भाई के खून का दावा था आगे बढ़ा । एक गुलाम मुसलमान इसके मुक़ाबले को निकला और वह मारा गया । इसके बाद उत्बा जो कुरैश के लश्कर का सरदार था बड़ी शान से निकला । इसके साथ वलीद और शेबा भी आगे बढे । इधर मुसलमानों की तरफ़ से भी मदीने के तीन अंसारी मुक़ाबले को निकले । उत्बा ने इनका नाम व नसब पूछा और जब मालूम हुआ कि यह मदीने वाले हैं तो पुकारा "मुहम्मद (सल्ल०) यह लोग हमारे जोड़ के नहीं"। हुज़ूर सल्ल० के फ़रमाने से यह अंसारी हट गए और अब हज़रत हम्ज़ा रज़ि०, हज़रत अली रज़ि० और हज़रत मुरतज़ा रज़ि० मैदान में आए ।

उत्बा हज़रत हम्ज़ा रज़ि० से और वलीद हज़रत अली रज़ि० से मुक़ाबिल हुए और मारे गए। लेकिन शेबा ने हज़रत उबैदा रज़ि० को ज़ख्मी कर दिया। यह देख कर अली रज़ि० आगे बढ़े और शेबा का काम तमाम कर दिया। हज़रत ज़ुबैर रज़ि० ने सआद बिन अलआस का मुक़ाबला किया और ऐसी तान कर बरछी मारी कि कि वह धम से ज़मीन पर आ रहा। अब आम हम्ला शुरु हो गया। मदीने में अबुजहल की शरारत और मुसलमानों से दुश्मनी का चरचा आम था। अंसार के दो नोजवान इसकी ताक में निकले और लोगों से पता पूछ कर बाज़ की तरह इस पर ऐसे झपटे कि दम ही दम में वह ख़ाक और खून में लुथड़ा पड़ा था। एक दूसरे मुसलमान ने जाकर इस का सर काट लिया।

उत्बा और अबुजहल का मारा जाना था कि क़ुरैश हारकर भागने लगे और मुसलमानों ने भी इनको पकड़ना शुरु किया। क़ुरैश के सत्तर आदमी जो मक्के के बड़े बड़े रईस थे मारे गए और इतने ही आदमी गिरफ़्तार हुए और मुसलमानों में से सिर्फ़ चौदह मुसलमानों ने शहादत पाई।

खुदा की अजीब कुदरत है कि 313 आदमियों ने जो हथियारों से पूरी तरह सजे न थे एक हज़ार की फ़ोज को हरा दिया। यह सच और झूट और अंधेरे\और उजाले की लड़ाई थी। सच की जीत हुई और झूट की हार हुई, अंधेरा छट गया और उजाला छा गया।

दुश्मनों से बरताओ

बदर के क़ेदियों के साथ बड़ा अच्छा बरताओ किया। मुसलमान इनको खाना खिलाते थे और खुद खजूर खा लेते थे। जिन के पास कपड़े नहीं थे इनको कपड़े दिए। क़ेदियों में एक आदमी सहील बिन उमर पकड़ कर आया था। यह बड़ा ज़ोर आवर मुक़र्रर था। यह आम मजमों में मुसलमानों के खिलाफ़ तक़रीरें करता था और लोगों को उभारता था। कुछ सहाबियों ने

कहा, या रसूल्लुल्लाह सल्ल० ! इसके दांत उखड़वा लीजिये कि फिर अच्छी तरह बोल न सके। आप सल्ल० ने इस राय को नापसंद किया और फ़रमाया अगर मैं इसके जिस्म का कोई हिस्सा बिगाड़ दूंगा तो गो नबी हू मगर खुदा इस के बदले में मेरे जिस्म का भी कोई हिस्सा बिगाड़ देगा। कुछ पुरजोश सहाबी रजि० चाहते थे कि इन कैदियों को क़त्ल कर दिया जाए मगर आप सल्ल० ने इन की बात भी न मानी और यह तै किया कि इनमें जो अमीर हैं वह फ़िदया दे कर छूट जाऐं और जो गरीब हों लेकिन लिखना पढ़ना जानते हों वह दस मुसलमान बच्चो को लिखना पढना सिखा दें और जो यह भी नहीं जानता वह खुदा की राह में आज़ाद कर दिया गया।

बदर की जीत ने मुसलमानों की किस्मत का पांसा पलट दिया अब वह सिर्फ एक मज़हब और एक इलाही निज़ाम के दाई ही न थे बल्कि एक उठती हुई सियासी ताकत थे जिन का मक्सद न सिर्फ़ अरब की सेंकड़ों छोटी छोटी बेनिज़ाम रियासतों की जगह एक बाक़ायदा और मज़बूत हुकूमत खड़ी करना बल्कि केसर व कसरा की जालिमाना को मिटा कर दुनिया में अदल व इन्साफ़ और बराबरी की सलतनत क़ायम करना था।

कुरैश का बड़ा ज़ोर टूट गया। मक्के के अक्सर रईस मारे गए। इनकी जगह अब सब का रईस अबु सुफ़ियान बना। इस जीत ने मुनाफ़िको के दिल भी धड़का दिए। इन को पता चल गया कि अब तराज़ू का कौन सा पलड़ा भारी हो रहा है। इधर यहूद भी होशियार हो गए और इनको यह डर होने लगा कि अगर जल्द ही इस नई ताक़त का सर कुचल न दिया गया तो इन का कहीं भी ठिकाना नही।

बदर का इन्तिक़ाम

बदर की लड़ाई तो एक हज़रमी के खून के लिये लड़ी की गई थी। अब कुरैश को अपने सत्तर (70) साथियों के खून का बदला लेने का ख्याल हुआ। बदर में जो मारे गए थे उनका मातम हो रहा था, मरसिये पढ़े जाते थे, साज़िशें की जाती थी कि मुसलमानों से इसका बदला किस तरह लिया जाए। अबु सुफ़ियान ने जो अब मक्के का रईस था, क़सम खाई कि जब तक मुसलमानों से वह इसका बदला न ले लेगा दुनिया का लुत्फ़ नहीं उठाये गा। बदर के तीन महीनों के बाद उसने अपनी क़सम इस तरह पूरी की कि दो सौ सत्तर (270) आदमियों को लेकर मदीने के आस पास गया और यहूद सरदारों से बात की। यहूद ने इसको मदीने पर हमले के भेद बताए। सुबह को वापस होते वक़्त एक मुसलमान को कत्ल किया और मुसलमानों के चंद घर और घास के ढेरों में आग लगा दी। मुसलमानों को खबर मिली तो वह दौड़े मगर वह निकल चुका था। इस लड़ाई को ग़ज़वा-ए-सवीक़ (सत्तु वाली लड़ाई) कहते हैं। क्योंकि अबु सुफ़ियान के साथियों का तोशा सवीक़ यानी सत्तु था। जिस को वह घबराहट मे फेंकते गए थे।

आं हज़रत सल्ल० को उधर से इतमिनान हुआ तो एक घरेलू काम के करने का ख्याल आया। यह हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ज़ुहरा के निकाह की तक़रीब थी और वह भी रसम व रिवाज की एक बहुत बड़ी इसलाह थी।

हज़रत फ़ातिमा रज़ि० जुहरा का निकाह

ज़ी अलहिज ६ हिजरी

आप हजरत सल्ल० की औलाद में यह सबसे चहेती और साहबज़ादियों मे सब से छोटी थीं। आप सल्ल० को अपनी सब औलादों से ज्यादा इनसे मुहब्बत थी और वह भी अपने बाप सल्ल० पर हर वक्त फ़िदा रहती थीं। आप सल्ल० को ज़रा सी भी तकलीफ़ होती तो वह बेचैन हो जाती थीं। नेकी और पाकीजगी में अपनी मिसाल नहीं रखती थीं। अब वह जवान हो चुकी थीं। अठ्ठारह (१८) साल की उम्र हो चुकी थी। शादी के पैगाम आने लगे थे मगर आप सल्ल० के दिल में कुछ और ही बात थी। यह ख्याल था कि इसके लिए ऐसा ही जोड़ का लड़का भी मिले। यह अली रज़ि० थे जो आप सल्ल० के साए ही में पले थे। हजरत अली रज़ि० ने अपनी दरख्वास्त पेश की तो वह गोया पेश होने से पहले ही कुबूल हो चुकी थी। हज़रत ने बीबी फ़ातिमा रज़ि० से दरयाफ़्त किया तो वह चुप रहीं। यह गोया रज़मंदी का इज़हार था। फिर हज़रत अली रज़ि० से पूछा कि तुम्हारे पास महर अदा करने को क्या है ? बोले कुछ नही – फ़रमाया, वह जर्रा क्या हुई जो बदर में हाथ आई थी ? अर्ज़ की, वह तो मौजूद है। आप सल्ल० ने फ़रमाया, वह बस है।

इस किताब के पढ़ने वालों को ख़्याल होगा कि यह जर्रा बड़ी कीमती चीज़ होगी, लेकिन यह सुनकर उनको ताज्जुब होगा कि यह सिर्फ सवा सौ रुपये की थी। ज़र्रा के सिवा बदं के उस बहादुर की जो मिल्कियत थी वह यह थी भेड़ की खाल और एक पुरानी यमनी चादर, यही वह पूंजी थी जो दुल्हा ने दुल्हन को भेंट की। एक सहाबी ने अपना एक खाली मकान दुल्हा

दुल्हन के रहने के लिए पेश किया जिसे आप सल्ल० ने कुबूल फ़रमाया।

बुजुर्ग बाप सल्ल० ने अपनी बेटी को जो दहैज दिया वह बान की एक चारपाई, चमड़े का एक गद्दा जिसमें खजूर के पत्ते भरे थे, एक छागल, एक मशक, दो चक्कियां और दो मिट्टी के घड़े थे।

दुल्हा दुल्हन जब नए घर में जा लिये तो हुजूर सल्ल० देखने तशरीफ़ ले गए। पहले दरवाज़े पर खड़े होकर इजाज़त मांगी फिर अंदर गए। एक बरतन में पानी मंगवाया। दोनों हाथ उसमें डाले और हाथ निकालकर दोनों पर वही पानी छिड़का और बेटी से फ़रमाया, बेटी! मैं ने तुम्हारा निकाह खानदान के सबसे से बहतर शख्स से किया है।

अल्लाहु अकबर! क्या सादगी और बेतकल्लुफ़ी की तक्रीब थी। मुसलमानों की खुशी की तक्रीब के लिये इस से बहतर कोई नमूना हो सकता है? यह गोया हुजूर सल्ल० ने मुसलमानों के सामने अपनी और अपनी औलाद की ज़िंदगी की मिसाल पेश की है।

रोज़ा

रमज़ान – नमाज़ के बाद इस साल रोज़े की दूसरी इबादत फर्ज़ हुई और इस के लिये रमज़ान का महीना चुना गया, क्योंकि यह वही पाक महीना था जिसकी एक रात में खुदा का पैग़ाम उस ख़ास बंदे (सल्ल०) पर हिरा के ग़ार में उतरा था। इस यादगार में यह महीना इज़्ज़त व पाकी का महीना मुक़र्रर हुआ और उस में इसी तरह गुज़ारने का हुक्म हुआ, जिस तरह आप सल्ल० ने इन दिनों हिरा में दिन गुज़ारे थे यानी दिन को खाने से परहेज़ और रात को खुदा की इबादत।

ईद – हर शरीअत ने अपने लिये त्यौहार का कोई दिन अपनी खुशी और मसर्रत के लिये मुक़र्रर किया है। इस्लाम ने इस के लिये रमज़ान के रोज़े

के बाद शव्वाल की पहली को ईद मुक़र्रर किया । इस में ईद की दो रक्अत नमाज़ पढ़ने को बताया ताकि ख़ुदा के सामने सब खड़े होकर कुरआन की नेमत और इस्लाम की दौलत मिलने पर ख़ुदा का शुक्र अदा करें और इस लिये ताकि इस दिन कोई भूखा न रहे यह इन्तिज़ाम किया गया । "हर मक़दरत वाले पर फ़ित्र का सदक़ा नाज़िल किया गया ।" यह पहला मौक़ा था कि आंहज़रत सल्ल० ने मुसलमानों को साथ लेकर एक मैदान मे ईद की नमाज़ अदा की । नमाज़ के बाद ख़ुत्बा दिया जिस में फ़ित्र के सद्क़े की ख़ूबियां बयान फ़रमाई ।

यह ईद की नमाज़ मुसलमानों के समाजी बराबरी और मज़हबी ख़ुशी को ज़ाहिर करती है ।

उहद की लड़ाई

(शव्वाल, सन ३ हिज्री)

मक्का में बद्र के बदला लेने की आग अन्दर ही अन्दर सुलग रही थी। अबु सुफ़ियान ने इस जोश से फ़ायदा उठाया । कुरैश की तिजारती पूंजी लड़ाई के खर्च के लिये मंजूर हुई । अरबों के भड़काने और जोश दिलाने का सबसे काम का हथियार शायरी थी । कुरैश के दो शायरों ने इस काम को अपने हाथ में लिया । उन में से एक वही था जो बद्र में क़ैद हो चुका था मगर रहमते आलम सल्ल० के हलम व करम से रिहा हो गया था । इन दोनों ने कुरैश के क़बीलों में जाकर अपने बयान की गर्मी से आग लगा दी ।

कुरैश के शरीफ़ घरानों की बीवियों ने भी सिपाहियों के हौसले बढ़ाने का काम किया । बड़े-बड़े घरानों की बीवियां, जिन के सरदार अबु सुफियान की बीवी हिन्दा थी । अपने गानों से कुरैश के सिपाहियों की रगों में बहादुरी और मर्दानगी के खून दोड़ाने के लिये सफ़र को तैयार हुई हिन्दा का बाप उत्बा और जुबैर बिन मत्अम का चचा दोनों बद्र के मेदान मे हज़रत हम्ज़ा

रज़ि० के हाथ से मारे गये थे । हिन्दा ने ज़ुबैर के हब्शी गुलाम वहशी की अज़ादी की कीमत हज़रत हम्ज़ा रज़ि० का सर मुक़र्रर किया था ।

मक्का में यह तैयारियां हो रही थीं मगर अभी तक मदीने में उसकी खबर न थी । आप सल्ल० के चचा हज़रत अब्बास रज़ि० ने जो इस्लाम ला चुके थे एक तेज़ चलने वाले आदमी को भेजकर मदीने में खबर की । इतने में खबरें मिलीं कि कुरैश की फोज धावा करके मदीने के क़रीब पहुंच चुकी है । आप सल्ल० ने कुछ मुसलमानों को पहरे का काम और दुश्मनों की देख भाल पर मुक़र्रर किया । सुबह हुई तो मशिवरा मांगा । अक्सर लोगों ने यह राय दी कि औरतों को बाहर के क़िले में भेज दिया जाए और मर्द आबादी में ठहर कर दीवारों की आड़ ले कर दुश्मनो का सामना करें । मुनाफ़िक़ों के सरदार अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सुलूल ने भी यही राय दी, लेकिन नवजवान मुसलमानों ने जो जोश में भरे हुए थे, इस पर ज़ोर दिया कि शहर से निकलकर मैदान में मुक़ाबला किया जाए । इस राय के बाद आप सल्ल० तश्रीफ लाए और दूसरे मुसलमानों ने भी तैयारी शुरु कर दी ।

कुरैश ने मदीने के पास पहुंच कर उहद के पहाड़ के पास पड़ाव डाला और दो दिन यहां जमे रहे, तीसरे दिन जुमा था । आंहज़रत सल्ल० जुमे की नमाज़ पढ़कर एक हज़ार मुसलमानों को साथ लेकर बाहरे निकले । इन में अब्दुल्लाह बिन उब्बी बिन सलूल के भी तीन सो आदमी थे, लेकिन वह यह कहकर अपने आदमियों को साथ लेकर चला गया कि मुहम्मद (सल्ल०) ने मेरी राय न मानी । अब सिर्फ़ सात सो मुसलमान रह गए जिनमें से सिर्फ़ सौ आदमियों के पास ज़रहें थीं ।

इस लड़ाई में शिरकत की इजाज़त पाने के लिए कुछ कमसिन नोजवान मुसलमानों ने अजीब व ग़रीब जोश दिखाया । राफ़िया बिन खदीज रज़ि० से जब यह कहा गया कि तुम उम्र में छोटे हो, तो वह अंगूठों के बल तन कर खड़े हो गए । सच है कि कौम की ज़िनदगी की आग नोजवानों के

ही काम करने के जोश ईंधन से जलती है ।

मुसलमानों ने उहद के पहाड़ को पीठ के पाछे रखकर अपनी सफ़ ठीक की । पहाड़ में एक दर्रा (घाटी) था, जिधर से डर था कि दुश्मन पीछे से आकर हमला न कर दे । इसलिए पचास अच्छे तीर चलाने वालों का दस्ता इस की हिफ़ाज़त के लिए मुक़र्रर किया और समझा दिया कि लड़ाई में हमारी जीत भी हो रही हो तब भी अपनी जगह से न हटें । लड़ाई इस तरह शुरु हुई कि कुरैश की शरीफ़ बीवियां दफ़ पर फ़ख़्र के शेर और बद्र के क़त्ल हुए लोगों का मर्सिया पढ़ती हुई आगे बढ़ीं, फिर कुरैश के लश्कर का अमलबरदार तल्हा ने सफ़ से निकल कर पुकारा । अली मुर्तज़ा रज़ि० ने इसका जवाब दिया और और तलवार मारी और तल्हा की लाश ज़मीन पर थी । इसके बाद इसके बेटे ने हिम्मत की और आखिर में हज़रत हम्ज़ा रज़ि० की तलवार ने इसे भी खत्म कर दिया । अब आम जंग शुरु हो गई । हजरत हम्ज़ा रज़ि०, हज़रत अली रज़ि०, हज़रत अबदजाना रज़ि० अंसारी, कुरैशी फोजों के दल में घुस गए और दुश्मनों की सफ़ें की सफ़ें उलट दीं ।

हज़रत अली रज़ि० दोनों हाथों में तलवार लिए लाशों पर लाशें गिराते जा रहे थे । ज़ुबैर का हबशी ग़ुलाम वहशी जिस से हिन्दा ने यह वायदा किया था कि अगर वह हम्ज़ा रज़ि० को क़त्ल कर दे, तो आज़ाद कर दिया जाएगा। हज़रत हम्ज़ा रज़ि० की ताक में था । हज़रत हम्ज़ा रज़ि० जैसे ही उस घेरे में आये उसने हबशियों के एक ख़ास अन्दाज़ में जिसमें उनको महारत होती है, एक छोटा सा नेज़ा फेंक मारा जो नाफ़ में लगा और पार हो गया । हज़रत हम्ज़ा रज़ि० ने उस पर पलटकर हमला करना चाहा मगर लड़खड़ा कर गिर पड़े और रुह निकल गई ।

हक़ और बातिल की कैसी लड़ाई थी । बाप अपने बेटे और बेटा अपने बाप के मुक़ाबले तलवार तोल रहा था । ख़िन्ज़ला रज़ि० एक सहाबी थे, जो मुसलमान हो चुके थे, उन्होंने अपने बाप के मुक़ाबले में जाने की इजाज़त

चाही, मगर रहमते आलम सल्ल० ने इसकी इजाज़त न दी ।

मुसलमान बहादुर ईमान के जोश में चूर थे । वह काफ़िरों को हर तरफ़ से दबाए बढ़े जा रहे थे । आख़िर उनके बेपनाह हमलों से दुश्मन के पांव उखड़ गए । अब मुसलमानों ने दुश्मनों की बजाए उनके माल और अस्बाब की लूट शुरु कर दी । यह देखकर तीर चलाने वालों ने जो दर्रे के पहरे पर थे अपनी चौकी छोड़ दी । इनके सरदार अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि ने कितना ही उन्हें रोका, मगर वह यह जानकर कि लड़ाई ख़त्म हो चुकी है, वह भी लूट मार में शामिल हो गए । ख़ालिद जो बाद में इस्लाम के सब से बड़े सिपहसालार साबित हुए, उस वक़्त मक्का की फौज में थे, उनकी जंगी नज़र से दुश्मन की यह कमज़ोरी छिपी नहीं रह सकती थी, वह सवारों का एक दस्ता लेकर दर्रे से होकर आगे बढ़े । अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० और उनके कुछ साथियों ने जमकर सामना किया और सब के सब शहीद हो गए । ख़ालिद ने अब आगे बढ़कर पीछे से हम्ला किया । मुसलमान लूटने में लगे हुए थे । मुड़कर देखा तो तलवारें बरस रहीं थी । बदहवासी की यह हालत थी कि मुसलमान आपस ही में एक दूसरे पर टूट पड़े । मसअब रज़ि० बिन उमैर रज़ि० जो मुसलमानों के अलमबरदार और सूरत व शक्ल में आंह हज़रत सल्ल० से मिलते जुलते थे एक काफ़िर के हाथ से शहीद हो गए । इस पर काफ़िरों ने शोर मचा दिया कि मुहम्मद(सल्ल०) ने शहादत पायी । इस आवाज़ से मुसलमानों के रहे सहे होश भी उड़ गए । इनकी सफ़ें बेतर्तीब हो गई । काफ़िरों का सारा ज़ोर इधर था जिधर आप सल्ल० थे । सफ़ो की बेतर्तीबी से आप सल्ल० तक पहुंचने के लिये दुश्मन का रास्ता बिलकुल साफ़ था । सिर्फ़ गयारह जान नौछावर करने वाले परवानों की तरह 'नबूवत की शमा' के इर्द गिर्द थे, उनमें से अली मुर्तज़ा रज़ि०, अबुबक्र रज़ि०, साद बिन अबी विक़ास रज़ि०, ज़ुबैर तल्हा रज़ि० के नाम मुहाजिरों में और अबु दजाना रज़ि० का नाम अंसारियों में मालूम है, बाक़ी सहाबियों को आप सल्ल० की

कुछ खबर न थी। यकायक एक सहाबी ने आप को दूर से पहचाना और पुकारा, मुसलमानों ! रसूलुल्लाह यह हैं। यह सुनकर हर तरफ से जां निसार टूट पड़े और आप को दायरे में ले लिया। कुफ्फार ने हर तरफ से हटकर उसी रुख पर ज़ोर दिया। दल का दल हुजूम करके बढ़ता था जुल्फ़िकार (यह हज़रत अली रज़ि० की उस तलवार का नाम था जो उनको बद्र में मिली थी) की बिजली से यह बादल फट-फट कर रह जाता था। एक बार हुजूम हुआ तो फ़रमाया, कोन मुझ पर जान देता है ? अचानक सात अंसारी एक के बाद एक आगे बढ़े और एक एक ने लड़कर जानें दीं। अबु दजाना रज़ि० झुक कर ढाल बन गए। जो तीर आते उनकी पीठ पर लगते। तल्हा रज़ि० ने तलवारों को अपने हाथ पर रोका। हज़रत साद रज़ि० आपकी तरफ़ से तीर चला रहे थे। हज़रत तल्हा रज़ि० ने घेरा कर आप के मुबारक चेहरे का ओट कर लिया था। आप सल्ल० गर्दन निकाल लड़ाई का मंज़र देखना चाहते थे, तो वह अर्ज़ करते कि आप गर्दन न उठायें, कोई तीर न लग जाए। मेरा सीना हाज़िर है। इसी हाल में कुरैश का शकी जो बड़ा बहादुर कहलाता था, जान नौछावर करने वालों के दायरे को तोड़ कर आगे बढ़ा और मुबारक चेहरे पर तलवार मारी जिसकी चोट खुद की दो कड़ियां मुबारक चेहरे में चुभ कर रह गयीं। उम्मे अम्मारा सहाबिया रज़ि० ने उसके तलवार मारी जो उसके जिर्रे में उचट कर रह गई। किसी काफ़िर ने दूर से कोई पत्थर फेंका जो आप सल्ल० के मुबारक चेहरे पर आकर लगा जिससे आगे के दो दांत शहीद हो गऐ। इसी हालत में आप सल्ल० की ज़ुबाने मुबारक से यह असर में डूबा हुआ जुमला निकला जो रहती दुनिया तक याद रहेगा।

"ऐ खुदा ! मेरी कोम के क़ुसूरों को माफ़ कर कि वह नादान हैं।"

इसके बाद कुछ सहाबियों के साथ जो अपना पैर जमाए हुए थे, आप पहाड़ की चोटी पर चढ़ गए। अबु सुफ़ियान ने देख लिया और फ़ौज लेकर पहाड़ी पर चढ़ा लेकिन हज़रत उमर रज़ि० और कुछ साथियों ने पत्थर बरसाए

जिससे वह आगे न बढ़ सका । लेकिन सामने की दूसरी पहाड़ी पर चढ़कर उसने हबल देवता की जय पुकारी । हज़रत उमर रज़ि० ने उसके मुकाबले में अल्लाहु अकबर का नारा लगाया ।

आप सल्ल० के इन्तिकाल की ग़लत खबर मदीने तक फैल गयी । हज़रत फ़ातिमा रज़ि०जाने किस तरह बेताबाना बाप सल्ल० के क़दमों तक पहुंच गयीं । चेहरे मुबारक से खून जारी था । हज़रत अली रज़ि० सपर में पानी भरकर लाए । हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ज़ख्मों को धोतीं थी मगर खून नहीं रुकता था । आखिर चटाई का एक टुकड़ा जलाकर ज़ख्मों पर रख दिया जिस से खून थम गया ।

इस लड़ाई में सत्तर मुसलमान शहीद हो गए । शहीदों में सबसे बड़ी हस्ती हज़रत हम्ज़ा रज़ि० की थी । हुज़र सल्ल० पर इसका बड़ा असर था मगर मजाल क्या थी जो सब्र का दामन हाथ से छूटता । इतना फ़रमाया कि आह ! हम्ज़ा (रज़ि०) पर कोई रोने वाला भी नहीं । अंसार ने सुना तो अपनी औरतों को हिदायत दी कि पहले हम्ज़ा रज़ि० का मातम करो । आंह हज़रत सल्ल० ने यह देखा तो फ़रमाया, तुम्हारी हमदर्दी का शुक्रिया अदा करता हूं, लेकिन मुर्दों पर रोना जायज़ नहीं ।

कुरैश की औरतों ने और खासकर अबु सुफ़ियान की बीवी ने मुसलमानों की लाशों से बेअदबी करके अपने दिल का बुखार निकाला । इनके नाक कान काट लिये और उनका फूलों का हार बनाकर अपने गले में डाला । हिन्दा ने हज़रत हम्ज़ा रज़ि० का पेट फाड़ा और जिगर निकाल कर चबाया, मगर निगल न सकी, फिर एक उंचाई पर चढ़ कर कुछ शेअर गाए कि आज बद्र का बदला पूरा हो गया ।

इस लड़ाई में यहूदियों के डर से मुसलमानों ने अपने बीवी, बच्चों ओर कमज़ोरों को क़िले में रख दिया था मगर जो बीवीयां बहादुर थीं वह मैदान में मौजूद थीं । पढ़ चुके हो कि हज़रत फ़ातिमा ज़ुहरा, बाप की मरहम पट्टी कर

रही थीं और दूसरी बीवीयां हज़रत आयशा रज़ि०, हज़रत उम्मे सलीत रज़ि० और हज़रत उम्मे सलीम रज़ि० अपने कंधों पर मश्क में पानी भर कर लाती थीं और ज़ख्मियों को पिलाती थीं।

आंह हज़रत सल्ल० की फूफी और हज़रत हम्ज़ा रज़ि० की बहन हज़रत सफ़िया रज़ि० हार की खबर सुनकर मदीने से निकलीं। आंह हज़रत सल्ल० ने उनके लड़के हज़रत ज़ुबैर रज़ि० से बुलाकर कहा कि यह हम्ज़ा रज़ि० की लाश जो टुकड़े टुकड़े पड़ी थी, न देखने पायें। हज़रत ज़ुबैर रज़ि० ने आकर यह कहा तो बोलीं मैं अपने भाई का माजरा सुन चुकी हूं, लेकिन खुदा की राह में यह कोई बड़ी कुर्बानी नहीं। आंह हज़रत सल्ल० ने इजाज़त दी तो लाश पर गयीं। खून का जोश था और प्यारे भाई के टुकड़े बिखरे पड़े लेकिन इन्न लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजि ऊन के सिवा उनकी ज़बान से और कुछ न निकला।

एक अंसारी बीवी के बाप, भाई और शौहर तीनों इस लड़ाई में मारे गये थे। वह हाल जानने के लिये बेक़रार घर से निकलीं। बारी बारी इन तीनों हादसों की खबर उनके कानों में पड़ती है, लेकिन वह हर बार यही पूछतीं कि हमारे रसूल कैसे हैं ? जवाब मिला खैरियत से हैं। उनको तस्कीन न हुई। पास आकर मुबारक चेहरा देखा तो पुकार उठी, आप खैरियत से हैं, तो और मुसीबतें कुछ नहीं।

शहीदों के कफ़न के लिये भी ग़रीब मुसलमानों के पास कुछ न था। मदीने के पहले इमाम और मुवल्लिग मसअद बिन उमैर रज़ि० का जनाज़ा तैयार था। उनके कफ़न का कपड़ा इतना छोटा था कि उनका सर छुपाया जाता तो पैर खुल जाते और पैर छुपाए जाते तो सर खुल जाता आखिर सर छिपाकर पांव पर घास डाल दी गई। यह वह मुज़र था कि बाद को भी मुसलमान जब इस वाक़िए को याद करते थे तो रो देते थे। शहीदों को नहलाए बग़ैर उसी तरह खून से रंगीन, कब्रों में उतारा गया और बेकसी और

मज़्लूमी की यह मूर्तियां ज़मीन के सुपुर्द कर दिए गए ।

मुसलमानों को इस लड़ाई में अगरचे जानों का बड़ा नुक्सान उठाना पड़ा था, लेकिन जंगी पहलू से उनकी हार अधूरी रही थी । डर था कि अबु सुफ़ियान को इसका ख्याल आया, तो ऐसा न हो दोबारा हमला कर दे । इसलिए आंह हजरत सल्ल० ने उसी हालत में उसका पीछा करना जरुरी समझा । इसलिए यह भी मसलहत थी कि आस पास के कबीले ऐसा समझें कि मुसलमानों का ज़ोर टूट चुका । अब जो चाहे उन पर हमला कर सकता है। बहुत से मुसलमान अगरचे ज़ख्मों से चूर थे मगर जिस वक्त आप सल्ल० ने खुदा का यह हुक्म सुनाया, सत्तर मुसलमानों ने इसके लिए अपने आप को पेश किया जिनमें हज़रत अबुबक्र रज़ि० और जुबैर रज़ि० भी थे ।

अबु सुफ़ियान को कुछ दूर निकल जाने के बाद ख्याल आया कि उसका काम अधूरा रह गया है ? लेकिन खिज़ाआ के रईस माबद ने जो दरपरदा मुसलमानों के साथ था और शिकस्त की खबर सुनकर मदीना आया था, वापस जाकर अबु सुफियान से कहा कि मैं देखता आया हूं कि मुहम्मद सल्ल० इस साज़ो सामान से तुम्हारे पीछे आ रहे हैं कि उनका मुक़ाबला ना मुम्किन है । यह सुन कर अबु सुफियान मक्का चला गया और आं हज़रत सल्ल० हमरा पहुंच कर मदीने वापस चले आए ।

यहूदी ख़तरे को मिटाना

मदीने में इस्लाम के लिये यह तीसरा खतरा था और यह सब से बढ़कर था, क्योंकि यहूदी दौलत में, तिजारत में और लड़ाई की महारत में अरबों से बढ़कर थे। उनका सिलसिला हिजाज़ से शाम की पहाड़ियों तक फैला हुआ था। उनके व्यापार और कारोबार की वजह से सारे अरब पर उनका असर था और वह अरब में मज़हबी रिवायतों और इल्म व फज़्ल के लिहाज़ से ऊंचे समझे जाते थे। मदीना और उसके पास के शहरों और आबादियों में उनको अपनी दौलत, वज़ाहत और तिजारत की वजह से बड़ी कूवत हासिल थी और सब उनके सरमायेदारी के बोझ के नीचे दबे थे। औस और खि़जरज के किसान और मज़दूर जो पैदा करते थे, वह सब इनके किलों और कोठियों के भेंट हो जाता था। अरबों की मिल्कियत यहूदियों के हाथ गिरवीं रहती और इसलिए वह अपनी मेहनत का फल नहीं पाते थे। यहूदियों का एक क़बीला जो बनी कैनआन कहलाता था वह सोने, चांदी और सोनारी का काम करता था और मदीने के करीब ही रहता था। उनका दूसरा क़बीला बनी नज़ीर था और तीसरा बनी करीज़ा कहलाता था, उन्होंने हर तरफ लेन-देन का कारोबार फैला रखा था। सारी आबादी उनके कर्जों से लदी हुई थी और चुंकि अपनी दौलत के मालिक थे, इसलिए बड़ी बेरहमी से सूद की बड़ी बड़ी दरें मुकर्रर करते थे और कर्जे के बदले में लोगों के बाल बच्चे यहां तक कि औरतों को रेहन रखवाते थे।

जब इस्लाम का मर्कज़ मक्का से हट कर मदीने चला आया तो यहूदी जैसा कि शुरु में बताया जा चुका है, पहले बहुत खुश हुए, क्योंकि इस्लाम जो कुछ करता था, वह सब उनकी किताबों में था। वह उनकी आसमानी किताबों और उनके पैग़म्बरों को सच्चा होना जानता था और उससे उनको यह उम्मीद थी कि अरबों की यह नई तहरीक उनके इक्तिदार (हुकूमत) को

और बढ़ाएगी और इसलिए वह इस्लाम से इत्तिहाद और समझौते के लिए आगे बढ़े और दुश्मनों के हमले की हालत में मदीने के बचाव का क़ौल व क़रार किया और समझे कि अरबों की यह नई ताक़त यहूदियों में मिल जाएगी।

लेकिन उनको अंदर ही अंदर यह मालूम होने लगा कि यह नई तहरीक एक मुस्तिकिल ताक़त है जिसको अगर पहले ही कुचल न दिया गया, तो उनके सारे व्यापार और इक्तिदार को ख़त्म कर देगी। अब यह हुआ कि इसके बजाए कि इस्लाम की तरफ़ वह इसलिए बढ़ते कि वह उन्हीं के असली दीन को लेकर आया था, वह रुकने लगे। इस पर बेकार एतराज़ों की भरमार करने लगे। सामने कुछ और पीछे कुछ कहते और पूरा ज़ोर लगाते कि इस्लाम की तरफ़ से लोगों के दिल फिर जाऐं, मगर उसमें उनको कामियाबी नहीं मिली, बल्कि ख़ुद यहूदियों से कुछ लोग जो हक़ और इन्साफ़ चाहते थे खुल्लम खुल्ला मुसलमान हो गए और कुछ ने मुसलमान होकर अपनी जायदाद भी इसलाम की राह में दे दी।

यह हालत थी कि क़ुरैश और मुसलमानों में लड़ाई के आसार ज़ाहिर होने लगे। अब उन्होंने क़ुरैश से और क़ुरैश ने उनसे साज़-बाज़ शुरु की। एक ही साल के बाद बद्र का वाक़िया सामने आया और मुसलमानों की जीत हुई। यह यहूदियों के लिये ख़तरे की घंटी थी। वह चौकन्ने हो गऐ और कील-पुर्ज़ों से दूरुस्त होने लगे। मुसलमानों ने यह देखा तो उनको उनका क़ौल व क़रार याद दिलाया और न मानने की सूरत में धमकी दी कि जो क़ुरैश का हाल हुआ, वही तुम्हारा होगा। यहूदियों ने कहा, हम को क़ुरैश न समझना, वह लड़ाई-भिड़ाई के आदमी न थे। हमारे पास लड़ाई के पूरे सामान और हथियार हैं और हमारे बड़े-बड़े क़िले हैं। इन क़िलों से सर टकराना आसान नहीं।

यहूदियों को मालूम था कि मुहम्मद सल्ल० की सारी ताक़त का राज़ मदीने के दो क़बीलों औस और ख़िज़रज का इस्लाम के झंडे तले आ कर एक

हो जाना था । उन्होंने यह किया कि उन की मज्लिसों में बैठ कर उन दोनों की आपस की लड़ाईयों का जो इस्लाम से पहले एक दूसरे के खिलाफ़ लड़े थे, तज़्किरे छेड़ने लगे ताकि दोनों की दुश्मनी के पुराने जज़्बे उभरें और उनके इस्लाम के इत्तिहाद का रिश्ता टूट जाए । एक बार उनकी इसी चाल से यहां तक हुआ कि यह दोनों क़बीले फिर कटने मरने को तैयार हो गए । रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को खबर हुई तो आकर दोनों को समझाया और इस तरह यह फ़ितना दबा ।

मदीने में मुनाफ़िक़ों का जो गिरोह था उसका यहूदियों से मेल था । मुनाफ़िक़ों का जो सरदार अब्दुल्लाह बिन उबई, यहूदियों के बनी नज़ीर और बनी कैनक़ाअ का साथी था ।

यहूदियों में सबसे लड़ाका और बहादुर क़बीला बनी कैनक़ाअ था । बद्र की फ़तह ने उसको चौंका दिया । उसने सोचा कि शुरु ही में इस्लाम की ताक़त को उभरने से रोका जाए । चुनांचे यहूदियों और मुसलमानों में सुलह का जो क़ौल व क़रार हुआ था, उस को तोड़कर उसने पहले शरारत की पहल की ।

बनी कैनक़ाअ से लड़ाई

शव्वाल, सन २ हिजरी

शव्वाल, सन २ हिजरी में एक इत्तिफ़ाक़ी वाक़िए ने चिंगारी को और भड़का दिया । एक मुसलमान बीबी, बनी कैनक़ाअ के मुहल्ले में किसी काम से उनकी दुकान में गई । उन्होंने उसको छेड़कर बेइज़्ज़ती की । यह देखकर एक मुसलमान आपे से बाहर हो गया और इस यहूदी को मार कर गिरा दिया। यहूदियों ने उस मुसलमान को मार डाला । इस वाक़िए ने एक बलवे की शक्ल अख़्तियार कर ली । मुसलमानों ने पहले उनको बहुत समझाया, मगर उनको अपने हथियारों और क़िलों पर इतना घमण्ड था कि वह सुलह पर तैयार

हुए । अब मुसलमानों ने उनको बग़ल का घूंसा समझ कर सबसे पहले उनसे निमटना ज़रूरी समझा ।

लड़ाई का ऐलान हुआ तो बनी कैनक़ाअ ने अपना क़िला बंद करके मुक़ाबिला किया । मुसलमानों ने उनके क़िले को को घेर लिया और पंद्रह दिनों तक घेरे रहे । मुसलमानों की यह ताक़त देखकर क़िले वाले घबरा गए और आख़िर इस पर मान गए कि रसूल्लुल्लाह सल्ल० जो फ़ैसला करें वह हम मानेंगे । अब्दुल्लाह बिन उबई जो इनका साथी था, आकर आं हज़रत सल्ल० से अर्ज़ किया कि उनकी इतनी ही सज़ा बहुत है कि वह यहां से निकाल दिए जायें । आप सल्ल० ने मंजूर फ़रमाया और बनी कैनक़ाअ भी यह मान गए और अपनी सारी ज़मीन और जायदाद छोड़ कर शाम के मुल्क में चले गए ।

मुसलमान मुबाल्लिग़ों का बेदर्दाना क़त्ल

आं हज़रत सल्ल० एक दीन लेकर आए थे । उसके लिए लड़ाई – भिड़ाई और लूटमार की कोई ज़रूरत न थी । मगर यहां तक जो हाल पढ़ आए हो उनसे समझ गए होगे कि जाहिल और नादान अरब किसी तरह मुसलमानों को सुलह और अमन से रहने नहीं देते थे । पहले तो अकेले कुरैश से लड़ाई थी, अब धीरे – धीरे यह आग और जगह भी फैलती जाती थी और नज्द तक पहुंच चुकी थी । इन्हीं ख़तरों में घिर कर जिस तरह बन पड़ता था, मुसलमान इस दीन का प्रचार और इसलाम को फैला रहे थे और अब यमन के किनारों और बैहरीन के इलाक़ों तक में यह तालीम चुपके – चुपके कुबूल की जा रही थी।

सफ़र, सन ४ हिजरी में कलाब कबीले के रईस ने ख़्वाहिश की, कि कुछ मुसलमान, तब्लीग़ करने वालों को मेरे साथ कर दीजिए कि वह मेरी क़ौम में जाकर इस्लाम फैलाऐं और लोगों को मुसलमान बनाएं । आप सल्ल०

ने फरमाया, मुझे नज्द की तरफ़ से डर है । उसने कहा, उनकी मैं ज़मानत लेता हूं । इस पर एतबार करके आप सल्ल० ने सत्तर(७०) अंसारी मुबल्लिग़ों को उसके साथ कर दिया । बनी सलीम के इलाक़े में मअना नाम के एक कुऐं के पास पहुंच कर इस निहत्थे दस्ते ने जिसका मक़सद अम्न व सलामती को पहुंचाने के सिवा कुछ भी न था, पड़ाव किया । इस तरफ़ के रईस आमिर बिन तुफ़ैल ने आकर एक के सिवा सब को घेर कर क़त्ल कर दिया । यह एक उम्र बिन उमया थे, जिन्होंने मदीने आकर अपने साथियों की मज़लूमी की कहानी सब को सुनायी ।

इन ही दिनों में अज़ल और क़ारा के कुछ आदमी आप सल्ल० की खिदमत में आए कि हमारे क़बीले ने इस्लाम क़ुबूल कर लिया है । आप कुछ मुसलमानों को हमारे साथ कर दीजिए, जो हमारे यहां जाकर हमको इस्लाम की बातें सिखायें । आप सल्ल० ने दस आदमी साथ कर दिए । जब यह निहत्था क़ाफ़िला रजीअ नाम की जगह पर पहुंचा तो इन ज़ालिमों ने अपना अहद तोड़ दिया । बनी लहियान के दो सौ (२००) तीर चलाने वालों ने उनको घेर लिया । यह कुछ गिनती के मुसलमान एक टीकरे पर चढ़ गए और दो के सिवा सब खुदा की राह में मारे गए । जो दो बच गए वह खुबैब रज़ि० और ज़ैद रज़ि० थे । उनको इन्होंने पकड़ कर मक्का ले जाकर क़ुरैश के हाथ बेच डाला । खुबैब रज़ि० ने उहद की लड़ाई में हारिस बिन आमिर को मारा था, इसलिए हारिस के लड़कों ने उनको खरीद लिया और अपने बाप के बदले में उनको सूली देकर मार डाला । सूली पाने से पहले उन्होंने अपने क़ातिलों से इंजाज़त मांगी कि वह दो रक्अत नमाज़ पढ़ लें । उन्होंने इसकी इजाज़त दी तो उन्होंने दो रक्अत नमाज़ अदा की और उस वक़्त से यह मुसलमान शहीदों की रस्म क़रार पा गई । सूली पाते वक़्त यह शेर उनकी ज़ुबान पर था । " जब मैं इस्लाम की राह में मारा जा रहा हूं, तो मुझे इसकी कोई परवाह नहीं कि मैं किस पहलू पर मारा जाऊंगा ।"

ज़ैद रज़ि० को एक दूसरे कुरैशी ने इस लिये खरीदा था कि मेले के तमाशा देखने वालों के सामने उसके क़त्ल का रंगीन नज़ारा दिखएगा। जब क़ातिल तलवार लेकर आगे बढ़ा तो अबु सुफ़ियान ने पूछा, सच कहना, अगर इस वक़्त तुम्हारे बदले मुहम्मद सल्ल० क़त्ल किए जाते तो तुम खुश न होते? बोले, खुदा की क़सम रसूलुल्लाह सल्ल० के तलवों को कांटों से बचाने में मेरी जान भी काम आती तो मेरी सआदत थी। यह कहने के साथ एक तलवार गिरी और उनका सर धड़ से अलग था। अल्लाहु अक्बर! उन खुदा के बंदों पर हक़ का नशा कैसा छाया था।

इब्ने अबीअल हक़ीक़ का खानदान

यहूदियों में इब्ने अबीअल हक़ीक़ का खानदान सबसे दौलत मंद था। बड़े-बड़े यहूदी आलिम उसके घर से तनख्वाहें पाते थे। इस्लाम की दुश्मनी में उस खानदान के कई बड़े-बड़े लोग सबसे आगे थे। काब बिन अशरफ़ उस खानदान का नवासा था। उसका बाप अरब और मां उस खानदान की यहूदिन थी। इसलिए अरबों और यहूदियों दोनों में उसका असर था। उसके सूदी कारोबार का यह हाल था कि वह अरबों के बाल बच्चों और बीवियों तक को क़र्ज़ में गिरवी रखता था बद्र का वाक़िया पेश आया तो उसको रंज हुआ। शायर भी था। उसने इस वाक़िये पर असर करने वाले शेर लिखे और खुद मक्का जाकर कुरैश के सरदारों से मिला और उनको बद्र का बदला लेने पर तैयार किया। मदीना वापस आया तो शरीफ़ अंसारी बीवियों के नाम ले-ले कर अपने शेअरों में उनसे इश्क़ का इज़हार करता। इससे अंसार में गुस्सा फैला और आखिर एक अंसारी, मुहम्मद बिन सलमा ने जाकर उसको मार डाला। यह रबीउल अव्वल, सन ३ हिजरी का वाक़िया है। यहूदियों के दूसरे

बड़े-बड़े आदमी जो इस्लाम के दुश्मन थे । अबू राफ़अ सलाम बिन अबीअलहक़ीक़, क़नाना, इब्नुर्रबीअ और जुबी बिन अख़तब थे जो बनी नज़ीर में से थे ।

बनु नज़ीर का देश निकाला

(रबीउल अव्वल सन ४ हिजरी)

बनु नज़ीर यहूदियों का दूसरा ताक़तवर क़बीला था । अब उसने क़ुरैश से साज़बाज़ शुरु की और उनको मदीना के कमज़ोर हिस्सों की जानकारी देने लगे । इन से और मुसलमानों से मुआहदा था । इस मुआहिदे के मुताबिक़ अगर किसी मुसलमान या बनी नज़ीर के किसी आदमी के हाथ से कोई मारा जाता तो दूसरे पर भी उसके ख़ून का रुपया अदा करना ज़रुरी था । बनी आमिर के दो आदमी एक जंगी ग़लती से एक मुसलमान के हाथ से इत्तिफ़ाक़ से मारे गये, हालांकि उनके पास रसलुल्लाह सल्ल० का अमान-नामा मौजूद था । उन क़त्ल किए गये आदमियों के ख़ून का रुपया मुसलमानों पर वाजिब हुआ । मुसलमानों ने बनी नज़ीर से भी उसमें शामिल होने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की और इसी लिये रसलुल्लाह सल्ल० उन के मुहल्ले में आ गए । ज़ाहिर में तो उन्होंने बहुत कुछ चुस्ती दिखाईऔर शामिल होने पर तैयार मालूम हुए, लेकिन छिप कर उन्होंने चाहा कि रसलुल्लाह सल्ल० जो एक दीवार के नीचे खड़े थे एक बड़ा पत्थर गिराकर मार डालें । रसलुल्लाह सल्ल० को इसका पता चल गया । सीधे अकेले उठ कर मदीने चले आये ।

बनु नज़ीर ने कहला भेजा कि आप सल्ल० तीस आदमियों को लेकर आयें । हम भी अपने आलिमों को लेकर आयेंगे । अगर वह आप सल्ल० की बात मान लेंगे तो हम को कोई उज़्र न होगा । आप सल्ल० ने जवाब दिया कि जब तक तुम एक अहदनामा न लिख दो हम को तुम पर भरोसा नहीं, लेकिन वह इस बात पर न माने । यहूदियों का तीसरा क़बीला जो बनी क़ुरैजा

कहलाता था, आप सल्ल० ने उन से दोबारा नए अहदनामे की दरख्वास्त की और उस ने कुबूल किया। अब बनी नज़ीर ने भी कहला भेजा कि हम को भी यह मंजूर है कि आप सल्ल० तीन आदमियों को लेकर यहां आयें। आप सल्ल० ने मुज़ूर फ़रमाया, लेकिन रास्ते में आप सल्ल० को मालूम हो गया कि यहूदी तलवारें बांध कर तैयार हैं कि जब आप सल्ल० तशरीफ़ लायें तो आप को क़त्ल कर दें। आप सल्ल० फ़िर वापस चले आये।

बनी नज़ीर बड़े-बड़े क़िलों के मालिक थे जिन पर उनको घमंड था और मदीना के मुनाफ़िक़ भी उनको शह दे रहे थे और कहला भेजते कि तुम दबना नहीं। बनी कुरैजा भी तुम्हारा साथ देंगे और हम भी दो हज़ार की जमाअत के साथ तैयार हैं।

मुसलमानों को यह मालूम हुआ तो वह पेशबन्दी करके आगे बढ़े और बनी नज़ीर के क़िले को घेर लिया और पन्द्रह दिन तक घेरे पड़े रहे। आख़िर वह इस शर्त पर मान गए कि जितना माल व अस्बाब ऊंटों पर ले जा सकें, ले जायें और मदीना से बाहर निकल जायें। चुनांचे सब घरों को छोड़कर अपना माल व अस्बाब लाद कर निकल गए और उन में से उनके कई बड़े-बड़े रईस, अबु राफ़िअ सलाम बिन अबील हक़ीक़, क़नाना बिन बिर्बीअ और हय बिन अख़्तब भी ख़ैबर चले गये।

खंदक या अहज़ाब की लड़ाई

(ज़ीक़दा, ५ हिजरी)

बनु नज़ीर मदीने से निकलने को तो निकल गये मगर खैबर पहुंच कर उन्होंने अपनी साज़िशों का जाल सारे अरब में फैला दिया। उनके रईसों ने मक्का जाकर कुरैश को तैयार किया। ग़त्फ़ान क़बीले को खैबर की आधी पैदावार का लालच देकर अपने साथ मिलाया। बनी अस्दान के साथी थे वह भी उठे। मतलब यह मिला कर दस हज़ार की भारी फ़ौज मदीने की तरफ़ रवाना हुई।

आं हज़रत सल्ल० को जब इसका पता चला तो मुसलमानों से मशिवरा किया। मुसलमानों को उहद की लड़ाई का तजुर्बा हो चुका था। हज़रत फ़ारसी रज़ि० चूंकि ईरान के थे, इसलिये ईरान के जंगी तरीक़ों को जानते थे। उन्होंने राय दी कि शहर के तीन रुख तो मकानों और नखलिस्तानों से घिरे हुए हैं। सिर्फ़ एक तरफ़ खुला हुआ है। इधर खंदक (गड्ढा) खोदी जाय ताकि दुश्मन इस तरफ़ से शहर में न घुसने पायें। यह राय सब ने मान ली। आं हज़रत सल्ल० के तीन हज़ार मुबारक हाथों ने बीस दिन में यह काम पूरा किया और इस तरह पूरा किया कि खुद खुदा का रसूल सल्ल० भी उन में एक आम मज़दूर की तरह काम कर रहा था। कई कई दिन भूखे रहने में गुज़र रहे थे। इस पर इस्लाम के मानने वालों का जोश ठंडा नहीं होता था। हाथों से मट्टी खोदते और पीठों पर उस को लाद-लाद कर फेंकते थे और आवाज़ में आवाज़ मिलाकर यह शेअर गाते थे।

"हम हैं जिन्होंने मुहम्मद सल्ल० के हाथ पर इस पर बेअत की है कि जब जान में जान है हम खुदा की राह में लड़ते जायेंगे।"

दुश्मन अब क़रीब आ गया था। उस के क़रीब आने की खबरें सुन-सुन कर बुज़दिल मुनाफ़िक़ों के होश उड़े जा रहे थे। झूठे बहाने कर-कर के अपने अपने घरों को लौट रहे थे। यहूदियों का अब सिर्फ़ तीसरा

क़बीला बनु कुरैजा मदीना के पास रहता था । उसका रवैया साफ़ न था, इसलिए दो सो आदमियों का दस्ता उनकी देख भाल के लिए अलग कर दिया गया था । बनु कुरैज़ा अब तक खुलकर सामने नहीं आए थे । बनी नज़ीर का यहूदी सरदार हय बिन अख़्तब जो अब ख़ैबर जा बसा था, दुश्मनों की फ़ौज के साथ आया था । उसने बनु ख़ुरैज़ा के सरदार को जो मुसलमानों से मुआहिदा तोड़ने पर इसलिए तैयार नहीं हो रहा था कि यह बाहर के लोग चले जायेंगे फिर मुसलमानों को अकेले हम ही से निपटना पड़ेगा, यह कहकर मिला लिया कि मैं इस वक़्त मुहम्मद(सल्ल०) के ख़िलाफ़ सारे अरब को उठाकर लाया हूं । उनकी ताक़त को हमेशा के लिये ख़त्म कर देने का फिर मौक़ा हाथ नहीं आएगा । इस दलील से लाचार होकर वह भी दुश्तनों से मिल गया और हय ने इस को यक़ीन दिलाया कि अगर कुरैश और ग़तफ़ान तुम को बे-सहारा छोड़कर चले जायेंगे तो हम तुम्हारा साथ देंगे ।

कुफ्फ़ार बीस दिन तक मदीने के गिर्द घेरे डाले पड़े रहे और शहर पर हम्ला करने का कोई रास्ता नहीं लाते थे । एक जगह ख़ंदक़ की चौड़ाई कम थी । एक दिन उन्होंने बड़ी तैयारी कर उसी रुख़ से हम्ला करना चाहा । अम्र बिन वुद्द जो कुरैश का सबसे बड़ा बहादुर था, घोड़ा कुदा कर इस पार आ गया। इधर से ज़ुल्फ़िकार वाला हाथ बढ़ा और एक ही वार में तलवार कंधे तक उतर आयी । हज़रत अली रज़ि० ने अल्लाहु अक्बर का नारा मारा और फ़तह का ऐलान हो गया ।

हम्ले का यह दिन बड़ा सख़्त गुज़रा । दुश्मन हर तरफ़ से तीर और पत्थर बरसा रहे थे । मुसलमान औरतों को जिस किले में हिफ़ाज़त से रखा गया था, वह बनी कुरैज़ा के पास था । बनी कुरैज़ा ने यह देखकर कि मुसलमान तो इधर फंसे हैं, उधर इस ख़ाली किले पर कब्ज़ा कर लिया जाए। एक यहूदी किले के फाटक पर पहुंच चुका था कि हज़रत ज़ुबैर की मां साफ़िया रज़ि० ने जो आप सल्ल० की फूफी थीं, आगे बढ़कर उस को ख़त्म

कर दिया और उसका सर काट कर मैदान में फेंक दिया । यह देख कर बनी कुरैज़ा समझे कि किले में भी कुछ फ़ौज है इसलिये उधर हिम्मत न की ।

घेरा जितना लम्बा पड़ता जाता था, दुशमनों का मेल मिलाप आपस में कम होता जाता था । ग़त्फ़ान का क़बीला मदीने की कुछ पैदावार सालाना लेकर लौटने के लिये तैयार था । उसके एक रईस ने जो दर-परदा मुसलमान हो चुके थे, मगर उनका मुसलमान होना अभी सब को मालूम न था । क़ुरैश और यहूदियों से जाकर अलग अलग ऐसी बातें कीं जिस से दोनो में फूट पड़ गई । खुदा का करना कि उन्हीं दिनों में एक रात को ऐसी आंधी चली कि दुश्मनों के खेमों की रस्सियां उखड़ उखड़ गयीं । खाने की हांडियां चूल्हों पर उलट उलट जातीं थीं । सरदी में हवा की इस तेज़ बाढ़ ने कुफ़्फ़ार के दिल कंपकंपा दिए ।

इन सब बातों ने मिल जुलकर साथी फ़ौजों (अहज़ाब) के पांव उखाड़ दिए बनी क़ुरैज़ा उनका साथ छौड़ कर अपने क़िलों में चले गये । ग़त्फ़ान भी रवाना हो गए । यह देखकर क़ुरैश भी मजबूर होकर घेरा छोड़कर चले गये और मदीना का किनारा बीस बाईस दिन गर्द में अट कर फिर साफ़ पड़ गया।

बनी कुरैज़ा का ख़त्म होना

बनी कुरैज़ा ने ऐसे नाजुक मौके पर मुसलमानों के साथ अहद तोड़ा, वह माफ़ करने के क़ाबिल न था । हय बिन अख़तब जो अरबों के इस जत्थे का बानी था । बनी कुरैज़ा के साथ अमान में था । इसलिये आंहज़रत सल्ल० ने कुफ़्फ़ार की इस मुत्तहिद फ़ौज का शीराज़ा बिखरने के साथ-साथ ही बनी कुरैज़ा की तरफ़ रुख किया । उन के क़िले बंद हो गए । मुसलमान एक महीने तक उनका घेरा किये पड़े रहे, आख़िर उन्होंने यह दरख़्वास्त की उनका मामला उनके साथी क़बीले औस के मुसलमान सरदार साद बिन मआज़ रज़ि० के सुपुर्द कर दिया जाए, वह जो फैसला करें वह उसे खुशी से मान

लेंगे । साद बिन मआज़ खंदक़ की लड़ाई में एक तीर का ज़ख्म खा कर निढाल हो रहे थे, फिर भी वह आए । उनके क़बीले के लोग यह चाहते थे कि उनकी ग़लती माफ़ कर दी जाए, मगर साद बिन रजीअ ने न माना और फ़ैसला किया कि उनमें जो लड़ने के क़ाबिल हों वह क़त्ल कर दिये जायें और औरतें और बच्चे क़ैद हों और माल और अस्बाब मुसलमानों में बांट दिया जाये। इसी फ़ैसले पर अमल हुआ और यहूदियों के इस तीसरे क़बीले का भी ख़ात्मा हुआ और उन सरमायदारों की ज़मीनें और जायदादें, ग़रीब काम करने वाले मुसलमानों में बांट दी गयीं ।

इस्लाम क़ानून की शक्ल में

इस्लाम जिस दिन से दीन बनकर आया, उसी दिन से वह सल्तनत भी था । दीन और दुनिया का अलग अलग फ़र्क़ उसकी तालीम में नहीं । दुनिया की ज़िन्दगी में खुदा और उसके मख़्लूक़ों के जो फ़र्ज़ हम पर हैं, उनको अच्छी तरह से अदा करना ही दीन है । इसलिये हुकूमत और सल्तनत हमारे दीन से कोई अलग चीज़ नहीं । मदीना जैसे इस्लाम का मर्कज़ था उसकी सियासी कूवत का मर्कज़ भी बनता जाता था । इस्लाम जहां तक फैलता था, वहां तक उसकी हुकूमत की हद बढ़कर अम्न व अमान क़ायम हो जाता था, चोरियां ख़त्म हो जातीं थीं, डाके बंद हो जाते थे, बुरे काम मिट जाते थे और अरबों की बेनियाज़ ज़िन्दगी की जगह इस्लाम की मुरत्तब की ज़िन्दगी शुरु हो जाती थी । इमाम, मुअज़्ज़िन, मुहस्सिल और क़ाज़ी मुक़र्रर होने लगते थे और इस्लामी क़ानून की हुकूमत सब पर एक साथ जारी हो जाती थी ।

इस्लाम ने शुरु-शुरु में सिर्फ़ अक़ीदों की दुरुस्ती पर ज़ोर दिया, जब यह मक़सद कुछ-कुछ हल निकला तो खुदा की इबादत और इताअत का सबक़ पढ़ाया । जब तबीयतें इधर भी मुतवज्जोह हुईं, तो इस्लाम का क़ानून उतरने लगा ।

इससे पहले तक तो यह हाल था कि बाप मुसलमान तो बेटा काफ़िर, मां इस्लाम लाई है तो बेटी काफ़िरा है। शौहर मुसलमान हो चुका है मगर बीवी अभी कुफ़्र की हालत में है। बद्र के बाद मुसलमानों में इतमीनान की ख़ानदानी ज़िन्दगी पैदा होने लगी और लड़ाइयों की वजह से मारे जाने वालों की तायदाद भी बढ़ी होगी। इसलिये सन ३ हिजरी में विरासत का क़ानून उतरा। लड़कियां जो अरबों में तर्का पाने का हक़ नहीं रखतीं थीं, इस्लाम ने उन को भी उनका जायज़ हक़ दिया। अब तक मुश्रिक औरतों से निकाह कर लेते थे, अब वह वक़्त आया कि घर की अंदरुनी ज़िन्दगी के सुख और चैन के लिये उनसे निकाह नाजायज़ ठहरा। सन ४ हिजरी में बदकारी की रोकथाम के लिये मुजरिम को पत्थर से मार डालने का हुक्म जो तैरात में था, जारी किया गया। कुछ कहते हैं कि शराब का पीना पिलाना भी इसी साल बंद हुआ।

अरब में मुंह बोले बेटों का रिवाज था, जिन को मुतबन्ना कहते हैं और जिन के साथ हक़ीक़ी बेटों का रिवाज था और उनकी बीवियां हक़ीक़ी बहुएं समझी जातीं थी। सन ५ हिजरी में इस्लाम ने वह्मी नस्ब को ख़त्म किया। जाहलियत के ज़माने में औरतें बनाव सिंगार करके मेलों, ठेलों और मर्दों की महफ़िल में बे रोक टोक आती जाती थीं जिन से नमाज़ की बदनामी थी। इस्लाम ने सन ५ हिजरी में इन बातों की मुनासिब सुधारें की। घर से निकले तो एक बड़ी चादर ओढ़ लें। सीने पर आंचल डालें, घुंघरु और बजने वाला ज़ेवर पहन कर धमाके से न चलें। मर्दों से लोच के साथ बातें न करें। कुंवारों के लिये बदकारी की सज़ा सौ कोड़े मुक़र्रर हुई। कुछ तरह की तलाक़ों के सुधार किए गये।

इस्लाम के लिए दो रोक

आज से कुछ साल पहले इस्लाम के रास्ते में मुश्किलों के पहाड़ खड़े थे, लेकिन जब अल्लाह तआला के फ़ज़्ल, हुज़ूर सल्ल० की एजाज़, अख्लाक़ और तद्बीर व मुसमानों के इख्लास, ईसार और कोशिशों से वह एक-एक करके दूर हो गई और अब तरक्क़ी के रास्ते में दो ही रुकावटें रह गई। मक्का के मुश्रिकों से हुज़ूर सल्ल० सिर्फ़ यह चाहते थे कि इस्लाम को आगे बढ़ने दें और जो लोग ख़ुशी से उस हल्क़े में आना चाहें उनको यह मौक़ा दिया जाए। मक्का में ग़रीब और कमज़ोर मुसलमान बच्चों, औरतों और बेबस मुसलमानों को जो क़ैद रखा है उन को मदीने आने दिया जाए और मुसलमानों को मक्का आने जाने और तवाफ़ और हज की आज़ादी मिले।

ख़ैबर के यहूदियों से इतना ही चाहा जाता था कि अगर इस्लाम के दीन में आना नहीं चाहते, तो वह उसकी ताक़त के आगे सर झुका दें, ताकि मुल्क में एक तरह का निज़ाम खड़ा किया जा सके।

हुदैबिया की सुलह

(ज़ीक़दा, सन ६ हिजरी)

मुसलमानों की बड़ी ख्वाहिश थी कि वह मक्का जाकर खाना काबा का तवाफ़ और ज़ियारत से अपनी आंखें ठंडी करें जिस के दीदार से वह सालहासाल महरुम कर दिए गए थे। इसी इरादे में आप सल्ल० चौदह सौ (१४००) मुसलमानों को साथ लेकर मक्का को रवाना हुए। लड़ाई की नीयत बिलकुल न थी। मना थी कि तलवारों के सिवा कोई भी हथियार साथ न लिया जाए और तलवारें भी मियान में हों। कुर्बानी के ऊंट साथ थे और अरब का बच्चा-बच्चा जानता था कि जो सफ़र ऐसी मुक़द्दस गर्ज़ से किया जाए, उसमें लड़ना क्या तलवार उठाना भी जायज़ नहीं।

जब आप मक्के के क़रीब पहुंचे तो एक मुख़्बिर को हाल मालूम करने के लिए मक्का भेजा। वह ख़बर लाया कि कुरैश एक बड़ी जमाअत साथ लेकर मुसलमानों को रोकने की ग़रज़ से आगे बढ़ रहे हैं। आप सल्ल० रास्ता कतरा कर हुदैबिया नाम की जगह पर उतर पड़े और एक पैग़ाम पहुंचाने वाले को मक्का यह कहकर भेजा कि हम सिर्फ एक उमरा (एक छोटा हज) अदा करने आए हैं, लड़ने का मक़्सद नहीं है और बेहतर यह है कि कुरैश थोड़ी मुद्दत के लिये हम से सुलह का मुआहदा कर लें और मुझको अरब के हाथों में छोड़ दें।

पैग़ाम पहुंचाने वाले ने कुरैश के सरदारों के सामने जाकर यह तक़रीर की, उरवा बिन मसुउद सक़फ़ी, एक नेक दिल सरदार ने कुरैश से कहा, क्या तुम्हें मुझ से कोई बदगुमानी तो नहीं? उन्होंने कहा, नहीं। तब उसने कहा कि मुझे इजाज़त दो कि मुहम्मद सल्ल० से मिलकर इस मामले को तै करुं। लोगों ने रज़ा मंदी ज़ाहिर की, तो वह हुज़ूर सल्ल० की खिदमत में हाज़िर हुआ और कुरैश का पैग़ाम सुनाया। उरवा ने यहां पहुंचकर मुसलमानों के

रुहानी इन्कलाब का जो तमाशा देखा और रसूलुल्लाह सल्ल० के साथ उनकी हैरत से भरी अक़ीदत का जो हाल उसके देखने में आया, उसने उसके दिल पर भारी असर किया। कुरैश से जाकर कहा कि मैं ने कैसर व क़सरा और निजाशी के दरबार देखे हैं, अक़ीदत व मुहब्बत की यह तसवीर मुझे कहीं नज़र नहीं आयी। मुहम्मद सल्ल० बात करते हैं तो हर तरफ़ सन्नाटा छा जाता है। कोई अदब से नज़र भर कर उनकी तरफ़ नहीं देखता। वुज़ू करने में जो बूंदें गिरती हैं, अक़ीदत मंद इनको लेकर हाथ और चेहरे पर मलते हैं।

इस पर भी बात अधूरी रही। आप सल्ल० ने फिर एक सफ़ीर भेजा। कुरैश ने इस पर हमला किया, लेकिन वह बच कर निकल गया। अब कुरैश ने लड़ने को एक दस्ता आगे भेजा। मुसलमानों ने उसको पकड़ लिया, लेकिन आं हज़रत सल्ल० ने छोड़ दिया और माफ़ी दे दी और उस्मान रज़ि० को सफ़ीर (दूत) बना कर मक्का भेजा वह अपने नातेदार की हिमायत में मक्का गए और आं हज़रत सल्ल० का पैग़ाम सुनाया। कुरैश ने उनको क़ैद कर लिया और मुसलमानों तक यह ख़बर यूं पहुंची कि हज़रत उस्मान रज़ि० शहीद कर दिये गए। मुसलमानों में बड़ा जोश पैदा हुआ। आप सल्ल० ने फ़रमाया, उस्मान रज़ि० के ख़ून का बदला लेना फ़र्ज़ है। यह कह कर बबूल के एक पेड़ के नीचे बैठ गए और सहाबा रज़ि० से जान नौछावर करने की बैअत ली। इसी का नाम बैअत-रिज़वान है यानी ख़ुदा की ख़ुशी के लिये की गयी बैंअत, क्योंकि इसके बारे में ख़ुदा ने कुरआन में अपनी ख़ुश्नूदी ज़ाहिर फ़रमायी।

बाद को मालूम हुआ कि हज़रत उस्मान रज़ि० की शहादत की ख़बर सही न थी लेकिन मुसलमानों के इस जोश व हौसले और सच्चाई का यह असर हुआ कि कुरैश हिम्मत हार गये। उन्होंने भी अपना एक सफ़ीर आं हज़रत सल्ल० के पास भेजा और पहली शर्त यह पेश की, कि मुसलमान इस

साल वापस जायें और अगले साल आयें और तीन दिन रहकर वापस जायें। कुछ रद्दोबदल के बाद दस साल के लिये लड़ाई रोकी गई और यह शर्तें मंजूर हुईं कि मुसलमान इस साल वापस जायें और अगले साल तीन दिन के लिये आयें। तलवार के सिवा कोई हथियार साथ न हो और तलवारें भी म्यान में हों, जाते वक़्त मक्का में जो मुसलमान रह गए हैं उनको अपने साथ न ले जायें। कुरैश में से कोई मुसलमान होकर मदीने चले जाये तो वापस कर दिया जाए और अगर कोई मुसलमान मदीना छोड़कर मक्का चला जाए तो वह वापस न किया जाए। अरब के कबीलों में से जो जिस फ़रीक़ के साथ चाहे समझौते में शामिल हो जाए इस मुआहिदे के बाद मुसलमान वापस मदीना चले आए।

इस्लाम की जीत

समझौते की यह शर्तें अगरचे ज़ाहिर में कड़ी थीं और इसी लिये जोश में भरे हुए कुछ मुसलमानों को इनके मानने में झिझक हो रही थी, मगर जब खुद खुदा का रसूल सल्ल० उनको मान चुका था, तो फिर किसको इंकार की हिम्मत हो सकती थी। कुछ ही दिनों के बाद मालूम हो गया कि यह शर्तें इस्लाम के हक़ में बेहद फ़ायदे की थीं।

अब तक मुसलमान जिस उसूल के लिए कुरैश से मुक़ाबला कर रहे थे, वह यह था कि इस्लाम को अपने प्रचार की आज़ादी का हक़ मिले और कुरैश इस राह के रोड़ा न बनें। कुरैश को इसके मानने से अब तक इंकार था। हुदैबिया की सुलह ने इस उसूल को मनवा लिया और इस्लाम को अपने प्रचार की आज़ादी हक़ मिल गया और यही उस की जीत थी। खुद खुदा ने कुरआन में आयत उतारी— *इन्न फ़-त-ह-ना ल-क फ़तहन-मुबी ना* (हमने तुझे खुली हुई फ़त्ह दी)।

दुनिया के बादशाहों को इस्लाम का बुलावा

(दावत) सन ६ हिजरी

इस्लाम को अपनी ज़िंदगी के उन्नीसवें साल यह मौक़ा मिला कि वह दुनिया को इत्मीनान के साथ अपना पैग़ाम सुना सके। उस ज़माने में लोग अपने-अपने रईसों और बादशाहों की पैरवी करते थे, जो वह करते थे, वह सब करते थे, इसलिए आपने एक दिन मुसलमानों को मस्जिद में इकट्ठा करके फ़रमाया-

"लोगों! खुदा ने मुझे सारी दुनिया के लिये रहमत बनाकर भेजा है। अब वक़्त आया है कि तुम इस रहमत को दुनिया वालों में बांटो। उठो और हक़ का पैग़ाम सारी दुनिया को सुनाओ।

इसके बाद आप सल्ल० ने अपने साथियों में से कुछ होशियार मुसलमानों को चुना और उनको इस्लाम की दावत के ख़त देकर आस-पास के रईसों और बादशाहों के पास भेजा। अरब के रईसों को छोड़कर अरब से मिली हुई बादशाहतें यह थीं-हब्श, ईरान, रुम और मिस्र। हब्श के बादशाह ने इस्लाम क़ुबूल किया। ईरान के शहंशाह ने उस ख़त को गुस्से से टुकड़े टुकड़े कर दिया। आप सल्ल० ने फ़रमाया, अल्लाह यूं ही उसके मुल्क को टुकड़े टुकड़े करेगा। यह पेशीनगोई हरफ़ ब हरफ़ पूरी हुई।

मिस्र के बादशाह ने अगरचे इस्लाम क़ुबूल नहीं किया लेकिन हुज़ूर सल्ल० के ख़त का जवाब क़ायदे से दिया। रुम का क़ैसर उस वक़्त सारी मश्रिक़ की ईसाई दुनिया का बादशाह था, उसने हुक्म दिया कि हिजाज़ के सौदागर कहीं मिलें तो उनको बुलाओ। क्या अजीब बात है कि इस काम के लिए वह शख़्स हाथ आया जो उस वक़्त इस्लाम का सबसे बड़ा दुशमन था यानी अबु सुफ़ियान।

अबु सुफ़ियान अपने कुछ साथियों के साथ दरबार में हाज़िर किये गये। कैसर ने उनसे कहा, मैं तुम से पूछता हूं। तुम में से एक आदमी जवाब दे और बाकी सब सुनें। अगरचे यह कुछ गलत कहे तो तुम टोक दो। यह कहकर उसने पुछा और अबु सुफ़ियान ने जवाब दिया।

कैसर :- यह जो पैग़म्बर होने का दावा करता है, उसका खानदान कैसा है ?

अबु सुफ़ियान :- शरीफ़।

कैसर :- उसके खानदान में से किसी और ने कभी पैग़म्बर होने का दावा किया था ?

अबु सुफ़ियान :- नहीं।

कैसर :- उसके खानदान में कोई बादशाह भी हुआ था ?

अबु सुफ़ियान :- नहीं।

कैसर :- जिन्होंने उसके मज़हब को क़बूल किया है वह कमज़ोर लोग हैं या बड़े-बड़े रईस हैं ?

अबु सुफ़ियान :- कमज़ोर

कैसर :- उसके मानने वाले बढ़ रहे हैं या घटते जा रहे हैं ?

अबु सुफ़ियान :- बढ़ते जा रहे हैं।

कैसर :- कभी तुम लोगों को उसके झूठ बोलने का भी तजुर्बा है ?

अबु सुफ़ियान :- नहीं।

कैसर :- वह क्या कभी कौल व करार करके मुकर भी गया है ?

अबु सुफ़ियान :- अब तक तो ऐसा नहीं किया। अब जो मुआहिदा उससे हुआ है, देखें कि वह उसे पूरा करता है या नहीं।

कैसर :- क्या तुम उससे कभी लड़े भी हो ?

अबु सुफ़ियान :- हां।

कैसर :- लड़ाई का नतीजा क्या रहा

अबु सुफ़ियान :- कभी हम जीते, कभी वह ।

कैसर :- वह क्या कहता है ?

अबु सुफियान :- वह कहता है कि एक ख़ुदा को मानो और उसी को पूजो, उसी से दुआऐं मांगो, नमाज़ पढ़ो, पाकबाज़ बनो, सच बोलो, रिश्ते का हक़ अदा करो ।

कैसर अबु सुफ़ियान के यह सब जवाब सुनकर बोल उठा कि अगर तुमने सच सच कहा है, तो एक दिन ऐसा आएगा कि वह मेरे पांव के नीचे की इस ज़मीन पर भी कब्ज़ा कर लेगा । अगर हो सकता तो मैं जाता और उसके पांव धोता ।

एक दुश्मन की ज़ुबान से इतनी सच्ची शहादत कहीं और मिल सकती है?

अरब के कई रईसों ने इस्लाम कुबूल किया । बहरीन में इस्लाम का प्याम इससे पहले पहुंच चुका था और अब्दुल कैस का कबीला यहां मुसलमान हो चुका था । हब्श के जाने वाले मुसलमानों के ज़रिए से इस मुल्क में भी यह मज़हब फैल रहा था बल्कि यमन के किनारों तक उसकी आवाज़ पहुंच चुकी थी । वहां औस का कबीला बहुत पहले मुसलमान हो चुका था । अशअर का कबीला भी इस्लाम का नाम लेने लगा था । अम्र बिन अंबसा जो सलीम के कबीले से थे गो मक्का ही के ज़माने में मुसलमान हो चुके थे । अब जाकर जब उनको लोगों की ज़ुबानी मदीने में इस्लाम की तरक्की मालूम हुई तो मदीना आकर अपने इस्लाम का ऐलान किया । उनके मुसलमान होने का किस्सा बड़ा दिलचस्प है, उनको किसी तरह मालूम हुआ कि मक्का में कोई पैग़म्बर पैदा हुआ है । वह उसकी चाहत लेकर मक्का पहुंचे । यहां उस वक़्त काफ़िरों का बड़ा घेरा था, मगर वह किसी तरह छिप कर आप सल्ल० की ख़िदमत में पहुंच गए और पूछा, आप कौन हैं ? फ़रमाया मैं पैग़म्बर हूं । बोले पैग़म्बर किसको कहते हैं ? इर्शाद हुआ कि मुझे ख़ुदा ने पैग़ाम देकर भेजा है । पूछा, क्या पैग़ाम देकर भेजा है ? फ़रमाया कि यह पैग़ाम कि क़राबत

का हक़ अदा किया जाए, बुत तोड़े जायें, खुदा को एक माना जाए और किसी को खुदा का शरीक न ठहराया जाये। अम्र ने पूछा, अब तक आपके मज़हब के मानने वाले कितने हुए हैं ? फ़रमाया एक आज़ाद (अबुबक्र रज़ि०) और एक गुलाम (बिलाल रज़ि०), अम्र रज़ि० ने कहा, मैं आपके मज़हब में आना चाहता हूं। फ़रमाया अभी तो ऐसा नहीं हो सकता, तुम देखते हो कि लोगों का क्या हाल है, अभी अपने घर वापस जाओ, जब मेरी कामियाबी का हाल सुनना तो आना। इस खुदा के बंदे को जब आप सल्ल० की कामियाबी का हाल मालूम हुआ तो दौड़ कर आया।

ग़िफ़ार का आधा क़बीला हज़रत अबुज़र ग़िफ़ारी रज़ि० के कहने से पहले ही मुसलमान हो चुका था और आधा उस वक्त मुसलमान हुआ, जब आप सल्ल० मदीना आए। जुहैना के क़बीले ने एक साथ एक हज़ार की जमाअत से इसलाम कुबूल किया। इसी तरह असलम, मुज़ैना और अश्जा के क़बीलों ने इस सच्चाई को सुना और कुबूल किया।

हुदैबिया की सुलह, इस्लाम की फ़तह का नक्कारा था ग़रज़ तो यह थी कि लड़ाई भिड़ाई दूर हो, दुश्मनी और अदावत का जज़्बा ठंडा हो और मुखालफ़त का रंग फीका पड़े और लोगों को इस्लाम के रुहानी इन्क़लाब के देखने और इस्लाम की तालीम समझने का मौका मिले। हुदैबिया की सुलह ने यह मौका आसानी से पहुंचाया। काफ़िरों को मुसलमानों से मिलने जुलने, उनकी बातों को सुनने और उन पर सोचने का मौक़ा मिला तो नतीजा यह हुआ कि दो साल के अंदर अंदर मुसलमानों की तायदाद दोगुनी हो गई। खुद मक्के के हर घर में इस्लाम पहुंच चुका था।

कुरैश के दो बड़े जनरल खालिद और अम्र बिन आस थे। देख चुके हो कि उहद के मैदान में सिर्फ़ ख़ालिद की जंगी महारत ने मुसलमानों की जीती हुई लड़ाई हरा दी थी। हुदैबिया की सुलह हो चुकी तो वह मक्का से निकल कर मदीना को रवाना हुए, रसते में अम्र बिन आस मिले। पूछा किधर का इरादा है?

बोले मुसलमान होनें जा रहा हूं। अम्र ने कहा, मेरा भी यही इरादा है। दोनों एक साथ मदीना पहुंचे और इस्लाम का कलमा पढ़कर मुसलमान हो गए। आगे चलकर उनमें एक (खालिद रज़ि०) वह हुआ, जिसने शाम का मुल्क कैसर से छीन लिया और दूसरे (अम्र रज़ि०) ने मिस्र की सल्तनत रुमियों से लेकर इस्लाम के क़दमों पर डाल दी।

एक रिवायत में है कि अम्र बिन आस के दिल पर इस्लाम का असर यूं पड़ा कि जिन दिनों इस्लाम का क़ासिद, इस्लाम का पैग़ाम लेकर हब्श के बादशाह निजाशी के दरबार में पहुंचा तो अम्र रज़ि० वहीं थे। वहां उन्होंने देखा कि हब्श का बादशाह इस सल्तनत के बावजूद उसका कलमा पढ़ने लगा, तो उनपर बड़ा असर हुआ। आखिर वह इस असर को छिपा न सके और वापस आकर मुसलमान हो गए।

कैसर के दरबार में अबु सुफ़ियान ने इस्लाम की सच्चाई का जो मंज़र देखा, वह भी बेअसर नहीं रहा, मगर फिर भी अभी वक़्त का इंतिज़ार था।

यहूदियों का आख़िरी क़िला

(ख़ैबर आख़िरी सन ६ हिजरी या शुरु सन ७ हिजरी)

अब यहूदियों की आबादी हिजाज़ के कोने से सिमट कर हिजाज़ के आखिरी किनारे पर शाम के मुल्क के पास ख़ैबर में इकट्ठी हो गई थी। यहां उनकी बड़ी बड़ी कोठियां और क़िले थे और यहूदी यहां इस्लाम के मुक़ाबले में आखिरी सहारा लेने के लिये ज़ोर लगा रहे थे। उन का एक सरदार अबु राफ़अ सलाम बिन अबील हकीक़ जो हिजाज़ का सौदागर कहलाता था, सन ६ हिजरी में ग़तफ़ान क़बीलों को लेकर मदीने पर धावा करने का इरादा कर रहा था, कि एक अंसारी मुसलमान के हाथ से अपने क़िले में सोता हुआ मारा गया।

सलाम की जगह अब असीर बिन रज़ाम ने ले ली उसने भी इन ही क़बीलों में दौरा करके एक भारी फ़ौज तैयार की। मदीने में ख़बर पहुंची तो

आपने सच्चाई मालूम करने के लिये आदमी भेजे। उन्होंने आकर तसदीक़ की। आप सल्ल० ने सुलह के लिये कुछ आदमी भेजेऔर असीर को मदीने बुलाया कि सुलह पक्की हो जाए। वह तीस आदमियों को लेकर चला। रास्ते में उसके दिल में क्या बात आयी कि चाहा कि मुसलमान दस्ते के अफ़सर के हाथ से तलवार छीन ले। इस पर दोनों तरफ़ तलवारें चलीं और असीर इस में काम आया।

अब ख़ैबर वालों ने ग़त्फ़ान वालों को नख्लिस्तान की आधी पैदावार देने का लालच देकर अपने साथ मिला लिया। ग़त्फ़ान के एक क़बीले बनु फ़ज़ारा ने यह हिम्मत की कि मुर्हरम हिजरी में मदीने की चरागाह पर हम्ला किया और एक मुसलमान को क़त्ल किया।

अब मुसलमानों के सब्र का प्याला भर गया। ख़ैबर के हमले का ऐलान हुआ। सोलह सौ मुसलमान जैहाद के शौक़ में आप सल्ल० के साथ मदीने से रवाना हुए। फ़ौज के साथ कुछ मुसलमान बीवियां भी आयीं थीं ताकि प्यासों को पानी पिला सकें और ज़ख्मियों की मरहम-पटटी कर सकें। लड़ाई के मैदान से तीर उठाकर लायें। यह पहला मौक़ा था कि इस्लाम की फ़ौज ने फ़रैरा उड़ाया। तीन झंडे तैयार हुए। एक हब्बाब बिन मुंजर रज़ि० को और दूसरा साद बिन उबादा रज़ि० को और तीसरा झंडा जोकि हज़रत आयशा रज़ि० की ओढ़नी से बनाया गया था, इस्लाम के शेर हज़रत अली रज़ि० के सुपुर्द हुआ। रास्ते में इस मुक़द्दस फ़ौज का तराना यह था-

ऐ ख़ुदा ! अगर तू न होता तो हम को यह हिदायत न मिलती। हमारी जानें कुर्बान, हम को माफ़ कर दे और हम पर तसल्ली उतार और हमारे क़दम जमा। ज़ालिमों ने हमारी तरफ़ हाथ बढ़ाए हैं और फ़ितना खड़ा करना चाहा है, तो हम उनसे दबने वाले नहीं। तेरी मेहरबानी से हम बेनियाज़ नहीं हो सकते।

ईमान का यह जोश से भरा हुआ दरिया यूं उमड़ा हुआ चला जा रहा था कि रात के अंधेरे में खैबर के किले से जाकर टकराया। मौका था कि रात के अंधेरे में उन पर हमला कर दिया जाता, लेकिन आप सल्ल० ने ऐसा नहीं किया और हुक्म दिया कि सुबह का इन्तिज़ार किया जाए। सुबह हुई तो यहूदियों ने मामूल के मुताबिक फाटक खोले तो सामने फौज पड़ी देखी। पुकार उठे मुहम्मद (सल्ल०) की फौज! आप सल्ल० अब तक लड़ना नहीं चाहते थे। इस लिये अब भी हम्ले का हुक्म नहीं दियाए लेकिन यहूदियों ने सुलह के बजाऐ लड़ाई की ठानी। यह देख कर पहले आप सल्ल० ने मुसलमानों को नसीहतें फ़रमायीं, फिर जिहाद का हुक्म सुनाया।

मुसलमानों ने पहले नाईम नाम के किले पर धावा किया। महमूद बिन मुस्लिमा रज़ि० एक बहादुर मुसलमान इस दस्ते के अफ़सर थे। वह बहुत अच्छी तरह लड़े, लेकिन गरमी के दिन थे वह ज़रा दम लेने को दीवार के साए में बैठ गए। यहूदी सरदार कनाना चुपके से दीवार के उपर चढ़ गया और वहां से चक्की का पाट उनके सर पर गिर गया और वह मर गए, लेकिन उस किले के दरवाज़े मुसलमानों ने खोल लिए। कमूस के किले पर मरहब नाम का एक मशहूर बहादुर मुकर्रर था। उसके मुकाबले के लिए कई दिन तक बड़े बड़े सहाबा रज़ि० फौजें लेकर गए लेकिन फत्ह का फख्र किसी और की किस्मत में था। तब लड़ाई ज़्यादा बढ़ी तो, एक दिन शाम को आप सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया, कि कल मैं झंडा उसी शख्स को दूंगा जिस के हाथ पर खुदा फ़तह देगा और जो खुदा और खुदा के रसूल को चाहता है और खुदा और खुदा के रसूल सल्ल० उस को चाहते हैं। यह रात उम्मीद और इन्तिज़ार की रात थी। बड़े बड़े सहाबियों ने सारी रात इसी इन्तिज़ार में काटी कि देखिए फख्र की यह दौलत किस के हाथ आती है।

सुबह हुई तो अचानक कानों में आवाज़ आई, "अली रज़ि० कहां हैं?" उन की आंखों में दर्द था। वह बुलाए गए। आप सल्ल० ने उन की

आंखों में अपने मुंह का लुआब लगाया और दुआ फ़रमायी और खैबर की फतह का झंडा इनायत हुआ । अर्ज़ किया कि क्या यहूद को लड़कर मुसलमान बना लूं ? फ़रमाया नर्मी के साथ उनके सामने इस्लाम को पेश करो। अगर एक आदमी भी तुम्हारी नसीहत से मुसलमान हो जाए तो यह सुर्ख ऊंटों की दौलत से बहतर है ।

मरहब क़िले से अपनी बहादुरी का यह गीत गाते हुए निकला–

" खैबर जानता है कि मैं मरहब हूं । सलाह में डूबा हुआ, तजुर्बेकार, बहादूर हूं । "

मरहब के जवाब में खुदा के शेर ने यह शेर पढ़ा–

" मैं वह हूं कि मेरी मां ने मेरा नाम शेर रखा था । जंगल के शेर की तरह डरावना हूं । "

खुदा के शेर ने इस ज़ोर से तलवार मारी कि उसके सर को काटती हुई दांतों तक उतर आयी । मरहब मारा गया और क़िले का फाटक मुसलमानों के हाथों में था ।

लड़ाई में पन्द्रह मुसलमान काम आये । यहूदियों ने सुलह कर ली और सुलह की शर्त यह ठहरायी कि ज़मीन की पैदावार का आधा हिस्सा हम मुसलमानों को दिया करेंगे । यहूदियों की यह दरख्वास्त मंज़ूर हुई । यह गोया यहूदियों का पहला सबक़ था, जो यहूदियों ने मुसलमानों को सिखाया और आंहज़रत सल्ल॰ ने उन पर तरस खाकर इसको कुबूल कर लिया । खैबर की आधी ज़मीनों की मिलकियत, लड़ने वाले मुसलमानों को दी गयी और आधी खज़ाने की मिलकियत क़रार पायी । इसी में आं हज़रत सल्ल॰ के लिये भी पांचवां हिस्सा (खुम्स) मुक़र्रर हुआ, जिस की आमदनी आप सल्ल॰ के घर की दूसरी ज़रूरतों और इस्लाम की दूसरी मस्लहतों में काम आती ।

साल में बटाई का जब वक़्त आता तो आंहज़रत सल्ल॰, अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि॰ को खैबर भेज देते । वह जाकर सारी पैदावार के ढेर को

दो बराबर हिस्सों में बांट देते और यहूदियों से कहते कि इन में से जो चाहो तुम ले लो। यहूदियों की आंखों के लिये इस बराबरी और इंसाफ़ का नज़ारा बिल्कुल नया था। वह कह उठते थे कि ज़मीन व आसमान इसी इंसाफ़ से कायम हैं।

फ़त्ह के बाद आप सल्ल० कुछ दिन खैबर में ठहरे, अगरचे यहूदियों के साथ पूरी रियायत बरती गयी थी और उनको हर तरह का अम्न व अमान बख़्शा गया था, मगर फिर भी उनकी फ़ितरी बद नियती ने उन का साथ नहीं छोड़ा। एक यहूदी औरत ने आप सल्ल० और आप के साथ आप के कुछ सहाबियों की दावत की और खाने में ज़हर मिला दिया। आप सल्ल० ने लुक्मा मुंह में रखकर खाने सें हाथ रोक लिया, और फ़रमाया कि इस खाने में ज़हर मिलाया गया है, लेकिन एक सहाबा रज़ि० ने इसको अच्छी तरह खाया। आप सल्ल० ने उस यहूदी औरत को बुलाकर पूछा तो उसने जुर्म को मान लिया, इस पर भी आप सल्ल० ने उस को छोड़ दिया, लेकिन जब उन सहाबी ने इस ज़हर से इन्तिकाल किया तो वह उन के बदले में मारी गयी।

खैबर के पास ही एक तराई थी जिसको क़रा की वादी कहते थे। उसपर तीमा और फ़दक वग़ैरह यहूदियों के कुछ गांव थे, मुसलमान उधर भी बढ़े। वहां के यहूदियों ने खैबर की शर्त पर सुलह कर ली। इस वाक़िए पर यहूदियों की लड़ाई ख़त्म हो गयी।

मुद्दत की आरज़ू उमरा

जीकदा सन ७ हिजरी

उमरा एक तरह का छोटा हज है जिस में एहतराम के साथ काबा के गिर्द घूम कर और सफ़ा और मर्वा की पहाड़ियों के बीच में तेज़ चलकर कुछ दुआऐं पढ़ी जाती हैं। याद होगा कि पिछले साल हुदैबिया में यह तै पाया था कि अगले साल मुसलमान मक्का आकर उमरा अदा कर लें। इस शर्त के मुताबिक़ आंहज़रत सल्ल० ने उमरा का एलान किया और मुसलमानों का एक बड़ा हिस्सा जोश के साथ रवाना हो गया। शर्त थी कि मुसलमान हथियार उतार कर मक्का में दाख़िल होंगे। अगरचे यह शर्त पूरी करने के खतरे से ख़ाना काबा की ज़ियारत के शौक़ और मुआहिदे के एह्तराम में इस शर्त को पूरा किया। मक्का से आठ मील इधर ही सारे हथियार उतार कर रख दिये गये और दो सौ सवारों का एक दस्ता उसकी हिफ़ाज़त पर लगाया गया। बाकी मुसलमानों ने मक्का में दाख़िल होकर जोश व ख़रोश के साथ झूमते तनते उमरा के सब काम पूरे किये। तीन दिन के बाद शर्त के मुताबिक़ आप सल्ल० मक्का से निकले। मक्का से निकलते वक़्त एक अजीब असर में डूबा हुआ मंजर सामने आया। हज़रत हम्ज़ा रज़ि० की यतीम बच्ची आंहज़रत सल्ल० को चचा चचा कह कर पुकारती हुई आयी। हज़रत अली रज़ि० ने उसको गोद में उठा लिया कि उनकी बहन थी। हज़रत अली के भाई हज़रत जाफ़र रज़ि० और हज़रत ज़ैद बिन हारिस रज़ि० ने उस के लिये अपने दावे अलग अलग पेश किये। हज़रत जाफ़र रज़ि० कहते थे कि यह मेरे चचा की लड़की है। ज़ैद रज़ि० कहते थे कि हम्ज़ा रज़ि० मेरे मज़हबी भाई थे। क्या यह नाज़ और मुहब्बत की लड़ाई उसी के लिए नहीं हो रही थी जो इस्लाम से पहले ज़िंदा ज़मीन में गाड़ दी जातीं थीं। इस्लाम ने अब लोगों के दिलों को कैसा बदल दिया था।

एक नया दुश्मन

मौता की लड़ाई (जमादीलऊला सन ८ हिजरी)

अब तक इस्लाम को अरब मुल्क के अन्दर के यहूदियों और मुश्रिकों के क़बीलों से सामना था। अब आगे ईसाई रूमियों की ताक़त और सल्तनत की दीवार की रुकावट थी। ईसाई रूमियों की मातहती में एक अरब खानदान बसरा पर हुकूमत कर रहा था। इस खानदान के रईस ने उस मुसलमान क़ासिद को जो उन के पास इस्लाम की दावत का खत ले कर आया था, क़त्ल कर दिया गया। आंहज़रत सल्ल० ने इस शहीद का बदला लेने के लिये तीन हज़ार फ़ौज मदीना से रवाना की। हज़रत जाफ़र रज़ि०, अबदुल्लाह बिन रवाहा रज़ि० और ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० उस में खास तौर से भेजे गये थे। फ़ौज की सरदारी ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० को दी गया, और फ़रमा दिया कि यह शहीद हों तो जाफ़र रज़ि० और वह भी मारे जायें तो अब्दुल्लाह बिन रवाहा फ़ौज के अफ़सर हों।

हूरान के बादशाह को खबर लग चुकी थी। उस ने एक लाख के क़रीब फ़ौज तैयार की। खुद रूम के कैसर ने बेशुमार फ़ौज के साथ मूआब में आकर खेमा डाला। आप सल्ल० ने मुसलमानों को ताकीद कर दी थी कि लड़ाई से पहले दुश्मन को सुलह का मौक़ा देना और इस्लाम का प्याम पहुंचा लेना। इस्लाम की फ़ौज जब क़रीब पहुंची तो देखा कि तीन हज़ार मुसलमानों को लाखों का दल-ब-दल का सामना है, मगर मुसलमान तो खुदा की राह में अपनी जान हथेली पर लिये हुए फिरते थे। वह शहादत के शौक़ में डरे नहीं। अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि० ने कहा, हम तायदाद में ज़्यादा और ताक़त के भरोसे पर नहीं लड़ते, हम तो मज़हब की ताक़त से लड़ते हैं। इस पर तीन हज़ार के छोटे गिरोह ने एक लाख की फ़ौज पर हमला कर दिया।

हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० बर्छिया खा कर शहीद हुए। उन की

जगह हज़रत जाफ़र रज़ि० ने आगे बढ़कर इस्लाम का झंडा अपने हाथ में लिया और इस तरह बहादुरी से लड़े कि एक हाथ कट गया तो दूसरे हाथ से झंडे को पकड़ लिया और दूसरा हाथ भी कट गया तो सीने से चिमटा लिया। आख़िर तलवारों और बर्छियों के नब्बे ज़ख़्म खाने के बाद गिरे और शहादत पायी। उन के बाद अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि० ने यह झंडा हाथ में लिया और मुसलमान की कमान अपने हाथ में ली और बहादुरी से लड़े कि दुश्मन को नीचा न दिखा सके, मगर मुसलमानों को उन के घेरे से निकाल लाए।

काबा की छत पर इस्लाम का झंडा

मक्का की फ़त्ह रमज़ान सन ५ हिजरी

इस इब्राहीम अलै० के लाये हुए दीन का सब से पहले फ़र्ज़ यह था कि वह इब्राहीम अलै० की बनाई हुई दुनिया की सब से पहली मस्जिद काबा को जो इस्लाम का क़िब्ला और दीन का मर्कज़ था, बुतों की गन्दगी से पाक करे। अब तक जो कुछ हुआ ज़ाहिर में वह इस फ़र्ज़ से अलग था, मगर हक़ीक़त यह है कि जो कुछ होता रहा और जिस की ख़ातिर यह ख़ून की नदियां बहती रहीं, वह सब उसी की पहल थी, क्योंकि मक्का पर क़बज़े के और काफ़िरों की नंगी तलवारों को तोड़े बग़ैर इन बुतों को तोड़कर हरम के सहन से बाहर नहीं किया जा सकता था।

अब जबकि इन झूठे माबूदों की हिफ़ाज़त के लिए जो तलवारें अलम थीं, वह झुक चुकीं तो अब वक़्त आया कि काबा को इन नापाकियों से पाक करने में देर न की जाए।

हुदैबिया की सुलह की वजह से ख़ुद से मुसलमान अब मक्का पर हम्ला नहीं कर सकते थे, मगर ख़ुदा की क़ुदरत देखिए कि इस का मौक़ा ख़ुद मक्का वालों ने पैदा कर दिया। हुदैबिया की सुलह के मुताबिक़ कुछ क़बीलों ने मक्का वालों का साथ दिया था और उन के दुश्मन बनु बक्र क़ुरैश से मिले

हुए थे। मुआहिदे के मुताबिक कुरैश के साथियों में से किसी का मुसलमानों के किसी साथी क़बीले पर हम्ला कर देना मुआहिदे (समझोते) को छोड़ देना था। खिज़ाआ और बनु बक्र में ज़माने से लड़ाइयां चली आती थीं। जब तक इस्लाम का मुक़ाबला रहा सब मिले रहे। अब जब कि हुदैबिया की सुलह से सब इतमिनान में हो गए तो बनु बक्र समझे कि दुश्मन से बदला लेने का वक़्त आ गया। अचानक उन्होंने खि़ज़ाआ पर हमला कर किया।

कुरैश के बहुत से बहादुरों ने रातों को सूरतें बदल कर खि़ज़ाआ पर तलवारें चलायीं। खि़ज़ाआ ने हरम में पनाह ली, मगर वहां भी उसको पनाह न मिल सकी। शर्त के मुताबिक़ मुसलमानों पर उन की मदद फ़र्ज़ थी। खि़ज़ाआ के चालीस घुड़सवारों ने फ़रियाद ले कर मदीने की राह ली। आंहज़रत सल्ल० ने वाक़िया सुना तो आप सल्ल० को बहुत दुख हुआ। आप ने कुरैश के पास क़ासिद (दूत) भेजा और तीन शर्तें पेश कीं कि उन में से वह कोई मंजूर कर लें।

1. खि़ज़ाआ के लोग मारे गए उन के ख़ून के बदले में अदा करें।
2. बनु बक्र की हिमायत से वह अलग हो जायें।
3. एलान हो जाए कि हुदैबिया का मुआहिदा टूट गया।

कुरैश के सरदार ने कुरैश की तरफ़ से तीसरी बात मंजूर कर ली यानी यह कि हुदैबिया का समझौता अब बाक़ी न रहा, लेकिन क़ासिद के चले जाने के बाद कुरैश बहुत पछताए और उन्होंने अबु सुफ़ियान को अपना सफ़ीर बना कर मदीना भेजा कि हुदैबिया के मुआहिदे को फिर से ताज़ा कर लें। अबु सुफ़ियान ने मदीना आकर पहले नबूवत के दरबार में अर्ज़ की। वहां से कोई जवाब न मिला तो हज़रत अबु बक्र रज़ि० से आकर कहा। उन्होंने इंकार कर दिया। वह हज़रत उमर रज़ि० के पास आया। उन्होंने कहा कि यह मुझसे नहीं हो सकेगा, फिर वह हज़रत अली रज़ि० के पास गया। उन्हों ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्ल० जो तै कर चुके हैं, उसके बारे में उनको कोई

मश्विरा नहीं दिया जा सकता। बेहतर यह है कि तुम मस्जिद में जाकर यह ऐलान कर दो कि मैं हुदैबिया की सुलह को फिर बहाल करता हूं। उस ने ऐसा ही किया।•

अबु सुफ़ियान ने जाकर लोगों से यह वाक़िया बयान किया। सब ने कहा, " न यह सुलह है कि हम इत्मीनान से बैठें और न यह जंग है कि लड़ाई का सामान करें।"

आंहज़रत सल्ल० ने मक्का की तैयारियां शुरु कर दीं और एहतियात की कि मक्का वालों को पता न लगे। १० रमज़ान को दस हज़ार की फ़ौज मक्का की तरफ़ बढ़ी। मक्के से एक मंज़िल इधर उतर कर रात को पड़ाव डाला। कुरैश को ख़बर न थी। अबु सुफ़ियान और कुरैश के दो सरदार पता लगाने को निकले। कुछ दूर निकले तो देखा कि बाहर एक फ़ौज पड़ी है। आप सल्ल० के चचा हज़रत अब्बास रज़ि० को मक्का से निकल कर पहले ही रास्ते में आंहज़रत सल्ल०की ख़िदमत में पहुंच चुके थे। मक्का वालों की हालत पर रहम आया और यह सोचकर कि अगर फौज के मक्का में दाख़िले से पहले मक्का वाले ख़ुद आ कर अम्न मांग ले तो उनकी मुसीबत दूर हो जाएगी। वह आंहज़रत सल्ल० के ख़ेमे से निकले और आप की सवारी पर बैठकर मक्का की राह ली। अभी कुछ ही दूर चले थे कि अबु सुफ़ियान वग़ैरह मिल गए। उन को बतलाया कि इस्लाम का लशकर मक्का के पास पहुंच चुका है अब कुरैश की ख़ैर नहीं। अबु सुफ़ियान ने मश्विरा पूछा। फ़रमाया तूम मेरे साथ चले आओ। वह साथ हो लिए। हज़रत अब्बास रज़ि० उन को आप सल्ल० की ख़िदमत में ले चले। रास्ते में हज़रत उमर रज़ि० ने देख कर कहा। "कुफ़्र का सरदार अब हमारे क़ब्ज़े में है।" और यह कह कर झपटे मगर हज़रत अब्बास रज़ि० उनको लेकर जल्दी से आप सल्ल० के ख़ेमे में घुस गए और अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मै ने अबु सुफ़ियान को पनाह दी है। यह कौन अबु सुफ़ियान था। वही जिस

ने इस्लाम के खिलाफ़ बद्र के बाद से लेकर अब तक सारी लड़ाईयां खड़ी की थीं। अरब के क़बीलों को उभार उभार बार बार मदीने पर चढ़ा कर लाया था, जिस ने मुहम्मद सल्ल० के क़त्ल की साज़िशें की थीं। अब वह मुसलमानों के पंजे में था और अपने हर जुर्म की सज़ा का हक़दार था। लेकिन इस्लाम रहमते मुजस्सम रसूल सल्ल० उन सब से दरगुज़र करके इस्लाम की खुशख़बरी सुनाता है और इतना ही नहीं, बल्कि उसके लिए यह फ़ख्र कर इनाम अता फ़रमाता है कि आम एलान कर दिया जाता है कि "आज जो अबु सुफ़ियान के घर में पनाह लेगा उससे कोई पूछ ताछ नहीं।" यह रहमत और आम होती है। इर्शाद होता है कि जो अपना घर बन्द कर लेगा, उसको भी अम्न है। हज़रत अब्बास रज़ि० को हुक्म हुआ कि अबु सुफ़ियान को पहाड़ की चोटी पर लेजाकर ज़रा इस्लामी फ़ौज का सैलाब दिखाओ। थोड़ी देर के बाद इस्लाम की फ़ौजें जोश भराती हुइ आगे बढ़ीं। सब से पहले गिफ़ार क़बीले का झंडा दिखाइ पड़ा, फिर जुहैना, हुज़ैम और सलीम क़बीले के हथियारों में डूबे हुए तकबीर के नारे मारते हुए निकल गए। अबु सुफ़ियान हर बार डर जाता था। सब के बाद अंसार का क़बीला इस सरो-सामान से आया कि पहाड़ी गूंज उठी। साद बिन अबादा रज़ि० के हाथ में अंसार का झंडा था। अबु सुफ़ियान ने ताज्जुब से पूछा, यह कौन लश्कर है ? हज़रत अब्बास रज़ि० ने नाम बताया। आख़िर खुद रिसालत का आफ़ताब नज़र आया, जिस के चारों तरफ़ जान नौछावर करने वालों का घेरा था। हज़रत ज़ुबैर रज़ि० के हाथों में इस का झंडा था।

यह पूरी फ़ौज जब मक्का के पास पहुंची इस अम्न की मुनादी हुई और हरम का घर जो तीन सौ साठ (३६०) बुतों का घर था, इस गंदगी से पाक हुआ और इब्राहीम अलै० के खुदा का घर अब फिर खुदा का घर बना और तौहीद की अज़ान मस्जिद के मिनार से बुलंद हुई। मक्का के बड़े बड़े सरदार जो हज़ूर सल्ल० के दुश्मन, मुसलमानों के क़ातिल और इस्लाम के रास्ते के

पत्थर थे, आज हरम के सेहन में थे । हजूर सल्ल० ने एक नज़र उठाकर देखा और पूछा कि ऐ अल्लाह के सरदारों ! आज मैं तुम्हारे साथ क्या बरताव करुंगा ? सब ने कहा, "आप जवानों के शरीफ़ भाई और बूढ़ों के शरीफ़ भतीजे हैं "। इरशाद हुआ, "जाओ आज तुम पर कोई मलामत नहीं, तुम सब आज़ाद हो "। यह आवाज़ केसी उम्मीद के खिलाफ़ थी मगर यह दिल की गहराई से उठी थी और दिल की गहराइयों में उतर गई ।

हिन्दा अबु सुफ़ियान की बीवी ने जिस ने उहद के मैदान में हज़रत हम्ज़ा रज़ि० की लाश के टुकड़े किये थे नक़ाब ओढ़ कर सामने आती है और हुज़ूर सल्ल० आम माफ़ी के पैग़ाम से खुश हो जाती है और चिल्ला उठती है कि, ऐ अल्लाह के रसूल ! आज से पहले मुझे आप के खेमे से ज्यादा किसी खेमे से नफ़रत न थी मगर आज से आप सल्ल० के खेमे से ज्यादा कोई खेमा मुझे प्यारा नहीं मालूम हुआ ।

आज कुफ़्र की सारी कुवतें टूट गईं, दुश्मनों के सारे मन्सूबे नाकाम हो गए और इस्लाम की फ़तह का झंडा मक्का की चार दिवारियों पर बुलंद हो गया । आंहज़रत सल्ल० ने इस मौके पर असर में डूबी हुई यह तक़रीर फरमाई :

"एक के सिवा और कोई खुदा नहीं । उस की खुदाई में कोई दूसरा शामिल नहीं । उसने अपना वायदा सच्चा किया । उसने अपने बंदे की मदद की और आख़िर उसने कुफ़्र के सारे जत्थों को अकेले तोड़ दिया ।

हां ! आज कुफ़्र को सारे फ़ख्र और घमंड, खून के सब पूराने कीने और जाहिलियत के सारे बदले और सारे दावे मेरे पाव के नीचे हैं । सिर्फ़ दो ओहदे बाक़ी रहेंगे, खाना काबा की तौलियत और हाजियों को पानी पिलाने की खिदमत ।

ऐ कुरैश के लोगों ! खुदा ने अब जाहिलियत के घमंड और बाप दादों पर फख्र को मिटा दिया । अब आदम अलै० की सारी नसले बराबर हैं । तुम

सब एक आदम के बेटे हो । और आदम अलै० मिट्टी से बने थे ।

खुदा फरमाता है- लोगों ! मैं ने तुम सब को एक मर्द और एक औरत से पैदा किया हैं और मैं ने तुम को क़बीलों और खानदानों में इस लिये बनाया कि तुम आपस में एक दूसरे को पहचान सको । तुम ने खुदा के नज़दीक सब से शरीफ़ वह है जो सब से ज़्यादा परहेज़गार है ।

" आज से अल्लाह ने शराब की खरीद व बिक्री और सूद के कारोबार को हराम ठहराया"।

उस वक़्त काबा और हरम की हदों में हुबल, लात, मनात वगैरह बड़े- बड़े बुत थे । आज उन की झूठी खुदाई की मुद्दत पूरी हो गई। मुसलमानों के एक हाथ के इशारे में वह अब पत्थर के ढेर थे और हर जगह तौहीद का नारा बुलंद था ।

हवज़िन और सकीफ़ की लड़ाई

शव्वाल सन ८ हिजरी

मक्का जो हिजाज़ की राजधानी और अरब की मज़हबी जगह थी जब उसकी छत पर इस्लाम का झंडा बुलंद हुआ तो सारे अरब में उसको इस्लाम मज़हब की सच्चाई का निशान मान लिया और हर तरफ़ से लोग कुफ़्र के फंदे से निकल निकल कर इस्लाम की अमान में आ रह थे, मगर मक्का के पास हवाज़िन और सकीफ़ दो ऐसे ताक़तवर क़बीले थे जो दूसरे क़बीले की मातहती के नंद को बर्दाशत नहीं करना चाहते थे । हवाज़िन के क़बीले के सरदारों ने औरों को भी उभारा और हुनैन के मैदान में इस्लाम के खिलाफ़ एक मिला जुला बहुत बड़ा जत्था इकट्ठा किया । मुसलमानों की बारह हज़ार फ़ौज जिस मे बड़ा हिस्सा क़ुरैश के नव मुसलिमों का था, बड़े सरो सामान से उसके मुक़ाबले को निकली । हवाज़िन के लोग तीर चलाने में अपना जवाब नहीं रखते थे । उनकी पहली ही बाढ़ में मुसलमानों के पांव उखड़ गए ।

अगरचे मुसलमानों पर अब तीरों की बाढ़ हो रही थी और उनकी बारह हज़ार फ़ौज हो गई थी, मगर हजूर सल्ल० अपनी जगह पर थे। आप सल्ल० ने दाहिनी तरफ़ देखा और पुकारा, ऐ अंसार के गिरोह ! आवाज़ के साथ जवाब मिला कि हम हाज़िर हैं, फिर अपनी बाईं तरफ़ पुकारा अब भी वही आवाज़ आयी। आप सल्ल० सवारी से उतर पड़े और जोश भरी आवाज़ में फ़रमाया, मैं हूं खुदा का बंदा और उसका पैगम्बर, मैं बिला शुबा पैगम्बर हूं और अब्दुल मुत्तालिब का फ़रज़ंद हूं। हज़रत अब्बास रज़ि० ने मुसलमानों को आवाज़ दी ओ अंसार के गिरोह ! और ऐ वह लोगों ! जिन्होंने इस्लाम पर जान देने की बेअत की है, आगे बढ़ो। इन असर में डूबी हुई आवाज़ों का कानों में पड़ना था कि इस्लाम के बहादुर पलट पड़े और इस जोश से बढ़े कि ज़रहें उतार कर फैंक दीं और घोड़ों से कूद पड़े। अब मैदान का रंग बदल गया। काफ़िरों की फ़ौज 'काई' की तरह फट गई और उनके लश्कर में भगदड़ मच गई।

काफ़िरों की फ़ौज का कुछ हिस्सा भाग कर तायफ़ में जमा हुआ। तायफ़ में सक़ीफ़ का क़बीला अपने को कुरैश के बराबर जानता था। उन का क़िला भी बड़ा मज़बूत था और क़िले में लड़ाई का सारा सामान भी था। उन्होंने क़िला बंद करके लड़ाई शुरु की। मुसलमानों ने क़िले पर बार बार हमले किये लेकिन क़िला फ़तह नहीं हुआ। मुसलमानों को इस क़िले को यूं छोड़कर हटना मंज़ूर न था। उन्होंने रसूलुल्लाह सल्ल० से एक दिन का मौक़ा चाहा। इजाज़त मिली तो दूसरे दिन बड़े ज़ोर से हमला किया मगर कामियाबी अब भी दूर थी। मुसलमानों ने अर्ज़ की, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! इनके हक़ में बददुआ कीजिए। बरकत वाले होंट हिले तो यह लफ्ज़ निकले "ऐ खुदा ! सक़ीफ़ को हिदायत नसीब कर और उनको इस्लाम के आसताने पर ला। दुआ का यह तीर न चूका। दो साल भी गुज़रने नहीं पाए थे कि सक़ीफ़ के लोगों में खुद मदीने में आकर इस्लाम का कलिमा पढ़ा।

ग़नीमत का माल बांटना और हुज़ूर सल्ल० की तक़रीर

तायफ़ का घेरा छोड़ कर आप सल्ल० ने जाराना नाम की जगह पर पड़ाव डाला। लड़ाई की लूट का बहुत सा सामान साथ था। ६ हज़ार क़ैदी, चौबीस हज़ार ऊंट, चालीस हज़ार बकरियां और चार हज़ार औक़िया (एक अरबी तौल) चांदी। रहम देखो कि क़ैदियों को लेकर आप सल्ल० यहां इन्तिज़ार करते रहे कि उनके रिश्ते दार आयें और उनको छुड़ा ले जायें, लेकिन कई दिन गुज़र गये और कोई नहीं आया, तब लूट के माल के पांच हिस्से किये गये। चार हिस्से सिपाहियों में बंट गये और पांचवा हिस्सा ग़रीबों, मिस्कीनों और इस्लाम के दूसरे ज़रुरी कामों के लिये रसूलुल्लाह सल्ल० के हाथ में रहा।

आप सल्ल० ने मक्का और मक्का के चारों तरफ़ के बहुत से नव मुस्लिम रईसों को जो अभी-अभी इस्लाम लाए थे, उन की तसल्ली और इतमीनान के लिये इस लड़ाई के लूट के माल में बहुत सा सामान दिया। कुछ अंसारी नव जवनों को जो हुज़ूर सल्ल० की इस ख़ास ईनाम भेद को न जानते थे यह ग़लत फ़हमी हुई कि हुज़ूर सल्ल० ने क़ुरैश को ईनाम दिया और हमको नहीं दिया, हालांकि लड़ाई का असली ज़ोर हम ही ने संभाला और अब तक हमारी तलवारों से क़ुरैश के ख़ून के क़तरे टपकते हैं, कुछ नव जवान अंसार बोल उठे कि मुश्किलों के वक़्त हमारी याद होती है और इनाम दूसरों को मिलता है।

आंहज़रत सल्ल० ने यह चरचे सुने तो अंसार को एक ख़ेमे में अलग बुलाकर पूछा कि क्या तुम ने ऐसा कहा? अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! हमारे बड़ों में से किसी ने यह नहीं कहा, हां कुछ नव जवानों

के मुंह से यह बात निकली थी । यह मालूम कर लेने के बाद आप सल्ल० ने उनके सामने यह तक़रीर फ़रमायी, जिसका हर जुमला असर में डूबा हुआ था । फ़रमाया --

" क्या यह सच नहीं कि तुम पहले राह से हटे थे ? तो ख़ुदा ने मेरे ज़रिए से तुम को सीधी राह दिखायी । तुम बिखरे थे, तो ख़ुदा ने मेरे ज़रिए तूम को एक कर दिया । तुम ग़रीब थे, तो ख़ुदा ने मेरे ज़रिए तूम को दौलतमंद बनाया ।"

आप सल्ल० यह फ़रमाते जाते थे और हर जुम्ले पर अंसार कहते जाते थे कि ख़ुदा और उसके रसूल सल्ल० का अहसान सब से बढ़कर है । आप सल्ल० ने फ़रमाया, नहीं, तुम यह जवाब दे सकते हो, " ऐ मुहम्मद (सल्ल०) तूझ को जब लोगों ने झुटलाया तो हमने तूझको सच माना । तूझको जब लोगों ने छोड़ दिया तो हम ने तेरा साथ दिया । तू ग़रीब आया था, तो हमने हर तरह तेरी मदद की । "

यह कहकर आप सल्ल० ने फ़रमाया, " तुम यह जवाब देते जाओ और में यह कहता जाऊंगा कि तुम सच कहते हो, लेकिन ऐ अंसारियों ! क्या तमको यह पसंद नहीं कि और लोग ऊंट और बकरियां लेकर जाऐं और तुम मुहम्मद सल्ल० को लेकर अपने घर जाओ ? "

यह सुनकर अंसारी बे अख़्तियार चिल्ला उठे कि हमको सिर्फ मुहम्मद सल्ल० चाहिये । अक्सर लोगों का यह हाल हुआ कि रोते-रोते दाढ़िया तर हो गई । इसके बाद आप सल्ल० ने अंसार को समझाया कि मक्के के लोग कुछ नये नये इस्लाम लाये थे, इसलिये उन को जो कुछ मिला वह हक़ के तौर पर नहीं, बल्कि इस्लाम की नेमत, उनको मालूम करना मक़सद था ।

इस बीच में क़ैदियो को छुड़ाने के लिये कुछ लोग आप सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए । उनमें औस क़बीले के भी कुछ लोग थे, जिनमें दाई हलीमा थीं, जिनका बचपन में आप ने दूध पिया था । आप ने फ़रमाया,

अब्दुल मुत्तालिब के खानदान का जितना हिस्सा है वह तुम्हारा है, लेकिन कैदियों की आम रिहाई की सूरत यह है कि नमाज़ के बाद जब मजमा हो तो तुम सब के सामने अपनी दरख्वास्त करो । ज़ुहर की नमाज़ के बाद उन्होंने सब मुसलमानों के सामने अपनी दरख्वास्त पेश की तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि मुझे सिर्फ़ अपने खानदान पर अख्तियार है, लेकिन मैं आम मुसलमानों से तुम्हारी सिफ़ारिश करता हूं । यह सुनना था कि सारे मुसलमान बोल उठे, हमारा हिस्सा भी हाज़िर है । इसतरह छः हज़ार कैदी अचानक आज़ाद थे ।

रूमी खतरा

तबूक की लड़ाई

उस ज़माने में शाम और मिस्र के मुल्क ईसाई रूमियों के हाथ में थे जिनकी राजधानी कुस्तुनतुनिया थी । शाम की सरहदें हिजाज़ से मिली हुई थीं। हिजाज़ में इस्लाम की नई कूवत का हाल सुनकर रूमियों में खलबली थी। उसके आस-पास कुछ अरब सरदार जो ईसाई हो गए थे, रूमियों की मातहती में काम कर रहे थे । उन अरब सरदारों में गस्सानी खानदान के अरब सब में ताक़तवर थे और वही रूमियों की तरफ़ से इस काम पर लगाए गए । पल-पल मदीना में यह खबरें फैलती थीं कि गस्सानी मदीना पर चढ़ाई की फ़िक्रें कर रहा है । शाम के नब्ती सौदागरों ने आकर बयान किया कि रूमियों ने शाम में बड़ी भारी फौज इकट्ठा कर ली है जो हर तरह के सामान से तैयार है ।

आं हज़रत सल्ल० ने यह खबरें सुनकर मुसलमान गाज़ियों को भी तैयारी का हुक्म दिया । इत्तिफ़ाक़ यह कि सख्त गर्मियों का ज़माना था । मुल्क में सूखे के आसार भी थे, मुनाफ़िक़ जो दिल से मुसलमान नहीं थे उनके लिये यह बड़ी आज़माईश का वक्त आ गया । वह लड़ाई से जी चुराते थे और

दूसरों को भी परदे में रोकते थे। मगर जोश से भरे हुए मुसलमानों के लिए यह उनकी ईमान की ताज़गी का नया मौक़ा हाथ आया था कि अब अरब के कुछ क़बीलों का सामना नहीं था, बल्कि दुनिया की एक बड़ी सल्तनत से मुक़ाबला था। दौलतमंद सहाबियों ने भी बड़ी रक़्में पेश कीं। चूंकि सफ़र दूर का था और सवारियों का इन्तिज़ाम थोड़ा था, इसलिये कुछ मजबूर मुसलमान रो-रो कर अर्ज़ करते कि हुज़ूर सल्ल० सफ़र के सामान का इन्तिज़ाम फ़रमा दें तो साथ चलने की सआदत मिले। यह देख कर हज़रत उस्मान रज़ि० ने फौज के लिये तीन सौ ऊंट पेश किए और आंहज़रत सल्ल० ने उन को दुआ दी।

आं हज़रत सल्ल० जब मदीना से बाहर जाते तो किसी न किसी को शहर का हाकिम बना कर जाते। आं हज़रत सल्ल० की बीवियां इस बार साथ नहीं जा रहीं थीं, इसलिये किसी ख़ास नातेदार का यहां छोड़ जाना मुनासिब था इस लिए इस बार यह मंसब हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० के सुपुर्द हुआ। उन्होंने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप मुझे बच्चों और औरतों में छोड़ जाते हैं। इर्शाद हुआ क्या तुम्हें यह पसंद नहीं कि तुम को मुझसे वह निस्बत हो जो हारून अलै० को मूसा अलै० से थी ? आपका यह इर्शाद हज़रत अली रज़ि० के लिए वह फ़ख्र है जिसको कभी भुलाया नहीं जा सकता।

ग़रज़ यह कि आप तीस हज़ार फौज के साथ मदीने से निकले जिसमें दस हज़ार सवार थे। तबूक पहुंच कर मालूम हुआ कि रूमियों के हम्ले की ख़बर सही न थी, मगर इतना सही था कि इस्लाम की नई ताक़त के मुक़ाबले के लिये ग़स्सानी रईस दौड़ धूप कर रहे थे। आं हज़रत सल्ल० तबूक में बीस दिन ठहरे। इस ठहरने का असर यह हुआ कि तीस हज़ार मुसलमानों की यह पाकीज़ा जमाअत जो ज़ाहिरी तौर पर सिपाही और हक़ीक़त में आशिक़-इलाही थी, आस पास के शहरों पर अपना असर डाले बग़ैर न रह सकी।

जज़िया :- इस्लाम में पिछले पैग़म्बरों की उम्मतों के साथ यह

रियायत रखी गई है कि वह थोड़ा सा महसूल देकर मुसलमानों की रिआया बन जाऐं, तो मुसलमान उनकी हर तरह की हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी उठाऐं । इस महसूल का नाम कुरान पाक में 'जज़िया' रखा गया है । यह पहला मौका था कि कोई ग़ैर मुस्लिम कौम मुसलमानों की हुकूमत में आती है । एला हलीज़ अक्बा के पास अरबों की एक छोटी सी रियासत थी । उसके रईस यूहन्ना ने नबी सल्ल० की ख़िदमत में आकर जज़िया देकर मुसलमानों की हिफ़ाज़त में रहना मंज़ूर किया । जिरबा और आज़रुह के ईसाई अरबों ने भी जज़िया देकर मुसलमानों से सुलह कर ली । दमिश्क के पांच मंज़िल उधर ही दोमतलजंदल में एक अरब सरदार उकेदर नाम का था जो रूम के कैसर के असर में था । मुसलमानों के चार सौ सवारों के साथ उसपर हम्ला किया और उसको पकड़ कर नबी सल्ल० की खिदमत में लाए । उसने इस शर्त पर रिहाई पाई कि वह मदीने आकर सुलह की शर्तें पेश करे चुनांचे वह अपने भाई के साथ मदीने आया और अमान पाई ।

तबूक का सफ़र इस हैसियत से कि यह अरब के बाहर की दो सबसे बड़ी ताकतों में से एक सक सर टकराने की सब से पहली कामयाब कोशिश थी, बहुत अहम था, इसलिये आं हज़रत सल्ल० की खैरियत से वापसी पर मुसलमानों ने बड़ी खुशी मनाई । मदीने के लोग शौक के आलम में रसूलुल्लाह सल्ल० को लेने के लिये शहर से बाहर निकले औरतें भी घरों से बाहर निकल आयीं और लड़कियों ने अगवानी का यह गीत गाया ।

तर्जुमा :– हम पर चांद निकला विदा की घाटियों से खुदा का शुक्र हम पर फर्ज़ है । जब तक दुनिया में खुदा का कोई पुकारने वाला बाकी है।

इस्लाम के ज़माने का पहला बाक़ायदा हज और बराअत का एलान

इस्लाम की दावत शुरु हुए बाईस साल हो चुके थे। बाईस साल की लगातार कोशिशों से अब अरब का जर्रा-जर्रा इस्लाम के नूर से चमक रहा था। ला इला ह इल्लल्लाह की आवाज़ें उसकी हर घाटी से ऊंची हो रही थीं। यमन की सरहद से लेकर शाम की सरहद तक अब इस्लाम की हुकूमत थी और खुदा का घर अब तौहीद का मर्कज़ बन चुका था। अब वक्त आया कि इस्लाम का वह मज़हबी दरबार जोक हज के नाम से मश्हूर है, अल्लाह के बताए और हजरत इबराहीम अलै० के बनाए हुए दस्तूर के मुताबिक़ आरासता हो।

तबूक से वापसी पर आं हज़रत सल्ल० ने ९ हिजरी में ज़ीक़दा के आखिर या ज़िल हिज्जा के शुरु महीने में तीन सौ मुसलमानों का क़ाफ़िला मदीने से मक्का को रवाना फ़रमाया। हज़रत अबु बक्र रज़ि० उस क़फ़िले के सरदार, हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० उसके पीछे और हज़रत साद बिन अबी विक़ास रज़ि०, हज़रत जाबिर रज़ि० और हज़रत अबु हूरैरह रज़ि० मुनादी और मुअल्लिम बनाए गए थे और कुर्बानी के लिए बीस ऊंट साथ थे।

कुरआन ने इस हज का नाम बड़ा हज (हजे अक्बर) रखा है, क्योंकि यह कुफ़्र की हुकूमत के खत्म और इस्लाम के अहद के शुरु होने का पहला एलान था। हज़रत अबुबक्र रज़ि० ने लोगों को हज के असली तरीक़े बताए और सिखाए और कुर्बानी के दिन खड़े होकर इस्लाम का खुत्बा पढ़ा और उन के बाद हज़रत अली बिन अबीतालिब रज़ि० ने बराअत की उस सूरः से चालीस आयतें पढ़कर सुनायीं, जिनमें काफ़िरों से हर तरह के ताल्लुक़ के तौड़े जाने का ऐलान था और मुनादी कर दी गई कि अब से कोई मुश्रिक

खाना-काबा में न आने पाएगा और न कोई नंगा होकर हज कर सकेगा और सुलह के वह सारे समझोते, जो मुश्रिकों से हुए थे, आज से चार महीनें बाद सब टूट जाएंगे।

क्या अजब बात है कि कुरैश जो बीस साल तक तलवार की नोक से इस्लाम का मुक़ाबला करते रहे। वह मक्का के फ़तह हो जाने के बाद किसी तरह की ज़ोर ज़बर्दस्ती और लालच के बग़ैर सिर्फ़ इस्लाम का गहरा रंग और मुसलमान होते चले गये और जो अब तक बचे रहे थे। वह इस ऐलान के बाद इस्लाम के साए में आ गए।

अरब के सूबों में इस्लाम की आम मुनादी

अब अरब का हर ज़र्रा आफ़ताबे रिसालत के दामन से लिपटा था। तौहीद के प्रचार की मुश्किल का हर-हर पत्थर हट चुका था।और सारे हिजाज़ में इस्लाम की हुकूमत थी, लेकिन उनमें इस्लाम की आम मुनादी नहीं हुई थीं। अब, जबकि कुरैश और उनके साथी क़बीलों की मुख़ालफ़त की हर कोशिश नाकाम हो चुकी, वक़्त आया कि दूर-दूर के इलाक़ों में भी इस्लाम की मुनादी की जाए और शाह और रिआया, अमीर और फ़क़ीर हर एक को सच्चाई की दावत दी जाए।

अरब के सारे सूब़ों में बड़ा यमन का सूबा था, जो लगभग पचास साठ साल से ईरानियों के क़ब्ज़े में था। यमन के एक बड़े क़बीले दौस के रईस तुफ़ैल बिन अम्र रज़ि० ने मक्का जाकर बहुत पहले इस्लाम क़ुबूल कर लिया था और उन के असर से उस क़बीले के कई आदमी वक़्त-वक़्त से मुसलामन होते रहे। सन ७ हिजरी में जब आप सल्ल० ख़ैबर में थे दौस के बहुत से लोग मुसलमान होकर मदीना चले आए थे। मशहूर सहाबी हज़रत

अबुहुरैरा रज़ि० उन्हीं में थे । अशअर नाम का यमन के एक दूसरे क़बीले में भी लोग आप ही आप मुसलमान हो चुके थे । मशहूर सहाबी हज़रत अबुमूसा अशअरी रज़ि० उसी क़बीले के थे । ये लोग भी मदीना आकर बस गए थे ।

यमन में हमदान का क़बीला बहुत मशहूर था । उस क़बीले ने जब इस्लाम का नाम सुना तो अपने रईस आमिर बिन फ़हर को इस नए दीन के जांचने के लिए मदीना भेजा । उस ने वहां पहुंच कर जो कुछ देखा, उसका यह असर यह हुआ कि इस्लाम की सच्चाई उसके दिल में बस गई ! वह वापस आया, अपने खानदान में इस्लाम का नूर फैलाया ।

यमन के कुछ कब़ीलों में इस्लाम के प्रचार का काम करने के लिए पहले हज़रत खालिद रज़ि० भेजे गए । वह ६ महीने तक अपना काम करते रहे मगर कामयाब न हो सके यह देखकर आप सल्ल० ने उनको वापस बुला लिया और उनकी जगह हज़रत अली बिन अबी तालिब को भेजा । हज़रत अली मुर्तज़ा ने उनके सब रईसों को बुलाया और आप सल्ल० का मुबारक खत पढ़कर सुनाया, साथ ही सारा का सारा कब़ीला मुसलमान था, चुनांचे हमदान, जुज़ैमा ओर मज़हब के क़बीलो में इस्लाम की रौशनी हज़रत अली मुर्तज़ा के ज़रिये ही से फैली । यमन के दूसरे शहरों में इस्लाम की दावत फैलाने के लिये दूसरे मशहूर सहाबी मुकर्रर हुए । चुनांचे सनआ में जो यमन की राजधानी थी, खालिद बिन सैद रज़ि० की कोशिश कामयाब हुई । तै का क़बीला इस्लाम से पहले इसाई था, उस वक्त हातिम ताई का बेटा अदी उस क़बीले का सरदार था । वह नबी सल्ल० की खिदमत में हाज़िर हुआ और हुज़ूर सल्ल० की खाकसारी और मजबूरों से हमदर्दी देख कर मुसलमान हो गया और उसी की दावत पर उसके क़बीले ने भी तौहीद का कलमा पढ़ा । हज़रत अबु मूसा अशअरी रज़ि० ने अदन और ज़ुबैद में और हज़रत मआज़ बिन जब्ल रज़ि० ने जुन्द में जाकर इस्लाम का पैग़ाम पहुंचाया । जरीर बिन अब्दुल्लाह बजली ने हुमैर के शहरों में इस्लाम फैलाया । महाजिर बिन अबी

उमैया, एक सहाबी यमन के एक शहज़ादे हारिस बिन कलाल रज़ि० को इस्लाम के घेरे में लाए। वब्र बिन यख़्लस रज़ि० ने यमन के उन ईरानी नस्ल के लोगों को जो यमन में बस गये थे, इस्लाम की खुशख़बरी सुनाई।

यमन में नज़रान का इलाक़ा ईसाई आबाद था, वहां के लोगों ने इस्लाम का ख़त पाकर अपने पादरियों को हालात मालूम करने के लिये मदीना भेजा और अगरचे वह मुसलमान नहीं हुए, लेकिन जज़िया देकर इस्लाम की हुकूमत कुबूल की नजरान में जो मुश्रिक अरब थे, उनकी हिदायत के लिये हज़रत ख़ालिद रज़ि०थेड़े दिन वहां ठहर कर उनको इस्लाम की बातें सिखाई।

बहरैन पर उस वक़्त ईरानियों की हुकूमत थी और उसकी वादियों में अरब कबीले आबाद थे, जिनमें मशहूर और असर वाले खानदान अब्दुलक़ैस, बक्र बिन वायल और तमीन थे। उनमें से अबदुल क़ैस के क़बीले से मतफ़ज़ बिन हयान तिजारत के लिये निकले। रास्ते में मदीना पड़ता था वहां ठहरे। आं हज़रत सल्ल० को उनका आना मालूम हुआ तो उनके पास तशरीफ़ ले गए और इस्लाम की दावत दी। उन्होंने कुबूल किया और मुसलमान हो गए। यहां रहकर उन्होने सूर: फ़ातिहा और इक़्रा सीखी। आप सल्ल० ने उनको एक फ़रमाना लिख कर दिया। जब वह लौट कर घर गए, पहले अपने इस नए मज़हब को छिपाया, लेकिन उनकी बीवी ने उनको नमाज़ पढ़ते देख लिया और अपने बाप मंज़र से शिकायत की। उन्होंने मनकज़ रज़ि० से पूछा, बातचीत के बाद मंज़र भी मुसलमान हो गए। अब दोनों ने लोगों को जमा करके आं हज़रत सल्ल० का मुबारक नाम सुनाया और सब ने इस्लाम कुबूल किया।

बहरैन में एक जगह जुवासा थी, जिसमें अब्दुल क़ैस का क़बीला था। यहां बहुत पहले इस्लाम पहुंच चुका था, मदीना के बाद जुमा की नमाज़ सबसे पहले यहीं के लोगों ने अदा की। सन ८ हिजरी में बहरैन का अरब रईस

मंज़र बिन सादी ने अला बिन हिज़रमी की दावत पर इस्लाम कुबूल किया और उनके साथ वहां के सारे अरब और ईरानी भी मुसलमान हो गए। बहरैन में हिज्र नाम की ऐक जगह थी, वहां के ईरानी हाकिम सैखबत ने हज़रत सल्ल० का खत पाकर इस्लाम की दौलत पायी।

अमान में अज़ू कबीला आबाद था उबैद और जाफ़र यहां के रईस थे। सन ८ हिजरी में आं हज़रत सल्ल० ने हज़रत अबु ज़ैद अंसारी रज़ि० को जो कुरआन के हाफ़िज़ थे और हज़रत अम्र बिन आस को अपना खत देकर उनके पास भेजा। दोनों रईसों ने इस्लाम कुबूल किया और वहां के सारे लोग, उनके कहने से मुसलमान हुए।

शाम की हदों में कई रईस थे। उनमें से एक फ़र्दा रज़ि० थे, जिनकी रियासत अमान में थी, वह रूमियों के मातहत थे। वह इस्लाम को जानने पर मुसलमान हो गए। रूमियों को उनका मुसलमान होना मालूम हूआ तो उनको पकड़ कर फांसी दे दी। उस वक़ अरबी का एक शेअर उस बे गुनाह शहीद की ज़बान पर था जिसका तर्जुमा यह है–

" मुसलमान सरदारों को मेरा यह पैग़ाम पहुंचा दो कि मेरा तन, मन और मेरी इज़्ज़त सब परवरदिगार के नाम पर कुर्बान है।"

मतलब यह कि इन कोशिशों से इसी तरह इस्लाम अरब के एक–एक कोने में फैल गया और वह वक्त आया कि अरब में कोई मुश्रिक बाक़ी न रहा।

दीन का पूरा होना और इस्लामी निज़ाम की बुनियाद रखना

आं हज़रत सल्ल० खुदा का पैग़ाम लेकर दुनिया में तशरीफ़ लाए थे। दुनिया ने इसकी मुख़ालफ़त की और अरब वालों ने उसके मानने से इनकार ही नहीं किया, बल्कि उसके मिटाने की हर तरह कोशिशें कीं। मुसलमानों को तरह तरह से सताया। उनके घरों से निकाला और वह बे सर व सामान, अपने घर बार छोड़कर कभी हब्शा के मुल्क में कभी दूर-दूर के शहरों में निकल जाने पर मजबूर हुए और इस तरह तेरह साल तक हुज़ूर सल्ल० और साथियों ने पूरे सब्र और मज़बूती से इन सख़्तियों को झेला। आख़िर कुफ़्र की ताक़तों ने फ़ौज व लश्कर और तलवार व ख़न्जर से मुसलमानों को ख़त्म करने तैयारी की और लगातार नौ साल तक उनकी यह कोशिश जारी रही। मुसलमानों ने उनकी इस ज़ालिमाना ताक़त का भी सामना किया और अल्लाह तआला की मदद से वह इस मैदान में भी कामयाब रहे और धीरे धीरे मुश्किल का हर पत्थर उनके रास्ते से हट गया। अरब का एक-एक कोना, इस्लाम के झंडे के नीचे जमा हो गया और *ला इ ला ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह* की आवाज़ से अरब की पूरी ज़मीन गूंज उठी, तो वक़्त आया कि दीन अपने पूरे अहकाम के साथ पूरा हो और उसका निज़ाम अरब के मुल्क में क़ायम कर दिया जाए।

हज़रत आयशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि सब से पहले क़ुरआन पाक की वह आयतें उतरीं जो दिलों में नर्मी, रुहों में गर्मी, और ख्यालों में बदलाव पैदा करें। जब यह हो चुका, तो अहकाम की आयतें आयीं। अगर ऐसा न होता और पहले ही दिन हुक्म दिया जाता कि लोगों! शराब छोड़ दो, तो कौन इसको मानता। इस्लाम की दावत का यह ढंग क़ुदरती था और फ़ितरत के

ठीक मुताबिक़ । आं हज़रत सल्ल० जब मदीना में रहे, तौहीद की तालीम, अल्लाह तआला की बेहद कुदरत और बेहद रहमत, बुत परस्ती की बुराई, बुतों की बेबसी, अल्लाह के रसूलों के किस्से, रसूलों के न मानने से कौमों पर अज़ाब,मरने के बाद दौबारा जी उठना, खुदा के सामने अपने कामों के लिये जवाब देने और अच्छों के लिये जन्नत और बुरों के लिये दोज़ख के समां दिखाए जाते रहे । साथ ही साथ अल्लाह की सच्ची इबादत का ढंग, गरीबों के साथ महरबानी, बेकसों के साथ प्यार और अख़्लाक़ की दूसरी अच्छी-अच्छी बातों के सबक़ उनको सिखाए जाते रहे । नतीजा यह हुआ कि अल्लाह के मानने वालों का एक ऐसा गिरोह पैदा हो गया जो उसके हर हुक्म पर गर्दन झुकाने को तैयार हो गया । उस वक्त अल्लाह ने अपने रसूल सल्ल० के ज़रिए अपने सारे हुक्मों से उनको जानकारी दी ।

नमाज़ – उन को बताया गया कि दिन में पांच बार हज़रत इब्राहीम अलै० की मस्जिद (काबा) की तरफ़ मुंह करके खुदा के हुज़ूर में खड़े हों, घुटनों के बल झुक कर (रुकूअ) अपनी बंदगी का इक़रार करें, फिर ज़मीन पर सर रखकर (सज्दा) अपनी आजिज़ी (बेबसी) को अच्छे तौर पर ज़ाहिर करें । यह नमाज़ कहलायी । यह नमाज़ सारे मुसलमान एक वक्त पर एक जगह इकट्ठे होकर, एक इमाम के पीछे एक साथ अदा करें । इस का मतलब यह हुआ कि नमाज़ जिस तरह खुदा और बंदे के लगाव की सबसे मज़बूत कड़ी है । इसी तरह यह मुसलमानों के कौमी निज़ाम का सच्चा रुप भी है यानी सारे मुसलमान एक होकर हर मर्तबे के फ़र्क़ की कैद को तोड़ कर, एक सफ़ में खड़े होकर एक ऐसी 'एक जमाअत' का रुप बन जायें कि इन के तमाम ज़ाहिरी फ़र्क़ मिट जायें और सब मिल कर एक इमाम के एक इशारे पर हरकत करें । इसी लिये आप सल्ल० ने फ़रमाया कि नमाज़ में सारे मुक्तदी पांव से पांव मिलाकर अच्छी तरह मिल कर खड़े हों, ताकि उनके दिल भी इसी तरह मिल जायें और यह फ़रमाया कि जो शख़्स नमाज़ में इमाम

के उठने-बैठने से पहले उठ बैठ जाए, उसको डरना चाहिए कि उसकी सूरत बदल कर गधा न बन जाए जो अपनी बेवकूफ़ी के लिये मशहूर है।

इस्लाम के सारे अहकाम में नमाज़ की अहमियत सबसे बढ़ी हुई है, इसी लिये इसको दीन का सतून कहा गया है। अरब की बे-इतमिनानी अब जैसे ही दूर हुई, आं हज़रत सल्ल० ने सबसे पहले नमाज़ की तरफ़ ध्यान दिलाया। उसके अर्कान को पूरा करने और अव्क़ात (वक़्त) मुक़र्रर तो मक्के ही में हो चुका था, मगर अब जैसे-जैसे इत्मीनानबढ़ता गया। उसकी ज़ाहिरी और अन्दरुनी कैफ़ियतों की तरफ़ तवज्जोह बढ़ती गई। अब उसमें कुरआन और दुआ के सिवा हर तरह की इंसानी बोल चाल, इशारे, सलाम व बात-चीत वगैरह की मनाही हो गई और एक साथ, एक जगह मिलकर नमाज़ पढ़ना जिस को जमाअत कहते हैं, वाजिब ठहराया गया। नमाज़ की सिम्त रुख़ना काबा मुक़र्रर हुई, ताकि दुनिया भर के मुसलमान वह्दत के एक रंग में रंग जायें।

हफ़्ते की इज्तिमायी नमाज़, जिस का नाम जुमा है, अगरचे मक्का ही में फ़र्ज़ हो चुकी थी, मगर मक्का की बे-इत्मीनानी में जब चार मुसलमान भी मिल कर एक जगह नमाज़ नहीं पढ़ सकते थे, तो आबादी के सारे मुसलमान मिलकर एक साथ नमाज़ किस तरह पढ़ सकते थे, इस लिए जुमा की नमाज़ मक्का में अदा नहीं हो सकती थी, मगर मुसलमानों को मदीने में जैसे ही इत्मीनान मिला, पहले ही हफ़्ते में दिन की रौशनी में दोपहर के वक़्त ज़वाल के बाद ही जुमा की नमाज़ अदा की और इमाम ने जुमा का ख़ुत्बा पढ़ा। दूसरे हफ़्तेमें ख़ुद आं हज़रत सल्ल० तशरीफ़ ले आए और उस वक़्त से आप सल्ल० जुमा की नमाज़ की इमामत करने लगे और नमाज़ से पहले ख़ुदा की तारीफ़ (हम्द) और क़ुरआन की तिलावत के साथ मुसलमानों की तालीम, तंबीह और नसीहत से भरी हुई छोटी तक़रीर जिस को ख़ुत्बा कहते हैं, फ़रमाने लगे।

मदीने से बाहर दूसरे सूबों के शहरों और आबादियों में मदीने ही से या उन ही जगहों के मुसलमानों के मुअल्लम, मुबल्लिग़ (प्रचार करने वाले) मुफती और पेशवा की हैसियत रखते थे । वह उनको अच्छी बातें सिखाते, बुरी बातों से रोकते, उनको जरुरत के मस्अले बताते और बच्चों को अल्लाह रसूल का कलमा सिखाते, दीन की बातें और कुरआन की तालीम देते ।

इस मतलब के लिये हर आबादी में खुदा के नाम से नमाजत्र और मुसलमानों की दूसरी इज्तिमाई ज़रुरतों के लिये मस्जिदें बनाई गई । यह मस्जिदें उनकी नमाज़ और जमाअत का घर, उनकी तालीम का मर्दसा, उनके वाअज़ व नसीहत का मक़ाम, उनके कौमी व दीनी कामों का मशिवरा करने के लिये जगह और उनके काज़ियों और हाकिमों की अदालत क़रार पाई ।

ज़कात– ग़रीब मुसलमानों की मदद के लिये ज़कात का निज़ाम मुक़र्रर हुआ यानी कि हर मुसलमान, हर साल अपने उस सोने चांदी के माल पर जो उसकी ज़रुरत से ज़्यादा हो, साल भर के बाद उसका चालीसवां हिस्सा खुदा के रास्ते में दे । इसी तरह अगर किसी के पास सोने चांदी के अलावाह जानवर हों तो उन पर मुख़्तलिफ़ तायदादों के मुताबिक़ एक हिस्सा खुदा के कामों के लिये फ़र्ज़ किया गया । यह सारी रक़में और जानवरों और पैदावारें, आंह हज़रत सल्ल० की ज़िन्दगी में नबी सल्ल० की मस्जिद में हज़रत सल्ल० के मौअज़्ज़िन, हजरत बिलाल रज़ि० के पास या किसी और आमिल के पास जमा होती और ज़रुरत के मुताबिक़, ज़रूरतमंदो में बांट दी जाती । आंह हज़रत सल्ल० के बाद इस काम के लिये एक अलग दफ्तर बना दिया गया, जिसका नाम बैतुलमाल रखा गया । वह बैतुल माल मुसलमानों के इमाम की निगरानी में रहता और ज़रुरत मुसलमानों की ज़रुरतें उस से पूरी की जातीं ।

सन ९ हिजरी में जब सारे अरब में मुसलमानों का बिखराव खत्म हो गया तो अरब के हर हिस्से में ज़कात को हासिल करने और वसूल करने के

लिये लोग मुक़र्रर हुए जिनको आमिल कहते हैं। यह लोग हर जगह जाकर मुसलमानों से ज़कात का माल वसूल करते और लाकर आं हज़रत सल्ल० की ख़िदमत में बैतुलमाल में जमा करते और अपना हिसाब पेश करते ।

रोज़ा – मुसलमानों को अल्लाह की तरफ़ से क़ुरआन की सूरत में ज़िनदगी का जो हिदायत-नामा मिला, उसकी ख़ुशी और मसर्रत की तक़रीब में उसकी सालाना यादगार उसी महीने में, जिसमें क़ुरआन पाक पहली बार आं हज़रत सल्ल० को मिला यानी रमज़ान के महीने में हर साल मनाना ज़रूरी ठहराया गया, ताकि हम अल्लाह तआला की इस नेमत पर शुक्रिया अदा करें और महीना भर इसी कैफ़ियत में गुज़ारें, जिस कैफ़ियत में इस महीने को इस्लाम के पैग़म्बर और क़ुरआन के पहले मुख़ातिब हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने गुज़ारा यानी सुबह से शाम तक महीने भर हम खाने पीने और दूसरे नफ़सानी कामों से परहेज़ करें, जिसका नाम रोज़ा है और हो सके तो रातों को खड़े होकर दो दो रकअतों में कलाम पाक सुनें, जिन को तरावीह कहते हैं और दूसरी इबादतों में यह महीना गुज़ारें। महीने के ख़त्म होने पर शव्वाल की पहली तारीख़ को ईद का दिन मनाऐं। अच्छे अच्छे कपड़े पहनें, ख़ुशबू लगाऐं और सब मिलकर ईदगाह जाकर शुक्राने की दो रकअतें अदा करें और उसी दिन नमाज़ से पहले ग़रीबों के खाने के लिये ग़ल्ले की कुछ कुछ मिक़दार या उस की क़ीमत नज़्(सद्क़ा फित्र)करें, ताकि वह भी यह दिन ख़ुशी-ख़ुशी मनायें ।

रमज़ान असल में, उस क़ुरआन पाक के उतरने का जश्न है, जो मुसलमानों की हर भलाई व बरकत की असली वजह है और इसमें रोज़ा इसलिये फ़र्ज़ हुआ कि मुसलमान यह पाकी की ज़िंदगी गुज़ारना सीखें, जिस को क़ुरआन ने तक़वा कहा है और जो क़ुरआन के उतरने की असली ग़र्ज़ है ।

हज – इस्लाम का चौथा रुक्न हज है । इस्लाम हज़रत इब्राहीम

अलै॰ के दीन हनीफ़ की असली शक्ल है, इसलिये जिसतरह रमज़ान का रोज़ा कुरआन पाक के उतरने की यादगार है, उसी तरह हज हज़रत इब्राहीम अलै॰ के दीन की यादगार है । ख़ाना काबा वह मुक़द्दस मस्जिद है, जिसको हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल अलै॰ ने ख़ुदा के नाम पर सबसे पहले बनाया था, ताकि वह दुनिया में ख़ुदा के मानने वालों का मर्कज़ हो, यहां दुनिया के हर हिस्से से एक ख़ुदा के मानने वाले साल में एक बार इकट्ठे होकर इब्राहीम अलै॰ के तरीक़े से ख़ुदा की इबादत करें ।

ख़ाना काबा वह मस्जिद है जिधर मुंह करके हर मुसलमान दिन में पांच बार अपनी नमाज़ अदा करता है । अब यह ज़रूरी ठहरा कि मुसलमानों में से जिन को ताक़त हो और उनके पास रास्ते का ख़र्च हो वह उम्र में एक बार इस मस्जिद में हाज़िर हों और हज़रत इब्राहीम अलै॰ की तरह इस मस्जिद के चारों तरफ़ फेरे करें जो तवाफ़ कहलाता है । औा सफ़ा व मर्वा नाम की दो पहाड़ियों के बीच ऐसे ही दौड़ दौड़ कर अल्लाह से दुआऐं मागें जेसे हज़रत हाजरा रज़ि॰ दौड़ी थीं और अरफ़ात व मिना के मैदानों में ख़ुदा के दरबार में गिडगिड़ा कर अपने गुनाहों की माफ़ी मांगें और मिना में आकर हज़रत इस्माईल अलै॰ की तरह कुर्बानी का जश्न मनायें और दुनिया के सारे मुसलमान एक जगह मिलकर दीन और दुनिया की भलाई की बातें करें और अपनी सारी दुनिया में फैली हुई इस्लामी ब्रादरी की भलाई की तज्वीज़ सोचें।

तौहीद के कलमे के बाद इस्लाम के यह चार रुक्न हैं । यह चारों रुक्न अब पूरे हो गए और दीन के वह अहकाम जो अख़्लाक़ की पाकी और मामलों में बराबरी और इंसाफ़ का लिहाज़ रखने के लिये ज़रूरी थे । वह मुसलमानों को सिखा दिये गए और अरब के मुल्क में मुसलमानों का ऐसा गिरोह पैदा हो गया जो मुसलमानों के दीन का नमूना और इस्लामी पैग़ाम को पहुंचाने वाला बन कर दुनिया के दूसरे हिस्सों में हिदायत का पैग़ाम अम्ल पहुंचा सके और इस तरह सारी दुनिया इस्लाम की तालीम से रौशन हो सके।

अब रसूलुल्लाह सल्ल० की तालीम से इंसानियत ने बराबरी का सबक् सीख लिया। कुरैशी और ग़ैर कुरैशी, अरब और अज्म, काले और गोरे और अमीर और ग़रीब, सब एक खुदा के बंदे होकर इस्लाम के हर हक् में और अख़िरत के हर मरतबे में बराबर ठहर गए। इंसानों का पेदा किया हुआ सारा फ़र्क् मिट गया। सब एक आदम अलै० के बेटे ठहरे और आदम मिट्टी के पुतले थे।

खुदा के सिवा हर बातिल का ख़ौफ़, आसमान व ज़मीन की हर कुव्वत का डर, हर बातिल और वसवसा, डर, देव, फरिश्ते, भूत परेत, चांद, सूरत, सितारे, नदियां, जंगल, पहाड़, गर्ज़ यह कि हर मख़्लूक्, हर ताक्त और हर माद्दी (दुनिया की चीज़ें) और रुहानी मज़हर का खुदाई डर जो कमज़ोर इंसानों पर छाया था, मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० की हक् की अवाज़ ने उस सारे तिलस्म को तोड़ कर रख दिया।

अरब वह सारे ग़लत रस्म व रिवाज, वह सारे झूठे कायदे और बेशरमी और बद-अख़्लाक़ी के पुराने दस्तूर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० की तालीम से मिट गए और वह तालीमें, मुसलमानों की ज़िनदगी के उसूल ठहरे जो कुरआन लाया और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने सिखाए। अब एक नई कौम, नई उम्मत, नया तमद्दुन नया कानून और नई हुकूमत ज़मीन के परदे में कायम हुई।

हमारे पैग़म्बर का आख़िरी हज

हज्जतुलविदा सन १० हिजरी

अल्लाह तआला ने मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० को जिस मक़सद के लिये ज़मीन के परदे पर भेजा था, जब वह पूरा हो चुका तो ख़बर आई कि तुम्हारा काम पूरा हो चुका, अब तुम ख़ुदा के पास वापसी के लिये तैयार हो जाओ। सूर: नस्र इज़ा जा अ नसरुल-लाहि वल-फ़तहु इस वाक़िए की ख़बर है।

ज़ीक़दा सन १० हिजरी में हर तरफ मुनादी हुई कि आप सल्ल० इस इस साल हज के इरादे से मक्का मुअज़्ज़मा तशरीफ़ ले जाऐंगे। यह ख़बर अचानक पूरे अरब में फैल गई और सारा अरब साथ चलने के लिये उमड़ आया। ज़ीक़दा की २६ तारीख़ को आप सल्ल० ने गुस्ल फ़रमाया और चादर और तहबंद बांधी और जुह्र की नमाज़ के बाद मदीने से बाहर निकले। मदीने से ६ मील दूर ज़ुल हुलैफ़ा नाम की जगह पर रात गुज़ारी और दूसरे दिन दोबारा गुस्ल फ़रमा कर दो रक्अत नमाज़ अदा की और अहराम बांध कर क़सवा (आप सल्ल० की ऊंटनी का नाम) पर सवार हुए और ऊंची आवाज़ से ये लफ़्ज़ फ़रमाये जो आज तक हर हाजी का तराना है।

तर्जुमा—

ऐ ख़ुदा हम तेरे लिए हाज़िर हैं
ऐ ख़ुदा हम तेरे लिए हाज़िर हैं
तेरा कोई शरीक नहीं हम तेरे सामने हाज़िर हैं
तारीफ़ और नेमत सब तेरी हैं और बादशाही तेरी है
तेरा कोई शरीक नहीं

हज़रत जाबिर रज़ि० जो इस हदीस के बयान करने वाले हैं कहते हैं, कि हम ने नज़र उठा कर देखा आगे पीछे, दायें बायें जहां तक नज़र काम

करती थी आदमियों का जंगल नज़र आता था । जब आप सल्ल० लब्बैक फरमाते थे तो उस के साथ कम व ज़्यादा एक लाख आदमियों की ज़ुबान से यह नारा बुलंद होता था और अचानक पहाड़ों की चोटियां उसकी जवाबी आवाज़ से गूंज उठती थी । इस तरह मंज़िल-मंज़िल कर के आप सल्ल० आगे बढ़ते चले, यहां तक कि इतवार के दिन ज़ुलहिजा की ५ तारीख को मक्का में दाखिल हुए ।

काबा नज़र आया तो फ़रमाया, ऐ ख़ुदा ! इस घर को इज़्ज़त और शर्फ़ दे । काबा का तवाफ़ किया । मक़ामे इब्राहीम में खड़े होकर दो रकअत नमाज़ अदा की और सफ़ा की पहाड़ी पर चढ़ कर फ़रमाया-

" ख़ुदा के सिवा कोई माबूद नहीं, उसका कोई शरीक नहीं, उसी की बादशाही और उसी की तारीफ़ है । वही मारता और जिलाता है । वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है । कोई खुदा नहीं मगर वही अकेला खुदा उसने अपना वायदा पूरा किया । अपने बंदे की मदद की और अकेले सारे जत्थों को शिकस्त दी ।"

उमरे से फ़ारिग़ होकर आप सल्ल० ने दूसरे सहाबियों को अहराम खोल देने की हिदायत फ़रमाई । उसी वक्त अहज़रत अली मुर्तज़ा रज़ि० यमनी हाजियों के साथ मक्का पहुंचे । जुमेरात आठवीं ज़िलहिजा को आप सारे मुसलमानों के साथ मिना में ठहरे । दूसरे दिन नवीं ज़िलहिजा सुबह की नमाज़ पढ़ कर मिना से रवाना हुए । आम मुसलमानों के साथ अरफ़ात आकर ठहरे दोपहर ढल गई तो अस्वा पर सवार होकर मैदान में आए और उसी ऊंटनीपर बैठे बैठे हज का खुत्बा दिया ।

आज पहला दिन था कि इस्लाम अपने शान व रुतबे के साथ पैदा हुआ और जाहलियत की सारी बेहूदगी मिटा दी गई । आप सल्ल० ने फ़रमाया-

" हां ! जाहलियत के सारे दस्तूर और रस्म व रिवाज मेरे दोनों पांव के नीचे हैं ।"

अरब की ज़मीन हमेशा बदले के खून से रंगीन रहती थी। आज अरब की न खत्म होने वाली आपस की लड़ाईयों के सिलसिले को तोड़ा जाना है और उस के लिये नबूवत का मनादी सबसे पहले अपने खनदान का नमूना पेश करता है।

" जाहलियत के सारे खून के बदले खत्म कर दिए गए और सब से पहले मैं अपने खानदान का खून रबीआ बिन हारिस के बेटे के बदले के खून का बदला लेने का हक छोड़ता हूं (यानी दुश्मन को माफ करता हूं)।"

सारे अरब में सूदी कारोबार का एक जाल बिछा था जिससे अरब के ग़रीब मज़्दूर और काश्तकार यहूदी महाजनों और अरब सरमायदारों के हाथों में फंसे थे और हमेशा के लिये वह उनके गुलाम हो जाते थे। आज इस जाल का तार तार अलग किया जाता है और इसके लिये भी सबसे पहले अपने खानदान का नमूना पेश किया जा रहा है। इर्शाद है-

" जाहलियत के सूद मिटा दिये गए और सबसे पहला सूद जिसको मैं मिटाता हूं, वह अपने खनदान का यानी अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ि० का है।"

आज तक औरतें एक तरह से शौहरो की मन्कूला जायदाद थीं, जो जुओं में हारी और जीतीं जा सकतीं थीं। आज पहला दिन है कि यह मज़्लूम गिरोह इन्साफ की दाद पाता है। फरमाया-

" औरतों के मामले में खुदा से डरो, तुम्हारा हक औरतों पर है औरतों का तुम पर।"

औरतों के बाद इन्सानों का सबसे मज़्लूम तबका गुलामों का था। आज उसके इन्साफ पाने का दिन आया है। फरमाया-

" तुम्हारे गुलाम, तुम्हारे गुलाम, उन के हक में इन्साफ करो। जो खुद खाओ वो उनको खिलाओ और जो खुद पहनों वह उनको पहनाओ।"

अरब में अम्न व अमान न था, इसलिये जान व माल की कोई कीमत

न थी। आज अम्न व सलामती का बादशाह सारी दुनिया को सुलह का पैग़ाम देता है –

" आपस में तुम्हारी जान और तुम्हारा माल एक दूसरे के लिये कियामत तक उतना ही इज़्ज़त के क़ाबिल है जितना आज का दिन इस पाक महीने में और इस पाक शहर में।"

अम्न व अमान की इस मुनादी में सबसे पहली चीज़ इस दीनी बिरादरी का वजूद है, जिस ने क़बीलों और ख़ानदानों के रिश्तों से बढ़कर अरब के सारे क़बीलों, बल्कि दुनिया के सारे इन्सानों में इस्लामी बिरादरी का रिश्ता जोड़ दिया। इर्शाद हुआ –

" हर मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है और सारे मुसलमान भाई भाई हैं। "

दुनिया की बे-इत्मिनानी की सबसे बड़ी चीज़ जिस ने हज़ारों साल तक क़ौमों को आपस में लड़ाया है, वह क़ौमी फख्र और घमंड है। आज फख्र और घमंड का सर कुचला जाता है। ऐलान होता है –

" हां ! किसी अरबी को किसी अज्मी पर और किसी अज्मी को किसी अरबी पर कोई बड़ाई नहीं, तुम सब एक आदम अलै० के बेटे हो और आदम अलै० मिट्टी से बने थे।" इसके बाद कुछ उसूली क़ानून का ऐलान फ़रमाया –

१. ख़ुदा ने हर हक़दार को (विरासत के मुताबिक़) उसका हक़ दे दिया, अब किसी वारिस के हक़ में वसीयत जायज़ नहीं।

२. लड़का उसका है जिससे बस्तर पर वह पैदा हो ज़िना करने वाले के वह पत्थर हे और उन का हिसाब ख़ुदा के ज़िम्मे है।

३. हां, औरत को अपने शौहर के माल उसकी इजाज़त के बग़ैर किसी को कुछ देना जायज़ नहीं।

४. कर्ज़दार को कर्ज़ अदा किया जाए। आरियत लिया हुआ माल

वापस किया जाए। हंगामी भेंट वापस किये जाऐं। जो ज़मानत लेने वाला बने वह तावान का ज़िम्मेदार हो।

आज उम्मत के हाथों में उसकी हिदायत के लिये हमेशा रहने वाला चिराग़ दिया जाता है, जिसकी रोशनी में जब तक कोई चलता रहेगा, हर गुमराही से बचता रहेगा। फ़रमाया-

" मैं तुम में एक चीज़ छोड़ जाता हूं। अगर तुम ने इस को मज़बूत पकड़ लिया तो फिर कभी गुमराह न होगे और वह ख़ुदा की किताब है।"

यह फरमा कर आप ने मजमा की तरफ़ ख़िताब किया।

" तुम से ख़ुदा के यहां मेरे बारे में पूछा जाएगा, तो क्या जवाब दोगे?"

एक लाख ज़बानों ने एक साथ गवाही दी, " हम कहेंगे कि आप सल्ल० ने ख़ुदा का पैग़ाम पहुंचा दिया और अपना फर्ज़ अदा कर दिया।" यह सुन कर आप सल्ल० ने आसमान की तरफ़ उंगली उठायी और तीन बार फ़रमाया, " ऐ ख़ुदा तू गवाह रह।"

ठीक उस वक़्त जब आप सल्ल० नबूवत का आख़िरी फर्ज़ अदा कर रहे थे, ख़ुदा के दरबार से ख़ुशख़बरी आयी-

तर्जुमा – आज मैं ने तुम्हारे दीन को पूरा कर दिया और अपनी नेमत तुम पर पूरी कर दी और तुम्हारे लिये इस्लाम के दीन को चुना।

ख़ुत्बा दे चुके तो हज़रत बिलाल रज़ि० ने अज़ान दी और हज़रत सल्ल० ने ज़ुहर और असर की नमाज़ एक साथ अदा फ़रमायी, कैसा अजीब समां था कि आज से २२ साल पहले जब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने ख़ुदा की परस्तिश (पूजा) की दावत दी तो मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० और उनके साथियों के सिवा कोई गर्दन ख़ुदा के आगे झुकी न थी और २२ साल के बाद मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० के साथ एक लाख गर्दनें ख़ुदा के हुज़ूर (दरबार) में झुकी थीं और अल्लाहु अक्बर का नारा ज़र्रे-ज़र्रे से बुलंद था।

नमाज़ अदा करने के बाद नाक़ा पर सवार, मुसलमानों के साथ मोक़िफ़ तश्रीफ़ लाए और वहां खड़े होकर देर तक खड़े हेकर देर तक क़िब्ले की तरफ मुंह किए हुए दुआ व ज़ारी में लगे रहे। जब सूरज डूबने लगा तो चलने की तैयारी की। अचानक एक लाख आदमियों के समुंद्र में हलचल पैदा हो गयी। आप सल्ल० आगे बढ़ते जाते थे और हाथ से इशारा करते, ज़ुबान से फ़रमाते जाते थे "लोगों ! अम्न और सुकून के साथ। लोगों अम्न और सुकून के साथ।" मग़्रिब का वक़्त तंग हो रहा था कि सारा क़ाफ़िला मुज़दल्फ़ा नाम की जगह पर पहुंचा। यहां पहले मग़्रिब के बाद फ़ौरन इशा की नमाज़ अदा हुई। (हज में नवीं ज़िलहिज्जा को ज़ुहर और असर एक साथ और मग़्रिब व इशा एक साथ अदा की जाती है।)

सुबह सवेरे फ़ज्र की नमाज़ पढ़कर क़ाफ़िला आगे बढ़ा, जान नौछावर करने वाले दाएं-बाएं थे। ज़रूरत वाले अपनी अपनी ज़रूरत के मस्अले पूछ रहे थे और आप सल्ल० उनके जवाब देते जाते थे। जमरा पहुंच कर कंकरियां फेंकी और लोगों से ख़िताब करके फ़रमाया-

"मज़हब में ख़ुदा की मुक़र्रर की हुई हद से आगे न बढ़ना, तुम से पहली क़ौमें उसी से बर्बाद हुईं।"

इसी बीच यह बात भी फ़रमायी जिससे विदाई और रुख़्सत का इशारा मिलता था।

"हज के मस्अले जान लो मैं नहीं जानता कि फिर हज कर सकूंगा।"

यहां से निकल कर अब मिना में तश्रीफ़ लाये। दाहिने-बायें, आगे-पीछे मुसलमानों की भीड़ थी। मुहाजरीन क़िब्ला के दाहिने, अंसार बायें और बीच में आम मुसलमानों की सफ़ें थीं। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नाक़ा पर सवार थे। आप सल्ल० ने आखें उठा कर इस बहुत बड़े मजमे की तरफ़ देखा, तो नबूवत के २३ साल के कारनामे निगाहों के सामने

थे । ज़मीन से आसमान तक कुबूल और ऐतराफ़ का नूर फैला था । अब एक नई शरीअत, एक नए निज़ाम और एक नये दौर की शुरुआत थी । इसी हाल में मुहम्मद सल्ल० की जुबान फ़ैज़ तर्जुमान से यह बात अदा हुई–

" हां ! अल्लाह ने आसमान और ज़मीन को जब पैदा किया था । आज ज़माना घूम फिर कर उसी फ़ितरत पर आ गया । तुम्हारी जानें और तुम्हारी मिल्कियतें आपस में एक दूसरे के लिये वैसी ही इज़्ज़त के लायक हैं जैसे आज का दिन, इस इज़्ज़त के महीने में और इस इज़्ज़त वाली आबादी में । हां देखना ! मेरे बाद गुमराह न हो जाना कि खुद एक दूरे की गर्दनें मारने लगो । तुम को खुदा के सामने हाज़िर होना है और वह तुम से तुम्हारे कामों के बारे में पूछेगा, अगर तुम पर एक काला नकटा गुलाम भी सरदार बना दिया जाए जो तुम को खुदा की किताब के मुताबिक़ ले चले तो उस का कहा मानना ।

अपने परवरदिगार की इबादत करना, पांचों वक़्तों की नमाज़ें पढ़ना, रमज़ान के महीने का रोज़ा रखना और मेरे हुक्मों को मानना ! तुम अपने परवरदिगार की जन्नत में दाखिल होगे ।

हां ! अब शैतान इस से ना–उम्मीद हो गया कि तुम्हारे इस शहर में उसकी इबादत फिर कभी होगी । हां छोटी छाकटी बातों में उस के कहने में आ जाओगे और वह इसी से खुश होगा ।"

यह कह कर आप सल्ल० ने मजमा की तरफ़ इशारा करके फ़रमाया। " क्या मैंने अपना पैग़ाम पहुंचा दिया ?" हर तरफ़ से आवाज़ें आने लगीं, " हां ! बेशक ।" फ़रमाया, " ऐ खुदा गवाह रहना ।" यह कह कर इर्शाद फ़रमाया, ऐ खुदा ! गवाह रहना । " यह कहकर इर्शाद फ़रमाया, " जो यहां मौजूद हैं वह इस पैग़ाम को उस तक पहुंचा दें जो यहां नहीं ।" यह गोया तबलीग़ का वह फ़र्ज़ था जो हर मुसलमान की ज़िंदगी का हिस्सा है ।

इन सब के बाद आप सल्ल० सारे मुसलमानों को अलविदा कहा ।

हज के दूसरे कामों से छुट्टी मिलने के बाद, १४ ज़िलहिज्जा को फज्र की नमाज़ खना काबा में पढ़कर सारा क़ाफ़िला अपनी अपनी जगह को रवाना हो गया और आं हज़रत सल्ल० ने मुहाजरीन रज़ि० और अंसार रज़ि० के झुरमुट में मदीने की राह ली।

इन्तिक़ाल

रबीउल अव्वल सन ११ हिजरी, मई सन ६२२ ई०

हुजूर सल्ल० की पाक रुह को इस दुनिया में उसी वक़्त तक रहने की ज़रुरत थी कि नबूवत का काम पूरा और तौहीद की रौशनी से दुनिया का अंधेरा दूर हो जाये और जब यह काम पूरा हो चुका तो फिर खुदा के पास वापसी का हुक्म आ पहुंचा। विदाई हज के मौके पर आम मुसलमानों को अपने दीदार करवाकर, खुदा के आखिरी अहकाम की जानकारी दी। हज के सफर से वापस होने के दो महीने के बाद आप सल्ल० ने उन मुसलमानों से भी विदा होना चाहा जो शहादत का प्याला पी कर हमेशा की ज़िंदगी पा चुके थे। चुनांचे उहद जाकर आप सल्ल० ने शहीदों के लिये दुआ फ़रमाई और उन को ठीक इस तरह विदा किया जैसे मरने वाला अपने ज़िन्दा नातेदारों को विदा करता है। इसके बाद एक छोटी तक़रीर की जिसमें फ़रमाया–

" मैं तुम से पहले होज़ कौसर पर जा रहा हूं। इस होज़ का फैलाव इतना है जितना ऐला से हजफ़ा तक। मुझ को दुनिया के सारे खज़ानों की कुन्जियां दी गई। मुझे यह डर नहीं कि तुम मेरे बाद शिरक करने लगोगे, हां, इससे डरता हूं कि तुम दुनिया में हंसकर आपस में एक दूसरे का खून न बहाओ, तो फिर तुम भी इसी तरह बर्बाद हो जाओ जेसे पहली कौमें बर्बाद हो गई।

उहद के शहीदों के बाद आम मुसलमानों के क़ब्रिस्तान की बारी आयी। सफ़र सन ११ हिजरी की किसी बीच की तारीख़ में आधी रात को आप मुसलमानों की आम कब्रिस्तान में जिसका नाम जन्नतुल–बक़ीअ है, तशरीफ़

ले गये और उनके लिये भलाई की दुआ की। वापस आये तो तबीयत कुछ ख़राब हुई। यह बुध का दिन और उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमूना रज़ि० की बारी का दिन था। पांच दिन तक इस बीमारी की हालत में भी बारी बारी एक एक बीवी के हुजरे (कोठरी) में तशरीफ़ ले जाते। सोमवार के दिन बीमारी ज़्यादा बढ़ी तो बीवियों से इजाजत ली कि हज़रत अयशा रज़ि० के घर ठहरें। कमज़ोरी इतनी थी कि बेसहारा चल नहीं सकते थे। हज़रत अब्बास रज़ि० हजरत अली रज़ि० दोनों बाज़ू पकड़कर हज़रत आयशा रज़ि० के हुजरे में लाए।

जब तक आने जाने की ताक़त रही, मस्जिद में नमाज़ पढ़ाने को तशरीफ़ लाते रहे। सबसे आख़िरी नमाज़ आप सल्ल० ने मग़रिब की पढ़ाई, इशा का वक़्त आया, पूछा नमाज़ हो चूकी ? लोगों ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर सल्ल० का इन्तिज़ार है। आप सल्ल० ने फिर ग़ुस्ल फ़रमाया और उठना चाहा तो ग़श आ गया। कमी हुई तो फिर पूछा। नमाज़ हो चुकी ? कहा गया कि हुज़ूर सल्ल० का इन्तिज़ार है। कमी हुई तो फिर पूछा। तीसरी बार मुबारक जिस्म पर पानी डाला गया फिर जब उठने का इरादा किया तो फिर ग़शी की हालत हो गई। अब जब कमी हुई तो इर्शाद फ़रमाया कि अबुबक्र रज़ि० नमाज़ पढ़ऐं, चुनांचे कई दिन तक हज़रत अबुबक्र रज़ि० ने नमाज़ पढ़ाई।

इन्तिकाल के चार दिन पहले तबीअत में कुछ सुकून हुआ, ज़ुहर के वक़्त पानी की सात मश्कों से ग़ुस्ल फ़रमा कर हज़रत अब्बास रज़ि० और हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ि० के सहारे से आप सल्ल० मस्जिद में तशरीफ़ लाए। जमाअत खड़ी थी। हज़रत अबुबक्र रज़ि० नमाज़ पढ़ा रहे थे, आहट पाकर उन्होंने पीछे हटना चाहा, मगर आप सल्ल० ने रोक दिया और उनके पहलू में आकर बैठ गए। नमाज़ के बाद एक छोटा ख़ुत्बा दिया जिसमें फ़रमाया कि ख़ुदा ने अपने एक बंदे को अख़्तियार दिया है कि चाहे वह दुनिया की

नेमतों को कुबूल करे या खुदा के पास जो कूछ है उसको कुबूल करे, लेकिन उसने खुदा ही के पास की चीज़ें कुबूल कीं । यह सुन कर हज़रत अबुबक्र रज़ि० रो पड़े, क्योंकि वह समझ चुके थे कि यह बंदा खुद मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० हैं । अंसार रज़ि० की वफ़ादारी का खयाल फ़रमा कर उनके बारे में फ़रमाया –

'' आम मुसलमान बढ़ते जायेंगे लेकिन अंसार इसी तरह कम होकर रह जायेंगे जेसे खाने में नमक । मुसलमानों ! वह अपना काम कर चुके । अब तुम्हे अपना काम करना है । वह मेरे जिस्म में मेदे की तरह है । मेरे बाद जो इस्लाम के कामों को अपने हाथ में ले, मैं उसको वसीयत करता हूं कि वह उनके साथ अच्छा सलूक करे । ''

शिरक का बड़ा ज़रिया यह था कि लोग पैग़म्बरों के बारे में शरअी हद से भी बढ़कर अक़ीदत को ज़ाहिर करने लगते थे । उनको शरीअत का पूरा हाकिम समझते थे । यह नुक्ता उस वक्त आं हज़रत सल्ल० के सामने था। फ़रमाया –

'' हराम व हलाल की निस्बत मेरी तरफ़ न की जाए । मैं ने वही चीज़ हलाल की जो खुदा ने हलाल की है । और वही चीज़ हराम की है जो खुदा ने हराम की है ।''

इस्लाम की तालीम के मुताबिक़ अम्ल के बग़ैर हस्ब व नस्ब कोई चीज़ नहीं, यहां तक की खुद अल्लाह के रसूल सल्ल० के अख्तियार में भी नहीं। फ़रमाया –

ऐ पैग़म्बरे खुदा की बेटी फ़तिमा रज़ि० ! और ऐ खुदा के पैग़म्बर की फूफी सफ़िया रज़ि० ! खुदा के यहां के लिये कुछ कर लो, मैं तुम्हें खुदा से नहीं बचा सकता ।''

खुत्बा दे चुकने के बाद हज़रत आयशा रज़ि० के हुजरे में तशरीफ़ ले आए । यहूदियों और ईसाईयों ने पैग़मबरों और बुज़ुर्गों की मज़ारों और यादगारों

की बड़ाई जो बढ़ा चढ़ा कर की थी, वह बुत परस्ती की हद तक पहुंच गया था । हुज़ूर अनवर सल्ल० की नज़र के सामने उस वक़्त मुसलमानों की हालत यह थी कि वह मेरे बाद मेरे कब्र और यादगारों के साथ कहीं यही न करें । इत्तिफ़ाक़ से हुज़ूर सल्ल० की कुछ बीवियों ने जिन्होने हब्शा की सफ़र में ईसाई गिरजों को देखा था । उन के मुर्तियो और बुतों का तज़्किरा किया । आप सल्ल० ने फ़रमाया-

"उन लोगों में जब कोई नेक आदमी मर जाता है, तो उसके मक्बरे को इबादतगाह बना लेते हैं । और उसका बुत बना कर उसमें खड़ा करते हैं। ऐसा करने वाले क़यामत के दिन बहुत बुरे ठहरेंगे ।"

ठीक बेचैनी की हालत में जब कभी चादर मुंह पर डाल लेते और कभी गर्मी से घबरा कर उलट देते । धीरे से यह फ़रमाया-

" यहूदी और ईसाई पर खुदा की लानत हो कि उन्होंने अपने पैगम्बरो की कब्रों को इबादत का घर बना लिया है ।"

इसी हालत में याद आया कि हज़रत आयशा रज़ि के पास कुछ अशर्फ़ियां रखवाई थीं । पूछा कि आयशा रज़ि० ! वह अशर्फ़ियां कहां हैं ? क्या मुहम्मद सल्ल० खुदा बद गुमान होकर मिलेगा ? जाओ, उन को खुदा के रास्ते में खैरात कर दो ।

मर्ज़ में ज़ियादती और कमी होती रहती थी, जिसदिन इन्तिक़ाल हुआ यानी सोमवार के दिन ज़ाहिरी तौर पर तबीअत हलकी थी । मुबारक हुजरा मस्जिद से मिला हुआ था । आप सल्ल० ने सुबह के वक़्त परदा उठा कर देखा तो लोग फ़ज्र की नमाज़ में लगे हुए थे यह देख कर मुस्कुरा दिए कि खुदा की ज़मीन में आख़िर वह गिरोह पैदा हो गया, जो अल्लाह के रसूल सल्ल० की तालीम का नमूना बन कर खुदा की याद में लगा है । लोगों ने आहट पाकर ख़याल किया कि आप बाहर आना चाहते हैं । खुशी से लोग बे क़ाबू हो चले और क़रीब था कि नमाज़ें टूट जाऐं । हज़रत अबुबक्र रज़ि० ने

जो इमाम थे, चाहा कि पीछे हट जाऐं लेकिन आप सल्ल० ने इशारे से रोका और हुजरे के अंदर होकर परदा छोड़ दिया। कमज़ोरी इतनी थी कि आप सल्ल० परदा भी अच्छी तरह न छोड़ सके। यह सब से आख़िरी मौक़ा था, जिसमें आम मुसलमानों ने हुज़ूर सल्ल० को आप सल्ल० की ज़िंदगी में देखा।

दिन जेसे जेसे चढ़ता जाता था, आप सल्ल० पर बार बार ग़शी हो रही थी। हज़रत फ़ातिमा ज़ोहरा रज़ि० यह देख कर बोलीं, " हाय ! मेरे बाप की बेचैनी।" आप सल्ल० ने सुना तो फ़रमाया, " तुम्हारा बाप आज के बाद फिर बेचैन न होगा। "

तीसरा पहर था, सीने में सांस की घड़घड़ाहट महसूस की। इतने में मुबारक होंट हिले, तो लोगों ने आप सल्ल० को यह कहते हुए सुना–

" नमाज़ और ग़ुलामों से नेक बर्ताव " इतने में हाथ उठा कर उंगली से इशारा किया और तीन बार फ़रमाया– अब और कोई नहीं वही सबसे बढ़कर साथी (खुदा) चाहिये।

यही कहते कहते हाथ लटक आये, आंखें फट कर छत से लग गयीं और पाक रूह 'आलमे क़ुदस' में पहुंच गई। मदीने की गलियों में जान नौछावर करने वालों की रोने की आवाज़ें आने लगीं। उनकी आंखों में दुनिया अंधेरी हो गई मस्जिद नबवी में कोहराम मच गया।

हज़रत उमर रज़ि० ने तलवार निकाल ली कि जो यह कहेगा कि मुहम्मद सल्ल० ने इन्तिक़ाल किया, उसका सर उड़ा दूंगा। हज़रत अबुबक्र रज़ि० ने हज़रत उमर रज़ि० की हालत को देखा तो समझ गए कि आज का धुधला पन कल की कितनी बड़ी गुमराही की वजह हो सकती है। उन्होंने सीधे मिम्बर नबवी की तरफ़ रुख़ किया और यह तक़रीर फ़रमायी–

" लोगों ! अगर कोई मुहम्मद सल्ल० को पूजता था तो मुहम्मद सल्ल० तो इस दुनिया से तशरीफ़ ले गए और अगर कोई मुहम्मद सल्ल० के रब को पूजता था तो वह ज़िन्दा हैं, उसको मौत नहीं।"

फिर यह आयत तिलावत फ़रमायी –

तर्जुमा – और मुहम्मद तो खुदा के रसूल हैं । उनसे पहले अहुत नबी गुज़र चुके । क्या वह अगर मर जायें या खुदा की राह में मारे जायें तो क्या तुम अपने पिछले पांव इस्लाम से लौट जाओगे ? और जो कोई लौट जाएगा तो वह खुदा का कुछ नहीं बिगाड़ेगा और अल्लाह इस नेमत की क़द्र जानने वालों को आखिरत में भलाई देगा ।

इस आयत का सुनना था कि सारे मुसलमानों की आखें खुल गई और ऐसा मालूम हुआ कि यह पाक आयत आज ही उतरी है । हर मुसलमान की जुबान पर यही आयत थी और इसी का चर्चा था ।

हुजूर अनवर सल्ल० का इन्तिकाल हिजरी के ग्यारहवें साल, रबीयुल अव्वल के महीने में सोमवार के दिन तीसरे पहर के वक़्त हुआ । मशहूर रिवायत यह है कि यह बारह रबीयुल अव्वल की तारीक़ थी मगर खास लोगों की खोज यह है कि रबीयुल अव्वल की पहली थी ।

आं हज़रत सल्ल० के कफ़न दफ़न का काम मंगल को शुरु हुआ और आप सल्ल० के ख़ास नातेदारों ने इस काम को पूरा किया । हज़रत फ़ज़्ल बिन अब्बास रज़ि०, हज़रत अली रज़ि० और हुजूर सल्ल० के आज़ाद किए हुए गुलाम हज़रत ज़ैद रज़ि० के बेटे हज़रत असामा रज़ि० ने आप सल्ल० को नहलाया । हज़रत अब्बास रज़ि० भी मौजूद थे । हज़रत आयशा रज़ि० के जिस हुजरे में आप सल्ल० ने इन्तिक़ाल फ़रमाया था, वहीं आप को दफ़न किया गया और इसलिये यह हुजरा आज के दिन तक नबी सल्ल० के रोज़े के नाम से जाना जाता है ।

बीवियां और औलाद बीवियां

आं हज़रत सल्ल० की सबसे पहली बीवी हज़रत ख़दीजा रज़ि० थीं। उनके इन्तिक़ाल के बाद हज़रत अबुबक्र सिद्दीक़ की बेटी हज़रत आयशा रज़ि० और जमआ की लड़की हज़रत सौदा रज़ि० से निकाह किया। इसके बाद दूसरी बीवियां निकाह में आयीं, जिनके नाम यह हैं–

हज़रत ज़ैनब रज़ि० उम्मुल मसाकीन, हज़रत उम्मे सलमा रज़ि०, हज़रत ज़ैनब बिन्त हजश रज़ि०, हज़रत जवीरिया रज़ि०, हज़रत उम्मे हबीबा बिन अबु सुफ़ियान, हज़रत हफ़्सा बिन्त उमर बिन ख़त्ताब रज़ि०, हज़रत मैमूना बिन्त हारिस रज़ि०, और हज़रत सफ़िया रज़ि०। इनमें हज़रत ज़ैनब रज़ि० उम्मुल मसाकीन के अलावा और सब बीवियां आप के इन्तिक़ाल के वक़्त ज़िन्दा थीं और आप सल्ल० के बाद अपने दीनी और इल्मी फ़ैज़ व बरकत से दुनिया को मालामाल करती रहीं। आप सल्ल० की एक बीवी और थीं जो कनीज़ (लौंडी) थीं और मिस्र से आयी थीं और मारिया क़बतिया रज़ि० कहलाती थीं। यह सब सारी उम्मत की मायें थीं, इसलिये उम्माहातुल मामिनीन कही जाती हैं। अल्लाह तआला की ख़ुशी उनके साथ हो।

औलाद :- आप सल्ल० की सारी औलादें सिर्फ़ पहली बीवी हज़रत ख़दीजा रज़ि० से हुयीं। आख़िरी बीवी हज़रत मारिया रज़ि० से एक बेटे हज़रत इब्राहीम रज़ि०पैदा हुए थे जो बचपन में ही इन्तिक़ाल कर गये। हज़रत ख़दीजा रज़ि० से तीन साहबज़ादे हज़रत क़ासिम रज़ि, हज़रत ताहिर रज़ि० और हज़रत तैयब रज़ि० हुए थे और उन्होंने भी बचपन ही में इन्तिक़ाल किया। बाक़ी और चार साबज़ादियां (बेटियां) हुई और उन सब ने इस्लाम का ज़माना पाया। सबसे बड़ी हज़रत ज़ैनब रज़ि. जिनका निकाह अबुल आस रज़ि० से हुआ था। उन्होंने सन आठ हिजरी में इमामा रज़ि० नाम की एक बच्ची छोड़ कर इन्तिक़ाल फ़रमाया। मंजली का नाम हज़रत रुक़ैया

रज़ि० था जो इस्लाम के बाद हज़रत उस्मान रज़ि० के निकाह में आयीं और मदीना आकर सन दो हिजरी में इन्तिक़ाल किया। तीसरी साहबज़ादी का नाम उम्मे कुलसूम था। हज़रत रुकैया रज़ि० के इन्तिक़ाल के बाद उनसे हज़रत उस्मान रज़ि०ने निकाह किया और सन ६ हिजरी में इन्तिक़ाल किया। छोटी बेटी जो हज़रत सल्ल० को सब से ज्यादा प्यारी थीं हजरत फ़ातिमा रज़ि० थीं। जिनसे हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ि० ने शादी की और उनसे दो बेटे हज़रत हसन और हज़रत इमाम हुसैन रज़ि० पैदा हुए।

अख़्लाक़ व आदतें

किसी ने उम्मुलमोमिनीन हज़रत आईशा रज़ि० से पूछा कि हुज़ूर सल्ल० के अख़्लाक़ कैसे थे ? उन्होंने कहा, क्या तुमने क़ुरआन नहीं पढ़ा है ? जो कुछ क़ुरआन में है वह हुज़ूर सल्ल० के अख़्लाक़ थे। मतलब यह कि आप की पूरी ज़िंदगी क़ुरआन पाक की अमली तफ़्सीर थी और यह भी आप सल्ल० का एक मोजज़ा है। खुद क़ुरआन ने इस की गवाही दी और कहा, बेशक एक मुहम्मद सल्ल०!आप अच्छे अख़्लाक़ के बड़े रुत्बे पर हैं।

हुज़ूर सल्ल० बड़े ख़ाक सार, मिलनसार, मेहरबान और रहम दिल थे। छोटे बड़े सब से मुहब्बत करते, निहायत सख़ी, फ़ैयाज़ और दाद व दहश वाले थे। हर मुमकिन हद तक सब की दरख़्वास्त पूरी करते, सारी उम्र किसी के सवाल पर 'नहीं' नहीं कहा, खुद भूखे रहते और दूसरों को खिलाते। एक बार एक सहाबी की शादी हुई। उन के पास वलीमा का कुछ सामान न था। हुज़ूर सल्ल० ने उनसे फ़रमाया कि आयशा रज़ि० के पास जाओ और आटे की टोकरी मांग लाओ, हालांकि उस टोकरी के सिवा शाम के लिये घर में कुछ न था। फ़ैयाज़ी और दुनिया के माल से बे ताल्लुक़ी की यह हालत थी कि घर में नक़द की तरह की कोइ चीज़ भी होतीतो जब तक वह सब ख़ैरात न कर

दी जाती आप सल्ल० अक्सर घर में आराम न फ़रमाते। एक बार फ़दक के रईस ने चार ऊंटों पर गल्ला भेजा। उसको बेचकर कर्ज़ अदा किया गया। फिर भी कुछ बचा रहा। आप सल्ल० ने कहा कि जब तक कुछ भी बाकी रहेगा, मैं घर में नहीं जा सकता। रात मस्जिद में गुज़ारी। दूसरे दिन जब मालूम हुआ कि ग़ल्ला बांटा जा चुका है तब घर तशरीफ़ ले गए।

हुज़ूर सल्ल० मेहमान नवाज़ थे। आप सल्ल० के यहां मुसलमान, मुश्रिक और काफ़िर सब ही मेहमान होते। आप सब की खातिर करते और खुद ही सब की खिदमत करते। कभी ऐसा होता कि महमान आ जाते और घर में जो कुछ मौजूद रहता वह उनको खिला पिला दिया जाता और पूरा घर भूका रहता। एक बार आप सल्ल० के यहां एक काफ़िर मेहमान आया। आप सल्ल० ने एक बकरी का दूध उसे पिलाया, वह सारा दूध पी गया। आप सल्ल० ने दूसरी बकरी मंगवाई, यह उसका भी दूध पी गया। गर्ज़ यह कि सात बकरियों तक की नौबत आयी, जब तक उसका पेट न भर गया आप सल्ल० उसको दूध पिलाते रहे। रातों को उठ उठ कर मेहमानों की देख-भाल फ़रमाते कि उनको कोई तक्लीफ़ तो नहीं है। घर में रहते तो घर का काम काज अपने हाथों से करते, अपने फटे कपड़े आप सी लेते,अपने फटे जूते को खुद गांठ लेते, बकरियों का दूध अपने हाथ से दूहते, मजमे में बैठते तो सब के बराबर होकर बैठते, मस्जिद नबवी के बनाने और खन्दक खोदने में सब मज़दूरों के साथ मिल कर आप सल्ल० ने भी काम किए।

आप सल्ल० यतीमों से मुहब्बत रखते और उनके साथ भलाई की ताकीद करते। फ़रमाया, मुसलमानों का सब से अच्छा घर वह है जिसमे किसी यतीम बच्चे के साथ भलाई की जा रही हो और सब से खराब घर वह है जिसमें यतीम बच्चे के साथ बुराई की जा रही हो। आप सल्ल० की चहेती बेटी हज़रत फ़ातिमा रज़ि० जिनकी हालत यह थी कि चक्की पीसते-पीसते

हथेलियां घिस गयीं थी और मश्क मे पानी भर भर कर लाने से सीने पर नील के दाग पड़ गए थे। उन्होंने एक दिन आप सल्ल० से एक खादिमा के लिये अर्ज किया। आप सल्ल० ने जवाब दिया, फ़ातिमा रज़ि० बद्र के यतीम तुम से पहले दरख्वास्त कर चुके हैं। एक रिवायत में है कि ऐ फ़ातिमा ! सुफ्फा के ग़रीबों का अब तक कोई इन्तिज़ाम नहीं हुआ है तो तुम्हारी दरख्वास्त कैसे कुबूल करूं ?

ग़रीबों के साथ आप सल्ल० का बर्ताव ऐसा होता था कि उनको अपनी ग़रीबी महसूस न होती। उनकी मदद फ़रमाते और उनका दिल रखते, अक्सर दुआ मांगते थे कि ऐ खुदा ! मुझे मिस्कीन ज़िंदा रख, मिस्कीन उठा और मिस्कीनों के साथ मेरा हश्र कर। एक बार एक पूरा कबीला आप सल्ल० की खिदमत में हाज़िर हुआ। यह लोग इतने ग़रीब थे कि उनमें से किसी के बदन पर कोई ठीक कपड़ा न था, नंगे बदन, नंगे पांव। उनको देखा आप सल्ल० पर बहुत असर हुआ। परेशानी में अंदर गये, बाहर तशरीफ़ लाए। उसके बाद सब मुसलमानों को जमा करके उन लोगों की मदद के लिये फ़रमाया।

आप सल्ल० मज़्लूमों की फ़रियाद सुनते और इंसाफ़ के साथ उनका हक़ दिलाते, कमज़ोरों पर रहम खाते, मजबूरों का सहारा बनते, कर्ज़दारों का कर्ज़ अदा करते। हुक्म था कि जो मुसलमान मर जाए और अपने जिम्मे कर्ज़ छोड़ जाए तो मुझे जानकारी दो, मैं उसको अदा कर दूंगा और वह जो माल (तर्का) छोड़ जाए वह वारिसों का हक़ है, मुझे उससे कोई मतलब नहीं।

आप सल्ल० बीमारों को तसल्ली देते, उनको देखने जाते, दोस्त दुश्मन और मोमिन व काफ़िर की उसमें कोई फर्क न था। गुनहगारों को माफ़ कर देते, दुश्मनों के हक़ में भलाई की दुआ फ़रमाते। पक्के दुश्मनों और क़ातिलाना हम्ला करने वालों तक से बदला नहीं लिया। एक बार एक शख्स ने आप सल्ल० के क़त्ल का इरादा किया। साहबा रज़ि० ने उसको गिरफ़्तार करके सामने लाए। वह आप सल्ल० को देख कर डर गया। आप ने

फ़रमाया, डरो नहीं, अगर तुम मुझ को क़त्ल करना चाहते भी, तो नहीं कर सकते थे ।

हबार बिन अल असवद जो एक तरह से हुज़ूर सल्ल० की बेटी हज़रत ज़ैनब रज़ि० का क़ातिल था । मक्का की फ़तह के मौक़े पर उसने चाहा कि ईरान भाग जाए लेकिन आप का रहम व करम याद आया । अब मैं हाज़िर हूं और मेरे जिन जुर्मों की ख़बर आप सल्ल० को मिली है वह सही है । हुज़ूर सल्ल० ने उसको माफ़ कर दिया ।

पड़ोसियों की ख़बर लेते, उनके यहां तोहफ़े भेजते, उनका हक़ पूरा करने की ताकीद फ़रमाते रहते । एक दिन सहाबा रज़ि० का मजमा था, आप सल्ल० ने फ़रमाया ख़ुदा की क़सम वह मोमिन न होगा, ख़ुदा की क़सम वह मोमिन न होगा । सहाबा रज़ि० ने पूछा कौन ? ऐ अल्लाह के रसूल ! फ़रमाया वह जिसका पड़ोसी, उसकी शरारतों से बचा हुआ न हो । आप सल्ल० ने अपने पड़ोसियों के घर जाकर उनके काम कर आते । पड़ोसियों के सिवा और जो भी आप से किसी काम के लिये कहता, उसको पूरा फ़रमाते। मदीने की लौंडियां आप सल्ल० की ख़िदमत में आतीं और कहतीं, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० । मेरा यह काम है । आप फ़ौरन उठ खड़े होते और उनका काम कर देते । बेवा हो या ग़रीब या कोई ज़रुरत वाला, सब की ही ज़रूरतों को आप सल्ल० पूरा फ़रमाते और दूसरों के काम करने में झिझक महसूस न फ़रमाते ।

बच्चों से बड़ी मुहब्बत फ़रमाते थे, उनको चूमते और प्यार करते थे । फ़सल का नया मेवा सब से कम उम्र बच्चा जो उस वक़्त मौजूद होता, उसको देते, रास्ते में बच्चे मिल जाते तो ख़ुद उनको सलाम फ़रमाते, इस्लाम से पहले औरतें हमेशा ज़लील रही हैं, लेकिन हमारे हुज़ुर सल्ल० ने उन पर बहुत अहसान फ़रमाया, उनके हक़ मुक़र्रर फ़रमाए और अपने बर्ताव से ज़ाहिर फ़रमा दिया कि यह तबक़ा हक़ीर नहीं है, बल्कि इज़्ज़त और हमदर्दी के

लायक़ है। आप सल्ल० के पास हर वक़्त मर्दों का मजमा रहता था। औरतों को आप सल्ल० की बातें सुनने का मौक़ा न मिलता था, इसलिये खुद औरतों की दरख्वास्त पर आप सल्ल० ने उनके लिये एक खास दिन मुकर्रर फ़रमा दिया था। औरते बहादूरी और बेतकल्लुफ़ी से आप सल्ल० से मस्अले पूछतीं, लेकिन आप सल्ल० बुरा न मानतें, उनकी खातिरदारी का ख्याल रखते थे।

आप सल्ल० सारी दुनिया के लिए रहमत बन कर आए थे, इसलिए किसी के साथ भी ज़्यादती और ना इंसाफ़ी न फ़रमाते थे, यहां तक कि जानवरों के साथ लोग जो बे परवाही बरतते थे, वह भी आप सल्ल० को बर्दाश्त न थी और इन बेज़बानों पर जो ज़ुल्म होता आया था, उनको रोक दिया।

एक बार एक आदमी ने एक परिंदे का अंडा उठा लिया। चिड़िया बेचैन होकर पर मार रही थी। आप सल्ल० ने पूछा कि किसने उसका अंडा लिया है और उसको दुख पहुंचाया है? इन साहब ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मैंने यह किया है। आप सल्ल० ने फ़रमाया कि वहीं रख दो।

आप सल्ल० की नज़र में अमीर व ग़रीब बराबर थे। क़बीला मख्ज़ूम की एक औरत चोरी के जुर्म में गिरफ्तार हुई। लोगों ने हज़रत उसामा रज़ि० जिन को आप सल्ल० बहुत चाहते थे। उन से सिफ़ारिश कराई। हुज़ूर सल्ल० ने सब से फ़रमाया कि तुम से पहली क़ौमें इसी लिये बर्बाद हो गयीं कि जब कोई बड़ा आदमी जुर्म करता तो उसे छोड़ देते और मामूली आदमी जुर्म करता तो वह सज़ा पाता। खुदा की क़सम, अगर मुहम्मद सल्ल० की बेटी फ़ातिमा रज़ि० करती तो उसके भी हाथ काटे जाते।

वह नबियों में रहमत लक़ब पाने वाला।
मुरादें ग़रीबों की बर लाने वाला।
मुसीबत में ग़ैरों के काम आने वाला।
वह अपने पराए का ग़म खाने वाला।

फ़क़ीरों का मलजा, ज़ईफ़ों का मावा ।
यतीमों का वाली, गुलामों का मौला ।
खता कार से दर गुज़र करने वाला ।
बद अंदेश के दिल में घर करने वाला ।
मफ़ासिद का ज़ेर व ज़बर करने वाला ।
क़बाइल का शीरो-शकर करने वाला ।
उतर कर हिरा से सूए क़ौम आया ।
और इक नुस्खा कीमिया[1] साथ लाया ।
मसि खाम को जिसने कुंदन बनाया ।
खरा और खोटा अलग कर दिखाया ।
अरब जिस पर कुरनों से था जहल छाया ।
पलट दी बस एक आन में उसकी काया ।
रहा डर न बेड़े को मौजे बला का ।
इधर से उधर फिर गया रुख हवा का ।

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि मैंने दस साल आप सल्ल० की खिदमत में गुज़ारे मगर आप सल्ल० ने न कभी डांटा, न मारा, न पूछा कि तुमने यह काम क्यों किया और यह क्यों न किया। आप सल्ल० ने सारी उम्र में कभी किसी को नहीं मारा। और यह क्या अजीब बात है कि एक फ़ौज का जर्नल जिसने लगातार नौ साल लड़ाईयों में गुज़ारे और जिसने कभी लड़ाई के मैदान से मुंह नहीं मोड़ा, उसने अपने दुश्मन पर कभी तलवार नहीं उठायी और न कभी अपने हाथ से किसी पर वार किया। उहद के मैदान में जब हर तरफ़ से आप सल्ल० पर पत्थरों, तीरों और तलवारों की बारिश हो रही थी, आप सल्ल० अपनी जगह पर खड़े रहे थे और जान निछावर करने वाले दायें-बायें कट-कट कर गिर रहे थे।

इसी तरह हुनैन की लड़ाई में अक्सर मुसलमान ग़ाज़ियों के पांव उखड़

1. *कुरआन पाक*

चुके थे । हुज़ूर सल्ल० पहाड़ की तरह अपनी जगह पर खड़े थे । सहाबा रज़ि० कहते हैं, लड़ाई के अक्सर मामलों में आप सल्ल० वहां होते थे जहां बड़े-बड़े बहादुर खड़ा होना अपनी बहादुरी का आख़िरी कारनामा समझते थे, मगर ऐसे खौफ़नाक जगहों में रह कर भी दुश्मन पर हाथ नहीं उठाते थे । उहद के दिन जब मुश्रिकों के हमले में मुबारक सर ज़ख्मी और मुबारक दांत शहीद हुए, यह फ़रमाते थे, " ऐ खुदा ! इन्हें माफ़ कर कि यह नहीं जानते।"

सालहासाल की नाकामी की तक्लीफ़ों के बाद कभी मायूसी ने आप सल्ल० के दिल में राह न पायी और आख़िर वह दिन आया, जब आप सल्ल० अकेले सारे अरब पर छा गये । मक्के की तक्लीफ़ों से घबरा कर एक सहाबी ने दरख्वास्त की ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप सल्ल० हम लागों के लिये दुआ क्यों नहीं फ़रमाते ? यह सुनकर आप सल्ल० का चेहरा सुर्ख हो गया और फ़रमाया कि तुम से पहले जो लोग गुज़रे उनको आरों से चीरा गया। उनके बदन पर लोहे की कंघियां चलायीं गयीं जिससे गोश्त व पोस्त सब कट-कट जाता, लेकिन यह तक्लीफ़ें भी उनको हक़ से हटा न सकीं । खुदा की क़सम इस्लाम दीन अपने कमाल के मर्तबे पर पहुंच कर रहेगा यहां तक कि सनआ (यमन) हिज़्रे मौत एक सनार इस तरह बिला डर के चला जाएगा कि उस को खुदा के सिवा किसी और का डर न होगा ।

आप सल्ल० का पक्का इरादा और बर्दाश्त करने की ताक़त याद होगी जब आप सल्ल० ने अपने चचा को यह जवाब दिया था कि चचा जान ! अगर क़ुरैश मेरे दाहिने हाथ में सूरज और बायें में चांद रख दें तब भी हक़ का एलान करना न छोडूंगा ।

एक बार दोपहर को एक लड़ाई में आप सल्ल० एक पेड़ के नीचे अकेले आराम फ़रमा रहे थे । एक अरब आया और तलवार खींच कर बोला, " बता ऐ मुहम्मद ! अब तुझ को मुझ से कौन बचा सकता है !" इत्मीनान

और तसल्ली से भरी हुई आवाज़ में जवाब दिया, " अल्लाह ! " वह यह जवाब सुनकर कांप गया । और तलवार म्यान में रख ली ।

लड़ाईयों की ग़नीमत (लड़ाई में हासिल माल) के माल और ख़ैबर वग़ैरह की ज़मीनों की पैदावार का हाल सुन कर किसी को शुबहा न हो कि अब इस्लाम की ग़रीबी का ज़माना ख़त्म हो गया और इस्लाम के पैग़म्बर सल्ल० बड़े आराम और ताम झाम से ज़िंदगी गुज़ारने लगे । बीवियां रज़ि० और अह्ले बैत, कराम रज़ि० के घरों में जो कुछ आता वह दुसरे ज़रुरत वालों और मुहताजों को भेंट हो जाता था और खुद आप सल्ल० की और आपके अह्ले बैयत की ज़िंदगियां इसी तंगी और ग़रीबी से गुज़रती थी । खुद फ़रमाया करते थे आदम अलै० के बेटे के लिये सतर छिपाने के लिये एक कपड़ा और पेट भरने को रुखी सूखी रोटी और पानी काफ़ी है और इसी पर आप सल्ल० का अम्ल था । हज़रत आईशा रज़ि० कहती हैं कि आप का कपड़ा कभी तह करके रखा नहीं जाता था यानी एक ही जोड़ा कपड़ा होता था, दूसरा नहीं, जो तह करके रखा जाता ।

हज़रत सल्ल० के घरों में अक्सर फ़ाक़ा रहता था और कई कई दिनों तक रात को खाना नहीं मिलता था । दो दो महीनों तक लगातार घरों में चूल्हा जलने की नौबत नहीं आती थी, कुछ खजूरों पर गुज़ारा होता था, कभी कोई पड़ोसी बकरी का दूध भेज देता तो वही पी लेते । हज़रत आईशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि आप सल्ल० ने (मदीना में ठहरने के ज़माने में)कभी दो वक्त सैर होकर खाना नहीं खाया ।

एक बार का ज़िक्र है, एक भूखा आप सल्ल० की खिदमत में आया। आप सल्ल० ने बीवियों में से किसी के यहां कहला भेजा जवाब आया कि घर में पानी के सिवा कुछ नहीं । आप सल्ल० ने दूसरे घर में आदमी भेजा । वहां से भी यही जवाब आया । मतलब यही कि आठ नौ घरों में से पानी के सिवा खाने की कोई चीज़ नहीं निकली ।

एक दिन आप सल्ल० भूख में ठीक दोपहर को घर से निकले, रास्ते में हज़रत अबुबक्र रज़ि० और हज़रत उमर रज़ि० से मिले। यह दोनों भी भूखे थे। आप सल्ल० उनको लेकर हज़रत अबु अयूब अंसारी रज़ि० के घर आये, उनको मालूम हुआ तो दौड़े आये और बाग़ से जाकर खजूरों का एक गुच्छा तोड़ लाये और सामने रख दिया। इस के बाद एक बकरी ज़िबह की और खाना तैयार किया और सामने लाकर रखा। हज़रत सल्ल० ने एक रोटी पर थेड़ा सा गोशत रख कर फ़रमाया कि यह फ़ातिमा रज़ि० के यहां भिजवाओ उसको कई दिन से खाना नहीं मिला।

आं हज़रत सल्ल० ने जब इन्तिक़ाल किया तो हालत यह थी कि आप सल्ल० की ज़र्रा तीन सेर जौ पर एक यहूदी के पास गिरवी थी जिन कपड़ों में इन्तिक़ाल किया, उन में उपर नीचे पेवंद लगे हुए थे।

हज़रत फ़ातिमा रज़ि० से आप सल्ल० को बड़ी मुहब्बत थी मगर यह मुहब्बत सोने चांदी के ज़ेवरों और ईंट चूने के मकानों में कभी ज़ाहिर नही हुई। बीबी फ़ातिमा रज़ि० अपने हाथों से काम करतीं, मशक़ भर कर पानी लातीं, आटा गूंधतीं और अगर कभी आप सल्ल० से किसी ग़ुलाम या लौंडी की फ़रमाईशें करतीं तो फ़रमाते कि बेटी, तस्बीह पढ़ लिया करो।

आप सल्ल० कभी किसी का अहसान लेना गवारा न फ़रमाते। हज़रत अबुबक्र रज़ि० ने हिजरत के वक़्त सवारी के लिये ऊंट पेश किया तो आप सल्ल० ने उस की क़ीमत अदा फ़रमा दी, जिन लोंगों से तोहफ़े क़ुबूल फ़रमाते थे, उन को इस का बदला ज़रूर देते थे। एक बार एक शख़्स ने हदिये में एक ऊंटनी पेश की। आप सल्ल० ने इसका बदला दिया तो उसको बुरा मालूम हुआ। आप सल्ल० ने मिंबर पर खड़े होकर फ़रमाया कि तुम लोग मुझे हदिया (भेंट) देते हो और मैं इसका हर मुमकिन बदला हूं तो नाराज़ होते हो।

आप लेन देन के मामले में बहुत साफ़ थे। फ़रमाया करते कि सबसे से बहतर वह लोग हैं जो कर्ज़ को अच्छी तरह से अदा करते हैं। एक बार

किसी से आप ने ऊट कर्ज़ लिया । जब वापस किया तो इससे बेहतर ऊंट वापस किया ।

जो वायदा फ़रमाते उस को पूरा करते,कभी वायदा नहीं तोड़ा । हुदैबिया की सुलह में एक शर्त यह भी थी कि मक्का से जो मुसलमान हो कर मदीना जायगा, वह मक्का वालों की मांग करने पर वापस कर दिया जायगा, चुनांचे एक साहब अबु जुंदल रज़ि० मक्का से भाग कर आये और फ़रयािद की । सारे मुसलमान यह देख कर तड़प गये, लेकिन आप सल्ल० ने साफ़ फरमा दिया कि ऐ अबु जुंदल ! सब्र करो, मैं बद अहदी नहीं करुंगा । अल्लाह तुम्हारे लिये काई रसस्ता निकालेगा ।

सच्चाई आप सल्ल० की एक ऐसी अच्छाई थी कि दुश्मन भी इस को मानते थे । अबु जह्ल कहा करता था कि मुहम्मद सल्ल० ! मैं तुम को झूठा नहीं कहता । हां तुम जो कुछ कहते हो उसको सही नहीं समझता ।

आप सल्ल० शरमीले बहुत थे । कभी किसी को बुरी बात नहीं कही, बाज़रों में जाते तो चुप चाप गुज़र जाते । भरी महफ़िल में कोई बात ना गवार होती तो लिहाज़ में ज़बान से कुछ नहीं कहते, लेकिन मुबारक चेहरे से मालूम हो जाता । आप सल्ल० की तबीयत में बहुत इस्तक्लाल था, जिस चीज़ का पक्का इरादा हो जाता फिर उसको पूरा ही फ़रमाते । उहद की लड़ाई में सहाबा रज़ि० से मशविरा किया, सब ने हमले की राय दी लेकिन जब आप जर्रा पहन कर तशरीफ़ लाये तो रुक जाने की सलाह दी गई । आप सल्ल० ने फ़रमाया पैग़म्बर ज़र्रा पहन कर उतार नहीं सकता । आप सल्ल० की बहादुरी बेमिसाल थी । एक बार मदीना में शोर हुआ कि दुश्मन आ गये । लोग मुक़ाबले के लिये तैयार हुये, लेकिन सब से पहले हुज़ूर सल्ल० निकल पड़े और घोड़े पर ज़ीन के बग़ैर गश्त लगा आये । और वापस आकर लोगों को तसल्ली दी कि कोई ख़तरे की बात नहीं है ।

मुबारक मिजाज़ में सादगी बहुत थी । खाने पीने पहनने ओढ़ने, उठने

बैठने किसी चीज़ में तकल्लुफ़ पसंद न था, जो सामने आ जाता वह खा लेते। पहनने के लिये मोटा झोटा जो मिल जाता उसको पहन लेते, ज़मीन पर, चटाई पर, फर्श पर जहां जगह मिलती बैठ जाते । खुदा की नैमतों से जायज़ तौर पर फ़यदा उठाने की इजाज़त आप सल्ल० ने ज़रुर दी लेकिन तन परवरी और ऐश न अपने लिये पसंद फ़रमाया न आम मुसलमानों के लिये । एक बार हज़रत आईशा रज़ि० के पास तशरीफ़ ले गये, देखा कि घर में छतगीर लगी हुई है । उसी वक़्त फाड़ डाली और फ़रमाया कि खुदा ने हम को दौलत दी है कि ईंट पत्थर को कपड़े पहनाये जायें । एक बार हज़रत फ़तिमा रज़ि० के गले में सोने का हार देखा तो फ़रमाया कि तुम को बुरा मालूम न होगा जब लोग कहेंगे कि पैग़म्बर की लड़की के गले में आग का हार है ।

दुनिया की तरफ़ झुकाव न होने के बावजूद आप को खुश्क मिज़ाज और रुखा पन पसंद न था । कभी कभी दिलचस्पी की बातें फ़रमाते। एक बार एक बुढ़िया आप सल्ल० के पास आई और जन्नत के लिये दुआ की ख्वाहिश की । आप सल्ल० ने फ़रमाया कि बुढ़ियां जन्नत में न जायेंगी । उस को बहुत दुख हुआ, रोती हुई वापस चली । आप सल्ल० ने लोगों से कहा कि उससे कह दो कि बुढ़िया जन्नत में न जायेंगी मगर जवान होकर जायेंगी । कुछ लोग रात दिन नमाज़ में लगे रहना चाहते थे, इस की वजह से बीवी बच्चों और अपने जिस्म के हक़ को पूरा न होने का डर था, इसलिए हुजूर सल्ल० उसको रोकते । हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० के बारे में मालूम हुआ कि उन्होंने हमेशा दिन में रोज़ा रखने और रात भर इबादत करने का अह्द किया है । आप सल्ल० ने उनको बुला भेजा और पूछा कि क्या यह ख़बर सही है ? उन्हाने कहा कि हां । फ़रमाया कि तुम पर तुम्हारे जिस्म का हक़ है, आंख का हक़ है, बीवी का हक़ है ।

आप सल्ल० की अहतियात की यह हालत थी कि किसी के घर जाते

तो दरवाज़े के दायें या बायें खड़े होते और उससे इजाज़त मांगते। सामने इसलिये न खड़े होते कि नज़र घर के अंदर न पड़े।

सफ़ाई का खास ख्याल रहता। एक शख़्स को मैले कपड़े पहने देखा तो फ़रमाया कि इससे इतना नहीं होता कि कपड़े धो लिया करे। बात चीत ठहर ठहर कर फ़रमाते थे। एक एक जुमला अलग होता, किसी की बात काट कर बात न करते। जो बात न पसंद होती उसको टाल देते, ज़्यादा तर चुप रहते बे ज़रुरत बात चीत न करते, हंसी आती तो मुसकुरा देते।

आप सल्ल० हर वक़्त, हर पल खुदा की याद में लगे रहते, उठते बैठते, चलते फिरते, गर्ज़ यह कि हर वक़्त उसी की खुशी की तलाश रहती और हर हालत में दिल व ज़बान से अल्लाह की याद जारी रहती। सहाबा रज़ि० की महफिलों में या बीवियों के हुजरे में होते और यकायक अज़ान की आवाज़ आती, आप सल्ल० उठ खड़े होते। रात का बड़ा हिस्सा खुदा की याद में गुज़ारते कभी सारी सारी रात नमाज़ में खड़े रहते और बड़ी बड़ी सूरतें पढ़ते। आप सल्ल० अल्लाह तआला के बड़े प्यारे पैगम्बर थे, फिर भी फ़रमाया करते कि मुझ को कुछ नहीं मालूम कि मेरे ऊपर क्या गुज़रेगी ? एक बार बड़े असर दार लफ़्ज़ों में फ़रमाया, ऐ क़ुरैशियों ! आप अपनी खबर लो। मैं तुम को खुदा से नहीं बचा सकता। ऐ अब्द मुनाफ़ ! मैं तुम को खुदा से नहीं बचा सकता, ऐ सफिया, खुदा के रसूल सल्ल० की फूफी ! मैं तुमको भी खुदा से नहीं बचा सकता। ऐ मुहम्मद सल्ल० की बेटी फ़तिमा ! मैं तुम को भी खुदा से नहीं बचा सकता।

एक सहाबी का बयान है कि मैं एक बार हुज़ूर सल्ल० की खिदमत में हाज़िर हुआ, देखा तो आप नमाज़ पढ़ रहे हैं, आंखों से आंसू जारी हैं, रोते रोते इस क़दर हिचकियां बंध गयीं थी कि मालूम हो रहा था कि चक्की चल रही है या हांडी उबल रही है। एक बार आप सल्ल० एक जनाज़े में शामिल थे, क़ब्र खोदी जर रही थी। आप सल्ल० क़ब्र के किनारे बैठ गए और यह

मंज़र देखकर रोने लगे यहां तक कि ज़मीन तर हो गई। फिर फ़रमाया, भईयो ! उस दिन के लिये सामान कर रखो।

ऊपर की सफ़ों में हुज़ूर सल्ल० के मुबारक हालात और आप सल्ल० के अच्छे अख़्लाक़ और आदतों को पढ़ चुके, अब इसकी कोशिश होनी चाहिये। हुज़ूर सल्ल० की ज़िंदगी की हम पैरवी और आप सल्ल० की बताई हुई बातों पर अम्ल करें कि ख़ुदा की ख़ुशी हासिल करने का यही ज़रिया है और दीन व दुनिया की बादशाही की सिर्फ़ यही एक कुंजी है।